क्रेमलिन की घण्टियाँ

निकोलाई पोगोदिन

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

क्रेमलिन की घण्टियाँ

निकोलाई पोगोदिन

परिकल्पना प्रकाशन

ISBN: 81-87425-59-8 मूल्य : रु. 30.00

यह संस्करण : **जनवरी, 2006**

परिकल्पना प्रकाशन
द्वारा, जनचेतना, डी-68, निरालानगर
लखनऊ–226 020 द्वारा प्रकाशित

क्रिएशन ग्राफिक सिस्टम्स, बी-5, ब्रह्मपुरी
लक्ष्मणपुरी के पीछे, फ़ैज़ाबाद रोड, लखनऊ
द्वारा मुद्रित

आवरण : **रामबाबू**

Kremlin ki Ghantiyan *by* Nikolai Pogodin

लेनिन पुरस्कार विजेता निकोलाई पोगोदिन (1900-1962) एक लोकप्रिय नाटककार हैं। उनके प्रारम्भिक नाटक 'रफ़्तार' (1929), 'कुदाल का काव्य' (1931), 'मेरा दोस्त' (1932) और 'बॉलनृत्य के बाद' प्रथम पंचवर्षीय योजना में सोवियत जनता के जोशीले श्रम का गौरव गान करते हैं। कालान्तर में लेखक ने सीमा-रक्षकों, महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में सोवियत जनता के साहसिक कार्यों और युद्धोत्तर निर्माण की उपलब्धियों में सम्बन्धित कई नाटक लिखे ('विश्व की सृष्टि', 'मखमली मौसम' ओर अन्य नाटक)। पोगोदिन के सृजन का चूड़ान्त लेनिन के जीवन से सम्बन्धित उनकी नाट्य-त्रयी में देखने को मिलता है–'बन्दूकधारी' (1937), 'क्रेमलिन की घण्टियाँ' (1940) तथा 'तीसरी करुण-गाथा' (1958)।

यह नाट्य-त्रयी लेनिन के जीवन की सच्ची मर्मस्पर्शी घटनाओं पर आधारित है। संस्मरण के माध्यम से उनके जीवन-काल को विभिन्न घटनाओं द्वारा प्रस्तुत किया गया है। नाटक 'बन्दूकधारी' अक्टूबर के सशस्त्र विद्रोह के दिनों की घटना पर आधारित है। 'क्रेमलिन की घण्टियाँ' नाटक में नवजात सोवियत देश के तनावपूर्ण संक्रमण काल का जिक्र है, जब वह शान्तिमय समाजवादी निर्माण की ओर अग्रसर था। नाटक 'तीसरी करुण-गाथा' का विषय–देश के जीवन का एक अत्यन्त जटिल समय है। यह नवीन आर्थिक नीति निर्धारण का एक नाजुक काल था।

'क्रेमलिन की घण्टियाँ' में नाटककार प्रभावशाली चित्रण द्वारा यह दिखाने में सफल रहा है कि भयंकर आर्थिक तबाही और भुखमरी के बीच समाजवाद की नींव डालने के बारे में लेनिन का सपना कैसे साकार हुआ, कैसे इस सपने की प्रेरक शक्ति से देशभक्त रूसी बुद्धिजीवी नये समाज के निर्माण की ओर अग्रसर होता है।

लेनिन के बहुमूल्य विचारों और भावनाओं को तथा देश व जनता के भविष्य पर उनके प्रभाव को उद्घाटित करते हुए नाटककार ने उनका चित्रण प्रतिभाशाली चिन्तक, लोकप्रिय नेता के रूप में ही नहीं, वरन् एक सहृदय, दयालु और संवेदनशील सामान्य व्यक्ति के रूप में भी किया है, जिसकी भावनाएँ प्रबल हैं, बुद्धि प्रखर और चुभते व्यंग्य से परिपूर्ण है।

लेनिन के कक्ष में सभी मुख्य पात्रों के जीवन पथ मिलते हैं। मरम्मत के बाद क्रेमलिन की घण्टियों की गूंज भी यहीं सुनायी देती है। राज्य की मुख्य घड़ी का जीर्णोद्वार देश के पुनर्जन्म और पुनर्निर्माण का प्रतीक है।

पात्र

लेनिन।
द्जेर्जिन्स्की।
रिबाकोव—नौसैनिक।
ज़बेलिन—पुराना इंजीनियर।
ज़बेलिना—उसकी पत्नी।
माशा—उनकी बेटी।
चुदनोव—किसान।
आन्ना—चुदनोव की पत्नी।
रोमान—उनका बेटा।
लीजा—उनकी बहू।
स्त्योप्का
मारूस्या— उसके बच्चे।
काजानोक—घण्टा बजानेवाला।
पुराना मजदूर।
दाढ़ीवाला मजदूर।
अपरेन्टिस।
भिखारिन।
बूढ़ी औरत।
बुनाई करने वाली महिला
भयभीत महिला — ज़बेलिन के मेहमान
संशयवादी
आशावादी
ज़बेलिन की बावर्चिन।
चेयरमैन।
लेनिन की सेक्रेटरी।
ग्लागोलेव—विशेषज्ञ।
टाइपिस्ट।
घड़ीसाज।

अंग्रेज लेखक।
गुड़िया बेचनेवाली।
लाल सैनिक।
राही।
पादरी।
दलाल।
चर्बी बेचनेवाली।
औरत।
गोटा-बेल बेचनेवाली।
बूटवाला।
पहला आवारा लड़का।
दूसरा आवारा लड़का।
तीसरा आवारा लड़का।
राहगीर, दुकानदार, फौजी।

पहला अंक

दृश्य 1

(मास्को का ईवेर्स्काया गिरजाघर। अविराम जगमगाते हुए दीपदान। अप्रैल की एक शाम का दृश्य। लाल चेहरेवाली एक मोटी-सी औरत गुड़िया बेच रही है। पुराने फैशन का कोट पहने हुए एक दलाल जल्दी-जल्दी कभी आगे जाता है, कभी पीछे। राहगीर गुजरते जाते हैं। उनकी वेषभूषा और हाव-भाव से यह साफ है कि वे गरीब लोग हैं जो किसी तरह भुखमरी के राशन पर दिन काट रहे हैं)

गुड़िया बेचनेवाली : गुड़िया ले लो, गुड़िया ले लो! बच्चों के लिए बेहतरीन तोहफा! सिल्क की गुड़िया, साटन की गुड़िया, कीमखाब की गुड़िया—हर एक का दाम साढ़े सात लाख रूबल! चुन लो, छाँट लो, गुड़िया ले लो! गुड़िया ले लो!

(एक पादरी आता है। आँखें नीचे किये हुए धीरे-धीरे वह आगे बढ़ जाता है)

पादरी (कोमल स्वर में, किन्तु साफ-साफ) : सोने के प्राचीन सलीब ले लो! आटा दे दो, सलीब ले लो!!

राही : क्या घण्टे भी आप आटे से बदल लेंगे?

पादरी : क्यों? क्या तुम लेना चाहते हो?

राही : तुम पूरे जूडाज* हो! मौका मिले तो तुम माता मरियम को भी बेच डालो!

गोटा-बेल बेचनेवाली : ब्रसेल्स और शैन्टिली की बेलें ले लो! बढ़िया-बढ़िया गोटे ले लो! खरीद लो, ब्रसेल्स और शैन्टिली की बेलें! बढ़िया-बढ़िया गोटे ले लो!

दलाल (भर्रायी, शराबी जैसी आवाज में) : पुराने कपड़ों के बदले जौ ले लो! बाजार का सबसे अच्छा जौ! बाहर से आया है, खूब खुशबूदार है! पुराने कपड़े दे दो, जौ ले लो, जौ!

रास्ता चलती एक औरत : शाल लोगे क्या?

दलाल : यह तो देखकर ही कहा जा सकता है।

औरत : ओरेन्बुर्ग का रोयेंदार शाल है, एकदम नया।

दलाल : है कहाँ?

औरत : तुम्हारा जौ कहाँ है?

---

* यीशु मसीह के साथ विश्वासघात करनेवाला उनका एक कुख्यात शिष्य।

दलाल : यहीं, पास ही है। घबराओ नहीं, मैं तुम्हें ठगूँगा नहीं। मैं एक ईमानदार व्यापारी हूँ।

(औरत और दलाल चले जाते हैं)

चर्बी बेचनेवाली : चर्बी ले लो, चर्बी ले लो! पोल्तावा की चर्बी ले लो। अभी-अभी पोल्तावा से आयी है! सोना दो, चर्बी लो!

आवाजें : पेटियाँ, पेटियाँ, पेटियाँ! सैकरीन की गोलियाँ! शक्कर जैसी मीठी, शक्कर जैसी बढ़िया—खर्च कम, किफायत ज्यादा...

गोटा-बेल बेचनेवाली : गोटे ले लो! ब्रसेल्स और शैन्टिली के गोटे ले लो!

(एक आदमी आता है। चेहरे से उम्र का अन्दाज नहीं लगता। वह पेटेन्ट लेदर के ऊपर तक कसे हुए औगीवाले बूट और चारखानेदार कपड़े का फौजी गर्म कोट पहने है तथा अंग्रेजी ढंग की टोपी लगाये है)

बूटवाला : एकदम नया धर्म-विरोधी साहित्य ले लो! दोस्तोयेवस्की की नयी किताब—उनके मरने के बाद छपी किताब—'पति की गैर मौजूदगी में पत्नी के कारनामे'! काउन्ट सोलोगुब की प्राइवेट लाइफ के असली किस्से—किस्म-किस्म के चुटकुलों और दास्तानों से भरपूर। उनकी हरकतों के सचित्र किस्सों से भरपूर।

पहला आवारा लड़का : यह क्या है? यह इक्का तो दूसरे ताश का है!

दूसरा आवारा लड़का : अब तू बकता क्या है!

(दोनों में गुत्थमगुत्था शुरू हो जाती है)

पहला आवारा लड़का : पैसा रख!

दूसरा आवारा लड़का : अच्छा-अच्छा! अपना पंजा तो हटा!

पहला आवारा लड़का : बोल, ईमानदारी से खेलेगा?

दूसरा आवारा लड़का : जिन्दगी की कसम।

(वे फिर खेलने लगते हैं)

गोटा-बेल बेचनेवाली : ब्रसेल्स और शैन्टिली की गोटे ले लो!

दूसरा आवारा लड़का : इस बार मैंने पाँच लाख लगाया।

पहला आवारा लड़का : दौलत की शक्ल तो दिखा।

दूसरा आवारा लड़का : यह रहा।

तीसरा आवारा लड़का : अरे देखो! यह दियासलाइयाँ बेचनेवाला इंजीनियर आ रहा है।

ज़बेलिन (मंच के पीछे से) : दियासलाइयाँ गंधक की दियासलाइयाँ। खतराविहीन दियासलाइयाँ। गंधक की बनी दियासलाइयाँ, खतरे से मुक्त दियासलाइयाँ!

पहला आवारा लड़का : होशियार! हम उसके रुपयों-पैसों और सिगरेटों को मार लेंगे। फिर वह हमारे नाम रोता रहेगा।

(ज़बेलिन सामने आता है। उसकी दाढ़ी सफाचट है। कनपटी और मूँछों के चितकबरे बाल करीने से कटे हैं। वह वर्दीवाला कोट पहने है और टोपी लगाये है। उसका कॉलर कलफ के कारण कड़ा है। उस पर वह पुराने फैशन की एक मंहगी टाई बाँधे है। ऊपर से एक पुराना ओवरकोट डाले हुए है)

पहला आवारा लड़का : नमस्ते, इंजीनियर!

ज़बेलिन : नमस्ते।

पहला आवारा लड़का : क्या हाल-चाल है?

ज़बेलिन : तुम्हारे हाल से बेहतर नहीं।

पहला आवारा लड़का : ऐसा कैसे हो सकता है! आपके पास एक घर तो है। मैं तो कोलतार के एक पुराने बॉयलर में रहता हूँ!

ज़बेलिन : जल्द ही मैं भी तुम्हीं के पास आ जाऊँगा।

पहला आवारा लड़का : तब की तब देखी जायेगी। अभी से क्यों ऐसा कहते हो! आज धन्धा अच्छा रहा?

ज़बेलिन : कह नहीं सकता। पैसे गिने नहीं।

पहला आवारा लड़का : लाइये, हम लोग गिन दें!

ज़बेलिन : तुम कैसे गिनोगे?

पहला आवारा लड़का : मैं? सवालों में तो मैं अव्वल आता था। अरे, उधर देखो! इंजीनियर साहब, जाओ। हम लोग आपसे फिर मिलेंगे। भागो, लौंडो, चलो हम लोग त्वेर्सकाया की तरफ कैन्टीन में चलें। शायद कुछ खाने को ही मिल जाय।

(गाते हुए लड़के चले जाते हैं)

दीन नदी में सर-सर करता
जाता स्टीमर एक तेज,
चप्पू उसके करते खूब

घर्र-घर्र आवाज!
नदी गया था मछली मारने
व्हाइट गार्ड एक मछलीमार,
आया झटका तीव्र पवन का
बन गया मछली का आहार!!

ज़बेलिन : लड़ाई से पहले की गंधक की सलाइयाँ!

गुड़िया बेचनेवाली : बच्चों के लिए तोहफा, सिल्क की गुड़िया, साटन की गुड़िया, कीमखाब की गुड़िया! गुड़िया ले लो, गुड़िया ले लो!! अपने बच्चों के लिए अनोखा तोहफा ले लो!!

(गुड़िया बेचनेवाली के पास आकर एक लाल सैनिक रुक जाता है)

लाल सैनिक : कितने की है?

गुड़िया बेचनेवाली : सात लाख पचास हजार की।

लाल सैनिक : क्या कहा? एक गुड़िया के लिए इतने सारे पैसे? इस बेकार चीज के लिए इतना रुपया? यह तो दिन-दहाड़े लूट है!

गुड़िया बेचनेवाली : अरे, नहीं चाहिए तो न खरीदो।

लाल सैनिक : कौन कहता है नहीं चाहिए? काम की बात करो। ठीक बोलो, क्या लोगी?

गुड़िया बेचनेवाली : वही सात लाख, पचास हजार।

लाल सैनिक : पाँच लाख नहीं?

गुड़िया बेचनेवाली : मजाक करना है तो कहीं और जाओ।

लाल सैनिक : मैं तुम्हें पूरे पाँच लाख दूँगा... आखिर... कोई घोड़ा तो बेच नहीं रही हो—गुड़िया है न, खिलौना ही तो है।

गुड़िया बेचनेवाली : अगर ऐसी बात है, तो अपना रास्ता नापो! छोड़ो गुड़ियों का चक्कर **(गुस्से से)** दबा-दुबूकर उन्हें गन्दा न करो!

लाल सैनिक (शान्तिपूर्वक) : अच्छा, अच्छा! तुम अपने हाथ से निकाल दो। इसमें कौन सबसे बड़ी है?

ज़बेलिन : क्यों? क्या तौलकर लेंगे?

लाल सैनिक : देखा! कुछ दिखाने को भी तो हो कि इतने रुपये में क्या मिला! **(गुड़िया बेचनेवाली को ध्यान से देखते हुए)** देखो जी, वह ऐंचा-तानी आँखोंवाली मुझे मत देना!

गुड़िया बेचनेवाली : अनाड़ी कहीं का! इसकी आँखें ऐंचा-तानी नहीं हैं, इसके चेहरे पर एक खास भाव है।

लाल सैनिक : अगर कीमत नहीं घटाती तो चीज भी बढ़िया देनी चाहिए। **(ज़बेलिन से)** ठीक है न?

ज़बेलिन : तुम्हें गुड़िया लेने की जरूरत ही क्या है?

लाल सैनिक : यह भी क्या सवाल है? मेरी छोटी लड़की है, उसी के लिए ले रहा हूँ। मोर्चे से लौटकर मैं घर जा रहा हूँ। साथ में कुछ तोहफे ले जाना चाहता हूँ। तुम्हारी दियासलाइयों की क्या कीमत है?

ज़बेलिन : मैं मोल-भाव नहीं करता हूँ।

लाल सैनिक : जलती भी हैं?

ज़बेलिन : धोखा देने की आदत नहीं।

लाल सैनिक : यह कौन जाने! कल मैंने एक रोटी खरीदी थी। उसमें मुँह लगाया—सारा मुँह कड़ुवा हो गया! कुत्ते को दी—उसने भी सूँघकर मुँह फेर लिया। लेकिन तुम कहो कि ये सचमुच अच्छी हैं, तो मैं कुछ सलाइयाँ भी ले लूँगा। दूसरी चीजों के साथ उन्हें भी गाँव लेता जाऊँगा। गाँव में दियासलाइयों तक का अकाल है। अब हर चीज का अकाल है। (नोटों का एक बण्डल निकालते हुए) लेकिन, यह देखो, हम कितने रईस हैं—सैकड़ों और हजारों रुपये यों ही फेंकते चल रहे हैं! दौलत में लोट रहे हैं!

ज़बेलिन : बहुत दिनों से फौजी हो?

लाल सैनिक : 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध में लड़ा था और फिर गृहयुद्ध में भी।

ज़बेलिन : हुँह... तब तुम्हारे हाथ लगा ही क्या नहीं है! एक गुड़िया, दियासलाई की एक डिबिया—बस?

लाल सैनिक : कुछ भी हो, आखिर तोहफे तो ये भी हैं। अरे, यहाँ खड़ा मैं तुमसे बात करता रहूँगा तो मेरी गाड़ी छूट जायेगी। घड़ी है, क्या बजा है?

ज़बेलिन : नहीं। क्रेमलिन की घड़ी बन्द हो गयी है।

लाल सैनिक : क्यों? क्या उसमें कोई खराबी आ गयी है?

ज़बेलिन : हाँ, मेरे दोस्त! राज्य की इस मुख्य घड़ी में शायद कुछ गड़बड़ी हो गयी है! क्रेमलिन की घण्टियाँ खामोश हैं। खुदा हाफिज सैनिक! तुम गुड़िया ही घर ले जाओ।

लाल सैनिक : सुनो जी, मैं तुम्हारे जैसों को खूब जानता हूँ। इस तरह की बातें करोगे तो दीवाल के पास खड़ा करके तुम्हें गोली मार दी जायेगी।

ज़बेलिन : तुम्हारा ख्याल है कि उससे हालत सुधर जायेगी। हरगिज नहीं!

लाल सैनिक : यह मैं नहीं जानता, लेकिन इतना जरूर जानता हूँ कि तुम्हें गोली मार देने से कोई नुकसान न होगा। अच्छा, खुदा हाफिज! मैं जल्दी में हूँ।

ज़बेलिन : लड़ाई से पहले की दियासलाइयाँ। गंधक की दियासलाइयाँ। (**गुड़िया बेचनेवाली से**) हाँ, क्रेमलिन की घण्टियाँ खामोश हैं... श्रीमती जी, इसके बारे में आपका क्या ख्याल है?

गुड़िया बेचनेवाली : मेरी अलार्म घड़ी जमीन पर गिर पड़ी थी। वह भी बन्द हो गयी है। अब पता नहीं चलती है कि उसे कहाँ ठीक करायें।

ज़बेलिन : श्रीमती जी, आप बकवास कर रही हैं।

गुड़िया बेचनेवाली : आप इतने होशियार हैं, तो मूर्ख लोगों से क्यों बोलते हैं? (**उसकी तरफ से मुँह घुमा लेती है**) अपने बच्चों के लिए भेंट ले लो! बच्चों के लिए इससे अच्छा तोहफा नहीं हो सकता। चुन लो, छाँट लो, बढ़िया से बढ़िया गुड़िया ले लो!

ज़बेलिन : लड़ाई से पहले की गंधक की दियासलाइयाँ! सेफ्टी दियासलाइयाँ!

(दलाल लौट आता है)

दलाल : पुराने कपड़ों के बदले जौ ले लो। कपड़े दो, जौ लो! जौ से अधिक ताकतवर कोई चीज नहीं होती।

ज़बेलिन : ऐ जौवाले! सुनो!

दलाल : फर्माइये, हुजूर!

ज़बेलिन : लन्दन में अगर वेस्टमिंस्टर एबे की घण्टियाँ खामोश हो जायें तो तुम्हारा क्या ख्याल है—अंग्रेज क्या कहेंगे?

दलाल : मैं नहीं जानता, हुजूर!

ज़बेलिन : वे कहेंगे इंग्लैण्ड का अन्त हो गया।

दलाल : शायद! हाँ, शायद वे यही कहेंगे!

ज़बेलिन : भाई, मैं तुम्हें बताता हूँ कि फालिज है, दिल का फालिज है।

दलाल : हुजूर! अच्छा हो अगर आप ऐसी बातें अपनी श्रीमती जी से ही करें। हमसे नहीं।

गुड़िया बेचनेवाली : तुम जी. पी. यू.*के लिए मर रहे हो, तो जाओ मरो। लेकिन, खुदा के वास्ते, हमें अपने साथ न घसीटो! तुम वैधानिक जनवादी** हो तो

* सुरक्षा विभाग।

** रूसी पूँजीपति वर्ग की मुख्य पार्टी जो क्रान्ति के समय पूर्णतया क्रान्तिविरोधी बन गयी थी।

बने रहो—यह विज्ञापन किसलिए करते घूम रहे हो? क्रेमलिन-विरोधी प्रचार करके मेरे ग्राहकों को भड़का रहे हो? तुम्हें यह राज पसन्द नहीं तो जाओ क्राइमिया में व्रांगेल* के पास चले जाओ। तुम ईमानदार सोवियत मुनाफाखोर नहीं हो! मैं इतना चिल्ला रही हूँ और तुम ऐसे खड़े हो जैसे तुम्हारे जबान ही नहीं है। घमण्ड से फूले जा रहे हो। तुम तो दूसरे यीशू हो—तुम्हारे पास सिर्फ खुदाई सन्देश-वाहक नहीं हैं! (**वहाँ से दूर हटते हुए**) अपने बच्चों के लिए बढ़िया उपहार ले लो! (**आँखों से ओझल जो जाती है**)

ज़बेलिन : मैं तो वही कहता हूँ जो सोचता हूँ। तुम लोग डरपोक हो।

दलाल : निस्सन्देह, मैं डरता हूँ। कहूँ तो, बुरा न मानियेगा, हुजूर, इस तरह की बातचीत के लिए आदमी को वे सण्डासें साफ करने का काम दे सकते हैं। वेस्टमिन्स्टर की घण्टियों की बात दूर रही। (**चला जाता है**)

पादरी (जो पास ही खड़ा हुआ इस बातचीत को सुन रहा था) : तुम्हें देखकर मुझे लगता है कि तुम्हारे दिल में एक महान ज्योति जल रही है।

ज़बेलिन : माफ करना, पादरियों से मैं कभी कोई बात नहीं करता।

पादरी : मेरे दोस्त, यही तो तुम्हारी गलती है। इन लोगों ने पादरियों को निकाल बाहर किया है और इसका नतीजा क्या निकला?

ज़बेलिन : खास तौर से तुमसे बात करना तो और भी गन्दा होगा।

पादरी : तुम तो किसी भी तरफ नहीं हो! तुम जरूर डूब जाओगे।

ज़बेलिन : मैं फिर कहता हूँ कि पादरियों और बदमाशों से मैं कोई ताल्लुक नहीं रखता।

पादरी : तुम शैतान की औलाद हो!

ज़बेलिन : बुड्ढा पाखण्डी, भाग जा यहाँ से!

पादरी : पाखण्डी तू खुद है!

ज़बेलिन : अब मैं मरम्मत करूँगा तुम्हारी।

पादरी : तेरे ऊपर शैतान सवार है। तू पूरी तरह पागल हो गया है। मैं तुझे बताये देता हूँ!

(पादरी वहाँ से खिसक जाता है। उसी समय ज़बेलिन की पत्नी आ जाती है। उसकी उम्र चालीस की होगी, लेकिन लगती कम हैं। किसी समय वह सुन्दर रही होगी, आकर्षक अब भी है। उसके कपड़े व्यवस्थित हैं। सिर पर एक

* एक व्हाइट गार्ड जनरल जिसका विदेशी साम्राजियों और रूसी क्रान्ति के विरोधियों ने इस्तेमाल किया था।

सफेद ऊनी शाल है)

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच, कृपया घर चलें।

ज़बेलिन : सड़कें ही मेरा घर हैं।

ज़बेलिना : सड़कों पर रहने के लिए तुम्हें कौन मजबूर करता है? कोई नहीं।

ज़बेलिन : सोवियत सत्ता। यह तुम्हारी अक्ल का फितूर है। इसके बारे में हम बाद में बात करेंगे--जब तुम्हारी समझ ठीक हो जायेगी। मेरी सलाह है कि तुम अपनी बेटी की देखभाल करो... मुझे देखभाल की जरूरत नहीं है।

ज़बेलिना : लेकिन माशा तो अब बच्ची नहीं रह गयी। वह खुद अपनी देखभाल कर सकती है। उसकी खुद अपनी जिन्दगी है।

ज़बेलिन : हाँ, तुम यह ठीक कहती हो। और कल अगर वह एक वेश्या बन जाती है तो मुझे ताज्जुब नहीं होगा!

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच, खुदा तुम पर रहम करे। तुम माशा के बारे में ऐसी बातें कर रहे हो, अपनी ही बेटी के बारे में!

ज़बेलिन : क्या तुम जानती हो कि एक घण्टा पहले ही तुम्हारा बेटी एक आदमी के साथ मेट्रोपोल होटल गयी थी?

ज़बेलिना : मैट्रोपोल अब होटल नहीं रह गया। वह सोवियतों का अब दूसरा दफ्तर बन गया है।

ज़बेलिन : मैं नहीं जानता, वहाँ कौन-सा दफ्तर है। मैट्रोपोल तो एक होटल है। तुम्हारी बेटी वहाँ जाती है। उसे खुद मैंने देखा है।

ज़बेलिना : तुम मेरे पति हो या न हो, खबरदार, अगर मुझसे ऐसी बातें फिर कहीं! मर्जी हो तो मुझे तलाक दे दो।

ज़बेलिन : वह महाशय अगर तीन दिनों के अन्दर हमारे घर बात करने नहीं आते तो फिर जो ठीक समझूँगा वह करूँगा...

ज़बेलिना : ठीक है, अब इस बात का खत्म करें... अन्तोन इवानोविच! यह बड़ा दुखदायी जीवन है जो अब हमने शुरू किया है... बड़ा कटु है!

ज़बेलिन : पूरा रूस ही अब दुखदायी जीवन बिता रहा है। जीवन बहुत कटु हो गया है।

बूटवाला : काउन्ट कैलिओस्ट्रो, मेरे पास आधा मग देशी ठर्रा है। आप कुछ लेना चाहते हैं? **(ज़बेलिना को देखकर)** ओह, माफ कीजियेगा।

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच, तुम्हारे हाथ बिल्कुल ठिठुर, गये हैं। मेरे साथ घर चलो। सुबह से तुमने कुछ खाया नहीं। आओ, चलें।

ज़बेलिन : मैं सुबह कभी नहीं खाता। तुम जहाँ जा रही थीं, जाओ।

ज़बेलिना : ओह, कैसी दुखदायी जिन्दगी है! **(जाती है)**

ज़बेलिन : गन्धक की बनी दियासलाइयाँ, लड़ाई से पहले की दियासलाइयाँ.. बढ़िया...

(फेरीवालों में यकायक हलचल मच जाती है। मंच पर दूर कहीं से लाल सैनिकों के गाने की आवाज आ रही है)

चर्बी बेचनेवाली : ओह, मुझे छिपा लो, मेरी मदद करो! मैं चर्बी छिपाये हूँ। मेरे शरीर पर सब जगह चर्बी ही चर्बी है। **(भागती है)**

(सैन्य प्रशिक्षार्थी गाते हुए निकल जाते हैं)

दृश्य 2

(मैट्रोपोल होटल का एक कमरा। वह होटल के कमरे जैसा नहीं लगता। चारों तरफ अखबारों और किताबों के अम्बार लगे हैं। मेज पर एक लैम्प, काली रोटी का एक टुकड़ा, चाय की केतली, एक गिलास और कारतूसों के कई बण्डल रखे हैं। चारपाई के ऊपर दीवाल पर एक राइफल, एक तलवार और एक पिस्तौल लटक रहे हैं। पिस्तौल चमड़े के कबूर में बन्द है। दरवाजे के समीप कोट और हैट पहने माशा ज़बेलिना खड़ी है। कमरे के दूसरे किनारे पर रिबाकोव बैठा हुआ किताब के पन्ने पलट रहा है। माशा थोड़ी देर तक उसे यों ही देखती रहती है। उसके चेहरे पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान है)

माशा : तुमने दरवाजा क्यों बन्द किया?

रिबाकोव : ताकि कोई अन्दर न आ सके।

माशा : झूठ...

(रिबाकोव चुप है)

माशा : दरवाजा खोल दो, मैं जा रही हूँ।

रिबाकोव : नहीं खोलूँगा।

माशा : समझते हो यह तुम क्या कर रहे हो?

(रिबाकोव चुप है)

कैसी गन्दी चाल है! दरवाजा बन्द करके उसकी चाभी ले लेना—उचक्कों की तरह! तुम हँस रहे हो, कैसी घृणित हँसी है... मुझे जाने दो। तुमने सुना?

रिबाकोव : सुना।

माशा : फिर?

रिबाकोव : दरवाजा मैं नहीं खोलूँगा।

माशा : तो मैं खिड़की से कूद जाऊँगी।

रिबाकोव : तो कूद जाओ।

माशा : यह कितनी गन्दी हरकत है। लेकिन तुम्हारे बिल्कुल अनुरूप है। तुम्हारा ख्याल है कि कोई लड़की तुमसे मिलने आये तो पहला काम यह करना चाहिए कि दरवाजे बन्द कर दो! है न?

रिबाकोव : यह कोई गन्दी हरकत नहीं है।

माशा : अत्यन्त घृणित हरकत है।

रिबाकोव : हरगिज नहीं।

माशा : अत्यन्त जघन्य हरकत है।

रिबाकोव : आज मैं तुम्हारे साथ फैसला करके रहूँगा।

माशा : दरवाजे बन्द करके?

रिबाकोव : मैं कर ही क्या सकता हूँ?

माशा : और इस पर भी तुम में यह कहने की हिम्मत है कि तुम मुझसे प्यार करते हो?

रिबाकोव : फिर तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ! जब भी मैं तुमसे बात करने की कोशिश करता था, तुम हँसकर भाग जाती थीं। अब देखें, कैसे भागती हो!

माशा : इसके माने हुए कि तुमने मेरे साथ छल किया?

रिबोकोव : बिल्कुल ठीक। झाँसा देकर मैंने तुम्हें यहाँ बुलाया है। बैठ जाओ।

माशा : तुम्हारे बोलने का ढंग कैसा बढ़िया है! क्या तुम मेरे ऊपर हुक्म चलाने की कोशिश कर रहे हो?

रिबाकोव : बैठ जाओ।

माशा : मैं नहीं बैठूँगी।

रिबाकोव : न बैठो, उससे मेरे लिए कोई फर्क नहीं पड़ता। चाहो तो सुबह तक तुम इसी तरह खड़ी रह सकती हो।

माशा : सुबह तक—तुम्हारा मतलब क्या?

रिबाकोव : वही जो मैं कह रहा हूँ—सुबह तक, कल सुबह तक!

माशा : रिबाकोव, तुम नशे में तो नहीं हो?

रिबाकोव : मारीया अन्तोनोवना, तुम्हारी चुहल से अब मैं थक गया हूँ। तुम्हारे खेलने के लिए मैं कोई खिलौना नहीं हूँ, तुम्हारी ही तरह मैं भी हाड़-माँस का बना एक इनसान हूँ। तुम मुझसे ज्यादा पढ़ी-लिखी हो। हमारा-तुम्हारा जिस तरह पालन-पोषण हुआ है उसका भी कोई मुकाबला नहीं किया जा सकता। लेकिन नामालूम किस वजह से तुम मेरे साथ इतना बेहूदा बर्ताव कर रही हो। तो ठीक है, अब मैं भी तुम्हारे ही कदमों पर चलूँगा! जब तक मुझे तुम जवाब नहीं दे दोगी तब तक यह दरवाजा बन्द रहेगा और तुम इसी तरह यहीं खड़ी रहोगी।

माशा : अच्छा! तो तुम कहना क्या चाहते हो?

रिबाकोव : कहने का—कहने को दरअसल कुछ नहीं है... मुझे कहना ही क्या है, तुम सब जानती हो।

माशा : लेकिन तुम मुझसे बात करना चाहते थे न? करो फिर, मैं सुन रही हूँ!

रिबाकोव : यह ठीक नहीं है, मारीया अन्तोनोवना! तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर रही हो...

माशा : हजारवीं बार मैं तुमसे फिर कह रही हूँ कि मुझे मारीया अन्तोनोवना मत कहो। माशा कहकर बुलाने की इजाजत बहुत पहले ही मैंने तुम्हें दे दी थी।

रिबाकोव : माशा! मुझे और कुछ नहीं कहना है। मुझे जो कुछ कहना है वह मैं कई-कई बार कह चुका हूँ।

माशा : प्रिय रिबाकोव, मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बनूँगी।

रिबाकोव : आखिर क्यों?

माशा : मैं नहीं बनूँगी, बस। इस बात को भूल जाओ। गुड बाई। दरवाजा खोल दो।

रिबाकोव : यह कोई जवाब नहीं है। क्या यही तरीका है तुम्हारा?

माशा : बिल्कुल यही मेरा आखिरी जवाब है।

रिबाकोव (यकायक बहुत उत्तेजित होकर) : तब फिर तुम्हारे चेहरे पर यह मैत्री भाव क्यों है? जब कोई लड़की किसी आदमी को अस्वीकार कर देती है तब उसकी आँखों में इतनी ममता, इतनी खुशी नहीं रह सकती, रह सकती है क्या? या सचमुच ऐसी भी लड़कियाँ होती हैं जिनकी सहृदयता और सौन्दर्य का कोई मतलब ही नहीं होता? "आकाश की अप्सरा की तरह रूपसी, किन्तु राक्षसी की तरह बद और काइयाँ!.."

माशा : अरे, तो क्या तुम जानते नहीं थे? मैं राक्षसी ही तो हूँ—बद और काइयाँ!

रिबाकोव : इसमें खुशी की क्या बात है?

माशा : और तुम, गृहयुद्ध के एक योद्धा... कितनी हास्यास्पद बात है... कितनी शर्मनाक...

रिबाकोव : अच्छा, तो मैं अब समझा! तुम्हारी राय में गृहयुद्ध का योद्धा इनसान नहीं होता?

माशा : मैंने यह नहीं कहा था।

(टेलीफोन की घण्टी बजती है)

रिबाकोव : हाँ, मैं रिबाकोव बोल रहा हूँ... जन-कमिसार परिषद से? मैं रिबाकोव बोल रहा हूँ... कृपया व्लादीमिर इल्यीच से कह दीजिये कि उनके आदेश पूरे हो गये हैं... हाँ... ठीक...

माशा : देखो तो! हम कैसे समय में जी रहे हैं! तुम्हारा लेनिन से इतना नजदीकी परिचय है...

रिबाकोव : मारीया... माशा! तुम बिल्कुल गलत सोच रही हो, बिल्कुल गलत। हम लोग कोई साधु-सन्यासी नहीं हैं...

माशा : साधु-सन्यासियों के बारे में तुम कैसे जानते हो?

रिबाकोव : कैसे जानता हूँ? रात-रात भर बैठकर जो मैं पढ़ता रहता हूँ वह किसलिए है?

माशा : कल रात तुमने क्या पढ़ा था?

रिबाकोव : 'हमारे युग का एक नायक'।*

माशा : और इससे पहले वाली रात में?

रिबाकोव : 'दूर से लिखे गये पत्र'।**

माशा : अपने पढ़ने के बारे में तुम मुझसे कोई सलाह लेना पसन्द करोगे?

रिबाकोव : माशा, बैठ जाओ, क्षण भर के लिए ही बैठ जाओ!

माशा : दरवाजा खोलो।

रिबाकोव : नहीं।

माशा : यह बहुत बेहूदा बात है। बहुत अपमानजनक है।

रिबाकोव : किसी व्यक्ति पर हँसना क्या कोई बेहूदगी नहीं?

माशा : मैं तुम्हारे ऊपर नहीं हँस रही हूँ।

रिबाकोव : चाहे तीन दिन और तीन रातें बीत जायें, तुम यहीं बन्द रहोगी।

---

* लेरमोन्तोव का प्रसिद्ध उपन्यास।

** लेनिन के वे प्रसिद्ध पत्र जो रूस की नवम्बर क्रान्ति से पहले उन्होंने रूस के बाहर से लिखे थे।

जब तक संजीदगी से, सचाई से मेरी बात का जवाब नहीं दे दोगी, तब तक मैं तुम्हें बाहर नहीं जाने दूँगा।

माशा : मैंने जवाब दे दिया।

रिबाकोव : वह कोई जवाब नहीं था।

माशा : क्योंकि वह तुम्हें पसन्द नहीं आया?

रिबाकोव : नहीं, इस वजह से नहीं।

माशा : मैं कोई दूसरा जवाब तुम्हें नहीं दूँगी।

रिबाकोव : तब तुम यहीं कैद रहोगी।

माशा : अच्छी बात है, मैं यहीं रह जाऊँगी।

रिबाकोव : ठीक।

माशा : मेहरबानी करके सिगरेटें कम पीजिये और खिड़की खोल दीजिये।

रिबाकोव : इसके लिए मैं माफी माँगता हूँ।

माशा : तुम हथियारों का इस्तेमाल क्यों नहीं करते? पिस्तौल उठाइये और धमकी दीजिये।

रिबाकोव : मैं किसी को डराना-धमकाना नहीं चाहता।

माशा : मेरी एक सहेली को उसके चीफ ने हुक्म दिया था कि तीन दिनों के भीतर वह उससे शादी कर ले। अगर वह ऐसा नहीं करेगी तो उसके चीफ ने धमकाया था, कि उसको और उसके माँ-बाप को भूतपूर्व पूँजीपतियों के नाते निर्वासित कर दिया जायेगा।

रिबाकोव : ऐसे बदजात आदमी को तो गोली मार देनी चाहिए।

माशा : लेकिन क्या तुम उससे भिन्न हो?

रिबाकोव : बेशक।

माशा : कैसे?

रिबाकोव : मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।

माशा : क्या?

रिबाकोव : मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। और तुम इस बात को जानती हो।

माशा : कृपया मुझसे प्यार-व्यार की बातें न कीजिये। तुम्हारी बात सुनकर मुझे उबकाई आती है।

रिबाकोव : उबकाई?

माशा : हाँ।

रिबाकोव (दरवाजा खोल देता है) : यह है असली जवाब... सच्चा और ईमानदारी से दिया गया।

माशा (अनिश्चित भाव से) : तब तुम नाराज क्यों हो गये?
रिबाकोव : कम से कम यह मानवीय है... अब जाओ।

(दरवाजे पर ज़बेलिना आ जाती हैं)

ज़बेलिना : क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ?
माशा : माँ? तुम? यहाँ कैसे आ गयीं?
ज़बेलिना : मैंने बाहर पूछ लिया था कि नागरिक रिबाकोव कहाँ रहते हैं।
माशा : तुम किसलिए आयी हो? कोई खास बात?
ज़बेलिना : क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ?
रिबाकोव : हाँ, हाँ, अवश्य!
ज़बेलिना (अन्दर आ जाती है और रिबाकोव को सम्बोधित करती है) : नमस्ते, नौजवान! देख लो तुम्हारी भावी सास कैसी है!
माशा : माँ! तुम्हारे दिमाग में यह ख्याल कैसे आ गया?
ज़बेलिना : तुम्हारी बातों से।
माशा : लेकिन तुम तो कुछ भी नहीं जानतीं...
ज़बेलिना : मैं सब कुछ जानती हूँ। न जानती होती तो यहाँ क्यों आती? तुम्हारा कमरा कितना गन्दा है, नौजवान—चारो तरफ कितना कूड़ा पड़ा है! इतने अखबार तुम क्यों रखे रहते हो? पढ़ने के बाद फेंक दिया करो। नहीं, तुम्हारे रहने का तरीका ठीक नहीं है। मैं सब कुछ जानती हूँ, अलेक्सांद्र मिखाइलोविच।
रिबाकोव : पर मैं कुछ नहीं जानता।
माशा : माँ, मैं विनती करती हूँ! कृपया खामोश रहें।
ज़बेलिना : मैं कुछ नहीं कहूँगी। नौजवान, तुम्हें बहुत पहले ही हमारे घर आकर बात करनी चाहिए थी।
रिबाकोव : मुझसे ऐसा करने के लिए कहा ही नहीं गया।
ज़बेलिना : इसके बारे में मैं कुछ नहीं जानती। लेकिन तुम्हें खुद जिद करनी चाहिए थी और आकर हम लोगों से मिलना चाहिए था। **(माशा से)** तुम्हारे पिता ने तुम्हें इस नौजवान के साथ देखा था। वह जानते हैं कि तुम इनसे मिलने यहाँ आती हो।
माशा : यह हो नहीं सकता...
ज़बेलिना : तो तुम्हारा क्या ख्याल है, मुझे कैसे पता चला कि तुम यहाँ हो?
माशा : हे भगवान! उन्होंने क्या कहा?
ज़बेलिना : माशा, अब हमें जल्दी से घर पहुँचना चाहिए। रास्ते में सारी बात

मैं तुम्हें बता दूँगी। और तुम, नौजवान, तुम्हें मैं शनिवार को अपने घर आने के लिए आमन्त्रित करती हूँ—शाम को, करीब सात बजे। **(कमरे में एक बार फिर वह चारों तरफ नजर डालती है)** कमरा अच्छा है, लेकिन बहुत बेतरतीब है! तुम ठीक से नहीं रहते! गुड बाई! माशा, आओ चलो।
रिबाकोव : मैं क्या करूँ, मारीया अन्तोनोवना?
माशा : आपकी मर्जी!

(ज़बेलिना और माशा बाहर चली जाती हैं)

रिबाकोव : हाँ! जब आदमी दूसरे वर्ग की किसी लड़की के प्रेम में फँस जाता है तो उसका यही हाल होता है। ओह, वर्ग-हीन समाज की स्थापना कब हो सकेगी?

दृश्य 3

(झील का किनारा, कुंज में शिकारी की एक झोंपड़ी। वसन्त का प्रारम्भ है। पौ फटने में अभी एक-आध घण्टे की देर है। झोंपड़ी के द्वार पर एक लालटेन लटकी है। पास ही आग पर एक केतली चढ़ी है जिसमें पानी गर्म हो रहा है। शिकारगाह का रखवाला किसान चुदनोव वहीं आग के पास कुछ कर रहा है। गाँव के गिरजे की घण्टियाँ बजानेवाला काजानोक भी वहीं पुरानी बन्दूक के सहारे झुका खड़ा है)

चुदनोव : प्यारी सुबह, मेहरबानी बनाये रखना और अपने साथ अच्छा मौसम लाना। ओ, सर्वशक्तिमान, मैं तुम्हारी पूजा करूँगा।
काजानोक : नहीं, चुदनोव, मैं तुम्हें बताये देता हूँ, आज कुहरा पड़नेवाला है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ।
चुदनोव : पर आकाश में बादल का तो नाम तक नहीं है... मेरी समझ में नहीं आता कुहरा कहाँ से आ जायेगा। कुहरा होगा तो साथी लेनिन का फिर शिकार में कुछ नहीं मिलेगा।
काजानोक : हाँ, याद है जाड़े के दिनों में उस बार जब वह लोमड़ी का शिकार करने आये थे और बर्फ का तूफान शुरू हो गया था? शिकार की जगह तब हम स्कीइंग करने वन चले गये थे। उस समय जो हमारी बात हुई थी उसे मैं कभी नहीं भूल सकूँगा।

चुदनोव : मुझे जिन्दगी में बहुतों से मिलने और उन्हें जानने का मौका मिला है। तरह-तरह के लोग रहे हैं। जी हाँ, जनाब, बड़े-बड़े मशहूर लोग भी मेरे यहाँ शिकार करने आते थे। किन्तु लेनिन उन सबसे बहुत बड़े हैं। पर ऐसा क्यों है, यह मैं नहीं जानता।

काजानोक : वे अत्यन्त सरल हृदय हैं। यही वजह है।

चुदनोव : नहीं, वैसे भी बहुतेरे लोगों से मेरी मुलाकात हुई है। उनमें कुछ और ही बात है।

काजानोक : कितना बज गया। पाँच के करीब हो गया होगा?

चुदनोव : अरे, हाँ। अच्छा, काजानोक, तुम यहाँ नजर रखना, मैं जरा जाकर व्लादीमिर इल्यीच का पता लगा आऊँ। आँखें खोलकर बैठना। (जाता है)

काजानोक : मैं कोई बच्चा नहीं हूँ, जानता हूँ।

(मंच से दूर गीत सुनाई देता है। फिर रिबाकोव सामने आता है)

काजानोक : कौन है?

रिबाकोव : सब ठीक है।

काजानोक : खाक ठीक है! मैं पूछता हूँ, कौन है?

रिबाकोव : मैं कहता हूँ, सब ठीक है।

काजानोक : ठहरो!

रिबाकोव : ठहर गया।

काजानोक : तुम हमारे आदमी नहीं हो।

रिबाकोव : फिर किसका हूँ?

काजानोक : कोई अजनबी हो।

रिबाकोव : अरे, दादा, अपनी उस तोप को तो सामने से दूर करो। कहीं वह चलती न हो!

काजानोक : चलती तो है ही।

रिबाकोव : फिर उसे मेरी खोपड़ी के सामने मत रखो!

काजानोक : तुम हो कौन?

रिबाकोव : सबसे पहले, एक आदमी।

काजानोक : कहाँ से आये हो?

रिबाकोव : मास्को से।

काजानोक : तुम्हें गिरफ्तार किया जाता है।

रिबाकोव : फिर?

काजानोक : हाथ ऊपर उठाओ।

(चुदनोव आ जाता है)

चुदनोव : अरे, यह तो साथी रिबाकोव हैं! काजानोक, यह क्या मूर्खता कर रहे हो? यह तो वही नौसैनिक है जो इल्यीच के साथ आये थे।

रिबाकोव : मोटर को ठीक करने के लिए मैं ड्राइवर के पास रुक गया था...

चुदनोव : और तुमने इन्हें गिरफ्तार कर लिया!

रिबाकोव : वह भी तब जब मेरे पास एक रिवाल्वर है और इसके पास चिड़ियों को मारने वाली यह सड़ी-सी बन्दूक! लेकिन भाई, पहरेदार पहरेदार होता है, और यह डरपोक नहीं निकला।

काजानोक : आप हमारे ही आदमी हैं, तो ठीक है। पूछना मेरा फर्ज था। माफ कीजियेगा, मेरा इरादा आपका अपमान करने का नहीं था।

रिबाकोव : और मैंने इसे अपमान माना भी नहीं।

काजानोक : तब फिर आप मेरे ऊपर गुर्रा क्यों रहे थे?

रिबाकोव : किसी आदमी के छाती के बाल पकड़कर तुम उसे खींचो तो वह क्या करेगा?

काजानोक : जो कुछ भी पकड़ो उसे मजबूती से जकड़े रहो! इस वक्त मैं पहरे पर हूँ, ड्यूटी पर हूँ। अच्छा, फिर मिलेंगे। अब मैं गश्त पर जा रहा हूँ। आप इधर नजर रखियेगा... (चला जाता है)

रिबाकोव : इल्यीच कहाँ हैं?

चुदनोव : झील की तरफ गये हैं।

रिबाकोव : अकेले ही?

चुदनोव : चिन्ता मत करो। यहाँ चारों तरफ हमने पहरेदार खड़े कर दिये हैं। बैठ जाओ। क्षण भर में चाय तैयार हो जायेगी। गाजर की चाय है। खुदा जाने उसमें से किस चीज की बू आती है। यह भी कैसा जमाना है! कोई चीज नहीं मिलती—न चाय, न चीनी, न मिट्टी का तेल।

रिबाकोव : मुझसे शिकायत करने से क्या फायदा? तुम्हारा ख्याल है, मैं नहीं जानता?

चुदनोव : रिबाकोव, क्या मास्को में कोई बात हुई है?

रिबाकोव : कैसी बात?

चुदनोव : कोई भी असाधारण बात...

रिबाकोव : मैं नहीं जानता। मैं नहीं समझता कि ऐसी कोई विशेष बात हुई

है। पर तुम पूछ क्यों रहे हो?

चुदनोव : खैर... **(कुछ सोचकर)** साथी लेनिन किसी चिन्ता में हैं... यहाँ आकर वे एक शब्द तक नहीं बोले। जब मैंने लालटेन जलाई तो उन्होंने अपनी बन्दूक में कारतूस लगाना शुरू कर दिया। किन्तु शीघ्र ही वह रुक गये, और कमरे में टहलने लगे। फिर उन्होंने कहा कि वह झील की तरफ जा रहे हैं, हमें उनकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जब जरूरत होगी तब वह खुद हमें बुला लेंगे। जब वह चिन्तित होते हैं, मुझे फौरन पता चल जाता है...

रिबाकोव : मैं नहीं जानता... यहाँ आते समय रास्ते भर वह देहातों के बारे में, रूस के बारे में बातें कर रहे थे। मैं तुम्हें बताता हूँ कि अपनी सारी जिन्दगी में किसी को इस तरह बात करते मैंने नहीं सुना।

चुदनोव : तुम्हारी लम्बी जिन्दगी है न?

रिबाकोव : छब्बीस साल की हो गयी! बाबा जी, हँसिये नहीं! बात यह न भूलिये कि ओर्योल से काकेशस तक मैंने युद्ध में सारा रूस छान मारा है। हाँ, इल्यीच को कौन-सी चीज चिन्तित कर रही है? तुम उनके पास जाओ और सावधानी से उन्हें बता दो कि चाय तैयार हो गयी।

चुदनोव : मेरा ख्याल है कि इस वक्त उन्हें न छेड़ना ही बेहतर होगा।

रिबाकोव : नहीं, उन्हें बता देना ही अच्छा होगा। शायद चाय के बारे में वह बिल्कुल भूल गये हैं। ठण्ड से अकड़ गये होंगे। हम लोग यहाँ बहुत तड़के आ गये हैं।

चुदनोव : लो, यह चम्मच लो। चाय को अच्छी तरह हिला दो जिससे कुछ तो रंगत आ जाये। मैं उनके पास चला ही जाऊँ। (जाता है)

रिबाकोव (थोड़ी देर गुनगुनाता है, फिर पुश्किन की एक कविता की कुछ पंक्तियाँ सुनाने लगता है) : "वृक्षों की शाखाओं पर जलपरियाँ बैठी हुई थीं... और उन अछूती वीथियों पर जिन पर कभी किसी मानव ने पैर नहीं रखा था..." आखिर, इल्यीच इस वक्त किस चिन्ता में पड़ गये हैं? उनके पास चौकीदार को मैंने क्यों भेज दिया? मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। बिल्कुल नहीं करना चाहिए था। **(धीरे से आवाज देते हुए)** चुदनोव! रूस का जो चित्रांकन वह कर रहे थे उसके पीछे अवश्य ही कोई बात थी। ..."और उन अछूती वीथियों पर जिन पर कभी किसी मानव ने पैर नहीं रखा था, पशुओं के उन मार्गों पर जो मानव को अज्ञात थे... एक छोटी-सी झोंपड़ी थी..." गाजर की चाय... जरा ख्याल तो कीजिये!

(चुदनोव वापिस लौटता है)

क्या तुमने उन्हें बुलाया?

चुदनोव : बुलाना चाहते हो तो जाकर तुम खुद उन्हें आवाज दे दो। कुछ कह सकने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी गोकि मैं उनको वहाँ देख आया हूँ। वहाँ वह किसी ठूँठ या बड़े पत्थर पर बैठे हैं। समझ नहीं सका। वह बैठे हुए दूर, उस पार कुछ देख रहे हैं... कौन जाने वह कौन-सी महत्वपूर्ण योजनाएँ बना रहे हों। ऐसे में हम मूर्ख लोग उनके काम में दखल देकर उन्हें चाय पीने के लिए खींच लाना चाहते हैं!

रिबाकोव : अच्छा। तो चलो, हम लोग यहीं इन्तजार करें **(सन्नाटे को चीरती स्टीम इंजन की तेज सीटी सुनाई देती है)** सुना इसे?

चुदनोव : वह बेचारा भूखा है।

रिबाकोव : हालत गम्भीर है—जाने नहीं दे रहे हो। झील के पास ये लहरों की कलकलाहट, पत्तों की कानाफुसियाँ... यह भी कैसी रात है! चुदनोव, यह तो बताओ, क्या यहाँ कभी जलपरियाँ भी दिखलाई देती हैं?

चुदनोव : जलपरियाँ? इस समय वे अपने घरों में सो रही हैं।

रिबाकोव : मैं उनकी बात कर रहा हूँ जो डालों पर बैठी रहती हैं।

चुदनोव : ओह! उस तरह की इधर नहीं दिखलाई देतीं।

रिबाकोव : अफसोस!

चुदनोव : क्या किया जाय!

रिबाकोव : चुदनोव, मैं सोच-विचार में उलझा हुआ हूँ। देखो, क्रान्ति के दौरान हमने इतना बदल दिया है, किन्तु ये तारे! ये अब भी वैसे ही हैं जैसे हमेशा से रहे हैं। यह बात अक्ल से बाहर है—यह अनन्तता।

चुदनोव (झोंपड़ी के द्वार के पास से) : मैं यह सोच रहा हूँ कि अब तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए।

रिबाकोव : शायद तुम ठीक कह रहे हो...

चुदनोव : पहले तुम जलपरियों के विषय में पूछते हो, फिर तारों को ताकते हो... ईस्टर के बाद तुम यहाँ आना, उस वक्त हम एक ऐसी ही परी से तुम्हारी शादी कर देंगे।

रिबाकोव : मेरी तो खुद अपनी एक परी है।

चुदनोव : तुम्हारी? पर तुम बहुत खुश नहीं मालूम पड़ते।

रिबाकोव : मेरा अभागा, अप्रतिदत्त प्रेम है!

चुदनोव : अफसोस है। और यह भी तुम जैसे नौसैनिक हीरो के साथ हुआ! मास्को की लड़कियों से होशियार रहने की जरूरत है! उन्हें खुश कर पाना आसान

नहीं होता!

रिबाकोव : मुसीबत तो यही है कि वह मेरी पहुँच से परे है।

चुदनोव : हाँ, इन लोगों से डरने से काम भी नहीं बनता। यहाँ भी एक मोर्चा होता है—डरे कि मरे! डरना ही है तो उसे डरने दो! तुम सीना तानकर खड़े हो जाओ!

रिबाकोव : नहीं, साथी चुदनोव, मैं उसके बारे में संजीदा हूँ... लेकिन देखो, इल्यीच से इस बारे में कुछ न कहना...

चुदनोव : क्यों? डरते हो?

रिबाकोव : तुम भी क्या खुराफात सोचते हो!

चुदनोव : निश्चय ही तुम डर रहे हो।

रिबाकोव : अच्छा, हम लोग क्या करें? चाय ठण्डी हो रही है।

चुदनोव : शि... उनके आने की आहट लग रही है। वह आ रहे हैं।

दृश्य 4

(चुदनोव परिवार की झोंपड़ी। झोंपड़ी की तीन खिड़कियाँ हैं। झोंपड़ी के गलियारे में अलावघर है। कुछ बेंचें, एक मेज और एक देव-प्रतिमा रखी हुई है। दीवाल पर कुछ सस्ती तस्वीरों और कई पारिवारिक चित्रों के बीच लेनिन की एक तस्वीर लगी है। बूढ़ी आन्ना और उसकी बहू लीजा कमरे की सफाई कर रही हैं। लीजा के बच्चे मारूस्या तथा स्त्योप्का, उत्साह से फुसफुसाकर बातें कर रहे हैं)

आन्ना (लीजा से) : लीजा, इन बूटों को ले जाओ। इन्हें तुम बेंच पर क्यों रखती हो? इनमें से तारकोल की बू आ रही है। लोग आते ही होंगे। घर अब भी इस बुरी हालत में है। **(बच्चों से)** खुसुर-फुसुर बन्द करो! अलावघर पर चढ़ जाओ!

(लीजा बूट उठा ले जाती है। काजानोक प्रवेश करता है)

काजानोक : जश्न मुबारक हो, आन्ना व्लास्येव्ना।

आन्ना : तुम्हें भी।

काजानोक : मैं आपको यह बताने आया हूँ कि व्लादीमिर इल्यीच शीघ्र ही आने वाले हैं।

आन्ना : हे भगवान! काजानोक, घण्टाघर तक दौड़ जाओ!

काजानोक : घण्टाघर? किसलिए?

आन्ना : लो, यह तो मैं भूल ही गयी कि किसलिए!

(लीजा वापिस आ जाती है)

लीजा! काजानोक को घण्टाघर किसलिए जाना है?

लीजा : रोमान ने कहा था कि अगर मीटिंग करनी हो तो गिरजे के बड़े घण्टे को बजा देना।

काजानोक : अच्छी बात है। **(दरवाजे की ओर बढ़ जाता है)**

लीजा : जरा रुको... वह सभी जगह कोहराम मचा देगा!

आन्ना : काजानोक, ठहरो!

काजानोक : क्यों, अब क्या जो गया?

आन्ना : घण्टाघर पर चढ़कर गली की तरफ नजर रखना। हम स्त्योप्का को भेज देंगे। अगर वह छड़ी से इशारा करता है तो बड़े घण्टे को बजाना... ठहरो! और उसको लगातार न बजाना, धीरे-धीरे बजाना, जैसे सुबह की प्रार्थना के समय।

काजानोक : मुझे यह सिखाने की जरूरत नहीं है कि साथी लेनिन के लिए घण्टा कैसे बजाया जाये। **(चला जाता है)**

आन्ना (बच्चों को सम्बोधित करते हुए) : चलो, अलावघर पर चढ़ जाओ।

लीजा : इन्हें आप हटाना क्यों चाहती हैं?

आन्ना : इनकी शक्लें तो देखो! ऐसे मेहमान के सामने क्या हम इन्हें पेश कर सकते हैं? लो, इन चाभियों को ले लो और सन्दूक से एक मेजपोश निकाल लाओ. .. मेरावाला निकाल लेना, झालरदार...

लीजा : आप कितनी परेशान हैं! घबड़ाइये नहीं।

आन्ना : मेजपोश ले आओ। मेज कैसी उघारी पड़ी है!

(लीजा चली जाती है)

आन्ना (बच्चों से) : और तुम चलो, अलावघर के ऊपर बैठ जाओ!

स्त्योप्का : अच्छा, दादी...

आन्ना : चलो, चलो, ऊपर चढ़ो! और न तुम वहाँ से झाँकोगे, न हँसोगे, न और कोई शरारत ही करोगे... समझे?

स्त्योप्का : दादी, जब वह हमारी तरफ न देख रहे हों—क्या हम उन्हें झाँक सकते हैं?

(लीजा वापिस आ जाती है)

आन्ना : मैं तुम्हें दिखा दूँगी तुम्हारी पीठ पर पट्टा बाँधकर!

लीजा : मैं चाहती थी कि इन्हें साफ कमीजें पहना दूँ, लेकिन घर में एक भी कमीज ऐसी नहीं है जो किसी काम की हो।

आन्ना : लीजा, वहाँ खड़ी-खड़ी क्या कर रही हो? क्या देव-प्रतिमा को ढक दिया जाये? वैसे पाखण्डी बनने की जरूरत ही क्या है?

लीजा (दरवाजे से वापिस लौटती हुई) : वे लोग आ रहे हैं!

आन्ना : कौन?

लीजा : लेनिन और पापा।

आन्ना : और कोई नहीं?

लीजा : नहीं।

आन्ना : तो हमारे गाँववालों ने उन्हें पहचाना नहीं। तुम दरवाजे पर खड़ी रहना जिससे कि ज्यों ही वे लोग आयें उन्हें चाय वगैरा दी जा सके। और सिर पर एक रूमाल बाँध लो!

(लेनिन और चुदनोव अन्दर आते हैं)

चुदनोव (लेनिन को सम्बोधित करते हुए) : यह मेरी बुढ़िया है, आन्ना व्लास्येवना।

लेनिन : नमस्ते।

चुदनोव : यह मेरी बहू, लीजा है।

लेनिन : सुप्रभात।

आन्ना : शिकार कैसा रहा?

लेनिन : कुछ नहीं मिला। हम कुछ वैसे ही शिकारी हैं जिन्हें एक सेर वजन की चिड़िया मारने के लिए सेर भर बारूद की जरूरत होती है।

चुदनोव : अपने को इतना कच्चा न बताइये। आज का कुहरा भी कितना भयंकर था! ऐसा कुहरा मैंने पहले कभी नहीं देखा... उसने पूरी झील को एक कम्बल की तरह ढक दिया था।

लेनिन (दरवाजे के पास कोट उतारते समय अचानक उनकी नजर अलावघर पर बैठे बच्चों पर पड़ती है) : यह पैर किसका है?

आन्ना : ओह, ये पाजी बच्चे मेरी नाक कटाकर ही रहेंगे!

लेनिन : कौन है? बच्चो तुम! बाहर निकल आओ! अरे, तुम तो दो हो! दोनों बाहर आ जाओ!

स्त्योप्का : क्यों दादी? हम बाहर आ जायें?

आन्ना : अब रह ही क्या गया... **(लेनिन से)** ये गन्दे बच्चे हैं।

लेनिन : कोई बात नहीं। **(स्त्योप्का से)** तुम्हारा नाम क्या है?

स्त्योप्का : स्त्योप्का।

लेनिन (मारूस्या से) : और तुम्हारा?

स्त्योप्का : यह मारूस्या है।

लेनिन (स्त्योप्का से) : उसकी तरफ से तुम क्यों जवाब देते हो?

स्त्योप्का : वह डरती है। वह भीगी बिल्ली है।

लेनिन : क्या तुम मुझसे डरती हो?

मारूस्या (तेजी से) : नहीं।

लेनिन : फिर छिपी क्यों थी?

स्त्योप्का : जिससे कि लेनिन हमें देख न सकें।

लेनिन : सचमुच? अच्छा, तो अब लेनिन यहाँ आ गया।

स्त्योप्का : कहाँ?

लेनिन : यहाँ।

स्त्योप्का : नहीं... आप लेनिन नहीं हैं।

लेनिन : नहीं? फिर कौन?

मारूस्या : कोई अजनबी... हमारे घर का मेहमान।

स्त्योप्का : लेकिन आप लेनिन तो लगते नहीं।

लेनिन : क्यों, वह कैसे लगते हैं?

स्त्योप्का : उनकी तस्वीर देख लीजिये, आप खुद समझ जायेंगे।

लेनिन (अपनी तस्वीर के पास जाकर उसे देखते हैं) : यह थुलथुल आदमी तो लेनिन से बिल्कुल नहीं मिलता।

स्त्योप्का (व्यंग से) : और आप शायद मिलते हैं?

लेनिन : मैं निश्चय ही उनसे मिलता हूँ!

आन्ना : स्त्योप्का!

लेनिन : नहीं, नहीं, कृपया हमारी बातचीत के बीच न आइये। **(स्त्योप्का से)** मैं बिल्कुल लेनिन की तरह हूँ, तुमसे सच कहता हूँ।

स्त्योप्का : बिल्कुल नहीं। जरा भी नहीं। वहाँ जो तस्वीर लगी है वही उनकी असली तस्वीर है, वर्ना लोग उसे मशीन से न छापते।

लेनिन : नहीं, असली मैं हूँ, वह नहीं।

स्त्योप्का : जी नहीं, असली वही हैं।

लेनिन : नहीं, असली मैं हूँ।

स्त्योप्का : अच्छा, शर्त लगा लें।

लेनिन : लगा लो।

स्त्योप्का : क्या शर्त आप लगायेंगे?

लेनिन : जो भी तुम कहो।

स्त्योप्का : चीनी का एक टुकड़ा।

लेनिन (अपनी टोपी उतार लेते हैं) : अब बताओ? कौन असली है?

(स्त्योप्का पहने लेनिन को घूर-घूरकर देखता है फिर उनकी तस्वीर को। धीरे-धीरे पीछे हटकर वह घरवालों के पास चला जाता है। मारूस्या की आँखें आश्चर्य से खुली की खुली रह जाती हैं)

और अब? **(फिर टोपी लगा लेते हैं)**

मारूस्या : अब फिर आप उनकी तरह नहीं लगते।

लेनिन (टोपी उतारते हुए) : अब?

स्त्योप्का : सचमुच, असली लेनिन! अब इन्हें देने के लिए मैं चीनी कहाँ से लाऊँगा? **(अचानक, दृढ़ता से)** दादी, मैं घण्टाघर जा रहा हूँ! **(भाग जाता है)**

लेनिन : घण्टाघर क्यों?

आन्ना : वह पूरा बदमाश है।

लेनिन : वह बहुत होशियार और तेज लड़का है।

चुदनोव : शरारती है।

लेनिन : इसकी उम्र का जब मैं था तो शायद मैं भी तेज और शरारती था। लड़के एक पहेली होते हैं। समस्या यह है कि अभी तक हम यह नहीं जानते कि उन्हें कैसे सम्भाला जाये। बहुत-सी ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम अभी तक नहीं जानते। अब हमें बहुत सी बातें सीखनी होंगी। हमें इसका अधिकार नहीं है कि हम अज्ञानी बने रहें... **(सामने किसी चीज की बनी एक बत्ती पर उनकी नजर पड़ती है)** बत्ती, लैम्प की पुरानी असली बत्ती?

चुदनोव : आप इसके बारे में जानते हैं? आप जानते हैं कि यह कैसे काम करती है?

लेनिन : हाँ, मैं अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन क्या तुम्हारे पास रोशनी के लिए बस यही चीज है?

चुदनोव : मिट्टी का तेल कहीं मिलता नहीं।

आन्ना : यह आवाज बहुत करती है। अँधेरे में रहने से तो बेहतर है।

लेनिन : हाँ, इसमें क्या शक!

(रोमान प्रवेश करता है। वह आधे बोरे में कुछ लिये है। साफ है कि वह कोई भारी चीज नहीं है। उसे यह ख्याल नहीं था कि लेनिन पहले ही उसके घर पहुँच जायेंगे)

चुदनोव : यह मेरा लड़का है, रोमान। स्थानीय सोवियत का सभापति और हाँ... खैर।

लेनिन : नमस्ते, सभापति जी। अगर मेरा पूछना बेजा न समझें तो बतायें कि इस बोरे में क्या है।

रोमान : नाटक का कुछ सामान है।

लेनिन : यह मजेदार चीज है। क्या एक नजर मैं भी देख सकता हूँ।

रोमान (हिचकिचाते हुए) : हाँ।

लेनिन (उसे अपनी उँगुलियों पर वे घुमाते हैं और फिर ऊपर-बाहर टटोलते हैं) : सिल्क का है... बहुत सुन्दर। इसका अर्थ हुआ कि यहाँ तुम्हारे पास थियेटर है?

रोमान : सर्वहारा सांस्कृतिक केन्द्र।

लेनिन : सर्वहारा सांस्कृतिक केन्द्र? यह क्या है?

रोमान : मैं खुद पक्की तरह नहीं जानता। वह सर्वहारा संस्कृति का एक प्रकार का केन्द्र है।

लेनिन : इस टोप को तुम कहाँ से ले आये?

रोमान : मास्को से। इसे हमने सुखारेव्का के बाजार में खरीदा था।

लेनिन : इसे कौन पहनेगा?

रोमान : मैं।

लेनिन : तुम किसका पार्ट कर रहे हो?

रोमान : एक बैंकपति का।

लेनिन : बैंकपति का? क्या उसका पार्ट मुश्किल है?

रोमान : नहीं।

लेनिन : मैं कभी नहीं निभा पाता।

चुदनोव (उत्तेजना से) : डूब मरने की बात है, व्लादीमिर इल्यीच, डूब मरने की!

लेनिन : क्यों, इसमें गलत क्या है?

चुदनोव : देखिये, यह सेना से घर वापिस आया है—अन्य तमाम लोगों की तरह भला-चंगा। अचानक यह अभिनय शुरू कर देता है! जरा सोचिये तो कई बच्चों का बाप—और अभिनेता!

लेनिन : लेकिन अभिनय तो एक बहुत अच्छी चीज है। मैं बैंकपति का पार्ट कभी नहीं कर सकता, लेकिन यह उसे कर सकता है। साथी चुदनोव, तुम और मैं बहुत पुराने ख्याल के हो गये!

चुदनोव : हुँह... यह तो नहीं कहा जा सकता...

(दौड़ता हुआ काजानोक आ जाता है)

काजानोक : पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर...

लेनिन : क्या?

काजानोक : अरे, मैं कह क्या रहा हूँ... मेरा नाम पन्तेलेई काजानोक है। घण्टा बजाता हूँ और फायरमैन का काम भी सम्भालता हूँ। आपको याद नहीं, पिछले जाड़ों में आपके साथ स्कीइंग के लिये जंगल गया था?

लेनिन : हाँ, हाँ! मुझे अच्छी तरह याद है।

काजानोक : उन्हें याद है... बस, मैं तो आपको यही बताना चाहता था कि मैं अब भी यहीं हूँ, मजे में हूँ, और काम कर रहा हूँ... **(दूसरों की ओर देखते हुए)** तुम लोग चिन्ता न करो, मैं अपने काम पर पहुँच जाऊँगा। **(लेनिन से)** हम खुश हैं... सारी जनता खुश है! अब मैं उस घण्टे को बजाने जा रहा हूँ। उसे खूब जोर से बजाऊँगा। यह रहा मैं—काजानोक जो कुछ अन्दर है वही बाहर। अच्छा, अब मुझे अपने अड्डे पर पहुँचना चाहिए। **(तेजी से बाहर चला जाता है)**

लेनिन : क्यों, वह दौड़ता हुआ क्यों जा रहा है?

आन्ना : वह सीधा-सादा आदमी है... लगाव-बनाव उसे नहीं आता...

रोमान : व्लादीमिर इल्यीच... साथी लेनिन, मैं आपसे एक मीटिंग में बोलने की दरख्वास्त करना चाहता हूँ। साथ ही सर्वहारा सांस्कृतिक केन्द्र में हम लोग आपको चाय पर आमन्त्रित करना चाहते हैं।

आन्ना : नहीं, नहीं व्लादीमिर इल्यीच, इन लोगों के यहाँ चाय-वाय पीने आप मत जाइयेगा। इनके पास ठिकाने का एक समोवार तक तो है नहीं!

लेनिन : अच्छा, अगर सर्वहारा सांस्कृतिक केन्द्र हम लोग नहीं जाते, तो यहाँ

चाय मिलेगी? मुझे यहीं बना रहने दो। और मीटिंग भी न करो तो और भी अच्छा होगा।

(रिबाकोव तेजी से आता है)

रिबाकोव : देखा, मैं ले आया! तीन-तीन चिड़ियों को मार लाया! **(बँधी हुई जंगली मुर्गाबियों को दिखाता है)** मैं हवा का इन्तजार कर रहा था। उसने मेरा साथ दिया... ज्यों ही वह चली कोहरा फट गया और मैंने इन तीन मुर्गाबियों को मार गिराया! **(चुदनोव से)** कहो कैसा रहा!

लेनिन **(अफसोस से)** : साथी चुदनोव...

चुदनोव : गलती मेरी है, व्लादीमिर इल्यीच...

लेनिन : मुर्गाबियाँ... असली जंगली मुर्गाबियाँ! हम वहाँ बैठे-बैठे कुहरे, बुरे मौसम ओर दूसरी प्राकृतिक विपदाओं के सम्बन्ध में फिलासफी झाड़ते रहे और यह गया और उन्हें मार भी लाया!

आन्ना : छिः, तुम, जंगल के रक्षक! तुम्हें शर्म आनी चाहिए...

चुदनोव : मैं सचमुच शर्मिन्दा हूँ! लेकिन, व्यादीमिर इल्यीच, जहाँ तक मैंने समझा था, इस बार आपकी शिकार में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी।

लेनिन (आश्चर्य से) : ऐं?

चुदनोव : मुझे तो सचमुच ऐसा ही लगा था।

लेनिन : सच? शायद तुम ठीक कह रहे हो, साथी चुदनोव। आज मैंने शिकारी की तरह व्यवहार नहीं किया, लेकिन... **(रुक जाते हैं)** लेकिन, रिबाकोव, तुम खुशी मना सकते हो। और हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यह कोई अनुभवी शिकारी नहीं है, यह तो सिर्फ एक जहाजी है।

रिबाकोव : लगता है कि मैंने सबको परेशानी में डाल दिया?

लेनिन : इसमें क्या शक! ऐसा कौन शिकारी होगा जो इस सब को देखकर परेशान न हो उठे? तुमने हवा का रुख बदलने का इन्तजार किया और तमाम पुराने शिकारियों को पराजित कर दिया। साथी चुदनोव, देखो तो, कितनी अच्छी मुर्गाबियाँ हैं! इन्हें ऐसी जगह रख दो जहाँ बिल्ली न पहुँच सके।

(घण्टे की आवाज आकाश में दूर-दूर तक गूँज उठती है)

खतरे का घण्टा?

आन्ना : नहीं, काजानोक घण्टा बजा रहा है। वह इशारे का इन्तजार नहीं कर पाया।

चुदनोव : बड़ा शैतान है!

रोमान (खिड़की से बाहर देखते हुए) : बहरहाल, अब तो उसने सबको बुला ही लिया। देखो, पूरा गाँव बाहर निकलता चला आ रहा है।

लेनिन : तब तो शायद हमें भी चलना चाहिए। ओह, घण्टा बजानेवाले, तुम तो सारी दुनिया को बता दोगे कि मैं यहाँ हूँ! मगर किया क्या जाये! घण्टा बजाने वाला तो घण्टा बजायेगा ही। साथी चुदनोव! (दरवाजे पर रुक जाते हैं)

चुदनोव : जी?

लेनिन : उन बोल्शेविकों को एक क्षण भी कभी चैन नहीं मिलता, है न?

चुदनोव : कभी नहीं, ब्लादीमिर इल्यीच।

लेनिन : यह कोई नहीं कह सकता कि अगले ही क्षण वे ओर क्या सोच निकालेंगे।

चुदनोव : आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं।

लेनिन : हमारी मजबूरी है, साथी चुदनोव। ऐसा न करें तो खत्म हो जायें, वे हमें जिन्दा ही खा जायें। चलो, साथियो, वर्ना वह घण्टा बजा-बजाकर जमीन आसमान एक कर देगा।

(घण्टे के बजने की जोर-जोर से आवाज आती है)

दृश्य 5

(क्रेमलिन की ऊँची चहारदीवारी और उसके बगल की चौड़ी सड़क। रात्रि की निस्तब्धता। मद्धिम रोशनी की लालटेनें लगी हुई हैं। एक पेड़ के नीचे रिबाकोव एक बेंच पर बैठा है। थोड़ी देर वह धीरे-धीरे सीटी बजाता है, फिर गुनगुनाने लगता है)

रिबाकोव (गाता हुआ) :

हर दरख्त पर चिड़िया गुनगुना रही हैं।
उनके उल्लासमय संगीत से
दिशाएँ मुखर हैं;
चारों ओर बसन्त का आह्लाद

हिलोरें ले रहा है–
पर यह सब मेरे लिए नहीं
है, मेरे लिए नहीं है...

(ख्यालों में खोया रहता है, फिर उठ खड़ा होता है) अगर मैं मंगल को ढूँढ़ निकालूँ... तो हाँ, अगर नहीं... तो नहीं। (आकाश में चारों तरफ नजर दौड़ाता है, धीरे-धीरे गुनगुनाता जाता है)

(एक भिखारिन पास आ जाती है)

भिखारिन : नौजवान, एक गरीब बीमार बूढ़ी को एक सिगरेट दे सकते हो?

रिबाकोव : लो, शौक करो।

भिखारिन : शुक्रिया, नौजवान। (चली जाती है)

(लेनिन आते हैं। वह रिबाकोव को पहचान लेते हैं)

रिबाकोव : ब्लादीमिर इल्यीच?

लेनिन : साशा रिबाकोव, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

रिबाकोव (चौंककर) : आप अकेले हैं? आपके अंगरक्षक कहाँ हैं?

लेनिन : मैं उनसे बचकर निकल आया हूँ।

रिबाकोव : आप कामयाब कैसे हो गये?

लेनिन : नहीं, नहीं, यह तुम्हें नहीं बताऊँगा। रहस्य की बात है। मैं एक बड़ी लम्बी मीटिंग में बैठा था और अब खुली हवा में जरा सांस लेने खिसक आया हूँ। लेकिन अपनी घड़ी मैं मेज पर ही भूल आया हूँ। हाँ, मेरा यहाँ आना तो एक तरह से उचित है, लेकिन तुम यहाँ कैसे? आधी रात को तुम अकेले यहाँ क्या कर रहे हो? तारे गिन रहे हो क्या?

रिबाकोव : इन्कार नहीं करूँगा।

लेनिन : साथी रिबाकोव, क्या तुम प्रेमजाल में फँस गये हो?

रिबाकोव : जी।

लेनिन : अच्छा आओ, मेरे साथ टहलने चलो। (दोनों साथ-साथ टहलने लगते हैं) वास्तव में हम बड़े कठिन दौर से गुजर रहे हैं। यह समय ऐसा निर्मम है कि इसमें प्रेम की कोई गुंजाइश ही नहीं। लेकिन तुम परेशान न हो... तुम प्रेम में पड़

ही गये हो तो उसे अब छोड़ना नहीं। मैं तुम्हें सिर्फ एक सलाह दूँगा : नये-नये तरीकों के चक्कर में तुम न पड़ना। पुराने तौर-तरीकों पर ही अमल करना। इन नये सम्बन्धों के बारे में मैंने बहुत कुछ सुना है। उनके फलस्वरूप अब तक केवल घृणित उच्छृंखलता ही देखने में आयी है।

रिबाकोव : जी, मैं जानता हूँ।

लेनिन (अचानक रुक जाते हैं और रिबाकोव का हाथ पकड़कर स्नेह से कहते हैं) : प्रेम करना अच्छा होता है, है न? आदमी को कितना अद्‌भुत लगता है!

रिबाकोव : हाँ, व्लादीमिर इल्यीच, बहुत अद्‌भुत।

(लेनिन और रिबाकोव चले जाते हैं। ठेले को ढकेलते हुए ट्राम के तीन मजदूर सामने आते हैं। उनमें से एक के दाढ़ी हैं, एक नया अपरेन्टिस है और तीसरा एक पुराना मजदूर है)

पुराना मजदूर : जरा टार्च तो जलाओ, देखें क्या है। ठीक है, बढ़ते चलो।

अपरेन्टिस : तुमने देखा? वह लेनिन हैं।

दाढ़ीवाला मजदूर : हमारे भी आँखें हैं। जबान को बन्द रखना सीखो। बड़े होशियार बनते हो।

(लेनिन और रिबाकोव सामने आ जाते हैं)

लेनिन : साथियो, आप लोग क्या हमें टाइम बतला सकते हैं?

पुराना मजदूर (अपरेन्टिस से) : टार्च जलाओ। **(जेब से चेनवाली घड़ी निकालता है)** सवा दो।

लेनिन : शुक्रिया।

पुराना मजूदर : पहले क्रेमलिन की घड़ी घण्टे बजाया करती थी। अब वह खामोश है।

लेनिन : हाँ, और यह बहुत बुरी बात है। क्रेमलिन की घड़ी को कभी खामोश नहीं होना चाहिए। साशा, किसी अच्छे घड़ीसाज को ढूँढ़ो—ऐसा आदमी हो जो पुरानी घड़ियों को ठीक कर सकता हो।

रिबाकोव : मैं ढूँढ़ लाऊँगा, व्लादीमिर इल्यीच।

लेनिन : काम इतना आसान नहीं है। कई लोग उसे ठीक करने की कोशिश कर चुके हैं, पर आखिर में हार कर बैठ गये।

रिबाकोव : कोई न कोई जरूर ऐसा होगा जो उसे ठीक कर सकता है।

दाढ़ीवाला मजदूर : साथी लेनिन, इतनी जल्दी न जाइये। कुछ मिनट मजदूरों

के साथ भी बिता लीजिये।

पुराना मजदूर : मैं आपको बता दूँ, यह आदमी भारी हँसोड़ है।

लेनिन : अब भी हँसी-ठट्ठा करने का जी करता है?

दाढ़ीवाला मजदूर : क्यों नहीं? पूँजीवाद को हमने कुचल दिया है कि नहीं?

लेनिन : लेकिन पूँजीवाद को कुचलने मात्र से इनसान का पेट नहीं भर जाता।

दाढ़ीवाला मजदूर : अब हम समाजवाद की रचना शुरू करेंगे।

लेनिन : जानते हो वह कैसे की जाती है?

दाढ़ीवाला मजदूर : दुनिया में भले लोगों की कमी नहीं। कोई न कोई हमें बतला ही देगा।

लेनिन : भले लोग तो बहुत हैं, लेकिन मैं तुम्हें उन सबका विश्वास करने की सलाह न दूँगा।

दाढ़ीवाला मजदूर : अरे नहीं, हम लोग चुन-चुनकर तय करेंगे। हम उन्हीं का विश्वास करेंगे जिन पर आप विश्वास करते हैं।

लेनिन : क्या तुम्हारा ख्याल है कि लोगों को पहचानने में लेनिन ने कभी गलती नहीं की? उन्होंने भी गलतियाँ की हैं।

दाढ़ीवाला मजदूर : खास चीज तो यह है कि लेनिन को चुनकर हमने कोई गलती नहीं की।

लेनिन : पूँजीवाद को खत्म कर देना समाजवाद का निर्माण करने से कहीं अधिक आसान है!

दाढ़ीवाला मजदूर : क्या यह सच है, व्लादीमिर इल्यीच?

लेनिन : इसकी कोशिश करने वाले हम ही सबसे पहले लोग हैं। ऐसा कोई नहीं है, जो हमें बता सके कि उसका निर्माण कैसे किया जाये। समस्या इसलिए और भी कठिन हो गयी है कि फिलहाल हम बिल्कुल दरिद्र हैं।

दाढ़ीवाला मजदूर : आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। हम लोग गरीब हो गये हैं।

लेनिन : निर्माण का सारा काम हमें खुद ही करना पड़ेगा... हमें मदद कोई नहीं देगा।

दाढ़ीवाला मजदूर : ऐसी कोई चीज नहीं है जिसे सोवियत सत्ता नहीं कर सकती। बाइबिल में कहा गया है कि बेबीलोन के लोग आसमान तक ऊँची एक मीनार बनाना चाहते थे। वे उसे न बना सके। क्यों? क्योंकि उनके अन्दर अलग-अलग बोलियों का गड़बड़झाला था—यही लिखा है। लेकिन अगर आप मुझसे पूछें तो मैं कहूँगा कि उनके पास सोवियत सत्ता नहीं थी।

लेनिन : तुमने बात बहुत बढ़िया कही।

दाढ़ीवाला मजदूर : मैं हँसी नहीं कर रहा हूँ, व्लादीमिर इल्यीच! सोवियत सत्ता जो भी चाहे कर सकती है।

लेनिन : तुम्हारे इतने पक्के भरोसे का क्या आधार है?

दाढ़ीवाला मजदूर : मैं आपको एक बात बतलाऊँ। आप बहुत जल्दी में तो नहीं हैं?

लेनिन : नहीं। आओ, बैठ जाओ।

दाढ़ीवाला मजदूर : आप हम तीन आदमियों को देखते हैं। हम मास्को ट्राम के मजदूर हैं। रात की पाली में काम करते हैं। पक्के कामगार हैं। न साधु हैं, न शैतान... मामूली आदमी हैं। फिर बताइये, रोटी के एक सूखे टुकड़े के लिए हम और किस सत्ता के नीचे सारी रात काम कर सकते थे? **(जेब से रोटी का टुकड़ा बाहर निकालता है)** किसी भी दूसरी सत्ता के नीचे नहीं। अगर हम थकान से गिर जाते हैं, थोड़ी देर तक पड़े रहते हैं, फिर उठ खड़े होते हैं और फिर काम में जुट जाते हैं। सोवियत सत्ता की शक्ति पर इसीलिए मुझे इतना भरोसा है।

पुराना मजदूर : साथी लेनिन को अब हमने काफी तंग कर लिया, न? मेरा ख्याल है कि अब हम चलें। अभी बहुत काम बाकी है।

दाढ़ीवाला मजदूर : इतनी लम्बी बात के लिऐ माफ कीजियेगा। हमें बात करना नहीं आता।

पुराना मजदूर : शुभ-रात्रि, साथी लेनिन।

लेनिन : शुभ-रात्रि।

(मजदूर चले जाते हैं)

साथी रिबाकोव, मामूली रूसी आदमी जैसा दूसरा कोई प्राणी नहीं। जब तुम मेरी उम्र के हो जाओगे तभी तुम उसकी खूबियों को वास्तव में समझ सकोगे। तोलस्तोय ने अगर तोलस्तोयवाद का अविष्कार करके मजा किरकिरा न कर दिया होता तो, मैं तुमसे कहता हूँ, रूसियों का जैसा चित्रण उन्होंने किया है दूसरा कोई नहीं कर सकता। लेकिन उन्हें मजदूरों के बारे में कोई समझदारी नहीं थी। घर वापिस जाने की मेरी तबीयत नहीं हो रही है। तुम तो प्रेम में पड़े हुए हो... पर मुझे क्या हो गया है? तुम्हारा क्या ख्याल है? अच्छा, मैं तुम्हें अपना एक गुप्त भेद बताऊँगा। कभी-कभी मुझे स्वप्न देखना अच्छा लगता है... अनदेखी, अनसुनी चीजों के बारे में सपने देखता हुआ मैं अकेला भटकता रहता हूँ। नहीं, आसमान तक ऊँची मीनार तो हम नहीं बनायेंगे, परन्तु अपने जैसे लोगों को लेकर हम बड़े-बड़े कामों को

करने का साहस जरूर कर सकते हैं, स्वप्न जरूर देख सकते हैं... (इर्द-गिर्द देखते हैं) किसी के आने की आहट मिल रही है...

रिबाकोव : कौन है?

(भिखारिन सामने आती है)

भिखारिन : मैं हूँ।

लेनिन : और क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुम कौन हो?

भिखारिन : एक भिखारिन। एक गरीब बूढ़ी की मदद करो।

लेनिन : साशा, तुम्हारी जेब में कुछ है?

रिबाकोव : एक कोपेक भी नहीं।

लेनिन : मेरे पास भी कुछ नहीं है। **(भिखारिन से)** माफ करो!

भिखारिन : जरा अपनी शक्त तो देखो! बढ़िया कोट डाटे हो... लेकिन हालत हम भिखारियों से भी बदतर है।

रिबाकोव : दादी माँ, अब तुम घर जाकर सो जाओ!

भिखारिन : मैं रात को नहीं सोती... यही तो मेरे काम करने का वक्त है। इस वक्त मैं चायखानों और रेलवे स्टेशनों के पास जाकर भीख माँगती हूँ।

लेनिन : तुम इसे काम कहती हो?

भिखारिन : मेरे काम में क्या बुराई है? जैसे दूसरे काम हैं वैसे ही यह भी। अब सब एक समान है... यहाँ तो हर आदमी कुत्ते की तरह भूखा फिर रहा है। अपने ही को ले लो। तुम मुझे दिमागी काम करने वाले आदमी लगते हो—क्या तुम्हें आज भरपेट खाना मिला था?

रिबाकोव : व्लादीमिर इल्यीच, चलिये हम लोग आगे चलें...

लेनिन (रिबाकोव से) : रुको! **(भिखारिन से)** क्रान्ति से पहले तुम क्या करती थीं?

भिखारिन : यही काम।

लेनिन : तब फिर तुम शिकायत किस चीज की कर रही हो? तुम्हारा तो कोई नुकसान हुआ नहीं।

भिखारिन : जी नहीं, जनाब! सबसे ज्यादा नुक्सान तो हमारे भिखारी वर्ग का ही हुआ है।

लेनिन : यह कैसे?

भिखारिन : क्रान्ति से पहले मैं दुनिया की रानी थी! उस समय मैं एक कमजोर दिमाग धार्मिक भिखारिन बना करती थी। मेरे पास बैंक में साढ़े तीन हजार सोने

के रूबल थे।

लेनिन : वह सब तुमने भीख माँगकर जमा किये थे?

भिखारिन : मेरे पक्के यजमान थे। उनमें से कोई भी धनी व्यापारी से नीचा ओहदा नहीं रखना था! लेकिन अब वह सब कहाँ है! अब हमें कौन कुछ देता है! लेनिन ने पूरे रूस को बर्बाद कर दिया। और लोग कहते हैं कि खुद भी वह क्रेमलिन में भूखा रहता है। खुद उसकी भी अच्छी जिन्दगी नहीं है, लेकिन दूसरों को भी मजा-मौज नहीं करने देता। अब तुम अपना रास्ता देखो, और मैं अपना काम! **(जाती है)**

लेनिन : इसके बारे में तुम क्या कहते हो, नौजवान?

रिबाकोव : बड़ी ढीठ बुढ़िया है!

लेनिन : खास बात यह नहीं कि वह कौन है। वह जो कुछ कहती है उसमें सचाई का एक अंश है। अगर अभी हम किसी उड़नेवाली मशीन पर चढ़कर उड़ें तो हम देखेंगे कि नीचे एक विशाल रेगिस्तान की तरह एक काला, प्रकाशहीन विस्तार है। रूस की कैसी भयानक दुर्गति हो गयी है! हमारे गाँव फिर उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दिनों की हालात में पहुँच गये हैं। रोशनी के लिए लकड़ी की शलाकाएँ जलायी जाती हैं। उराल के कारखानों में, उदाहरण के लिए ज्लातोऊस्त में, स्वचालित मशीनों की जगह लोगों को हाथ से काम करना पड़ता है। दोन क्षेत्र की कोयले की खानों में श्वेत गार्डों ने पानी भर दिया था। **(काफी देर तक खामोश रहने के बाद)** तुम्हें स्वप्न देखना अच्छा नहीं लगता, साथी रिबाकोव?

रिबाकोव (हकलाता हुआ सा) : मैं? स्वप्न देखना?

लेनिन : हर आदमी को स्वप्न देखना चाहिए... यह एकदम जरूरी है। लेकिन क्या एक बोल्शेविक को, एक मार्क्सवादी को भी स्वप्न देखने का अधिकार है? क्यों? मेरा ख्याल है कि इस अद्भुत चीज का अधिकार उसको भी है। अगर पार्टी के, अपने देशवासियों के नये कामों को वह आगे बढ़ाना चाहता है तो उसे जरूर स्वप्न देखना चाहिए... एक चीज और है, साशा रिबाकोव, तुम्हारा स्वप्न अगर वास्तविकता से बहुत दूर की चीज लगता है तो तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए। अगर तुम सचमुच उसमें विश्वास करते हो तो तुम्हें बिल्कुल चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जीवन का सूक्ष्म अध्ययन करो और बिना रुके, पूरे तन-मन से, अपने स्वप्न को साकार बनाने में जुट जाओ। बहुत पहले, इस शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में ही, हम लोगों ने अपनी पार्टी के अन्दर रूस के भविष्य के बारे में स्वप्न देखना और उसके विद्युतीकरण की योजनाएँ बनाना शुरू कर दिया था... आज हमें राशन कम कर देना पड़ा है, हर चीज में हमें किफायत करनी पड़ रही है; हम बुरी हालत में, बड़ी तकलीफ में रह रहे हैं; लेकिन रूस का विद्युतीकरण हम जरूर करेंगे।

उसके बिना फिलहाल कोई चारा नहीं। अगर हम ऐसा नहीं करते तो वे हमारे ऊपर फिर हावी हो जायेंगे, हमें कुचल देंगे और तब सौ साल तक हमें फिर शर्मनाक गुलामी और विदेशी उत्पीड़न भुगतान पड़ेगा। तुम्हारा क्या ख्याल है, साशा रिबाकोव, विद्युतीकरण में हम सफल हो जायेंगे न?

रिबाकोव : व्लादीमिर इल्यीच, आप तो हजारों मील दूर तक देख सकते हैं। मैं भला आपको क्या बतला सकता हूँ?

लेनिन : अपने जैसे लोगों को लेकर हम सब कुछ कर सकते हैं!

(पर्दा गिरता है)

दूसरा अंक

दृश्य 1

(प्रीचिस्टेन्स्की एवेन्यू, गोगोल की मूर्ति के समीप। एक बेंच पर एक बूढ़ी औरत बैठी है। उसकी बगल में एक बच्चागाड़ी खड़ी है)

बूढ़ी औरत : मेरा लाल, सो गया। सोओ, सोओ मेरे लाल! सो ले, मेरे मुन्ने! **(खुद भी ऊँघने लगती है)**

(रिबाकोव दौड़कर आता है। इधर-उधर देखने के बाद उसका चेहरा उतर जाता है)

रिबाकोव : चली गयी! **(जेब घड़ी निकालकर देखता है)** हाँ, गोगोल की मूर्ति तो है यहाँ, लेकिन मुझे पन्द्रह मिनट की देर हो गयी। उस जैसी लड़की के लिए बस इतना ही काफी है। सत्यानाश हो गया। **(तेजी से, बूढ़ी औरत से)** सुनो, आया!

बूढ़ी औरत (नाराजगी से) : नौजवान, तुमसे किसने कहा कि मैं आया हूँ?

रिबाकोव : माफ करना, मेरी नजर में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

बूढ़ी औरत : तुम्हारी नजर में न पड़ता हो, मेरी नजर में तो पड़ता है!

रिबाकोव : मैंने देखा कि यहाँ एक बच्चागाड़ी है, बच्चा है... मैं आपसे पूछना चाहता था कि...

बूढ़ी औरत : इतना शोर न करो। देखते नहीं, वह सो रहा है।

रिबाकोव : माफी चाहता हूँ। फिर ऐसा नहीं करूँगा। लेकिन कृपया मुझे यह बतायें कि मेरे आने से पहले क्या यहाँ कोई युवती इन्तजार कर रही थी?

बूढ़ी औरत : जाओ, अपना काम देखो। तुम क्या बकबक कर रहे हो, मुझे एक भी शब्द सुनाई नहीं पड़ता।

रिबाकोव (उसका हाथ पकड़कर) : मेरे ऊपर मेहरबानी करो! कृपया इतना बता दें!

बूढ़ी औरत : तुम मुझे घसीटकर कहाँ ले जा रहे हो? मैं शोर मचा दूँगी!

रिबाकोव (उसे बच्चागाड़ी से दूर ले जाते हुए) : शोर मचाने से तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। मैं गुप्तचर हूँ। मुझे ठीक-ठीक जवाब दो : थोड़ी देर पहले उस मूर्ति के पास क्या तुमने किसी युवती को देखा था?

बूढ़ी औरत : युवती को? हाँ, हाँ... एक लड़की थी यहाँ। मेरे बगल में बैठी हुई मेरे नाती की तारीफ कर रही थी।

रिबाकोव : वह कैसी थी? देखने में बहुत अच्छी? दरअसल, बहुत सुन्दर? काले दस्ताने पहने थी?

बूढ़ी औरत : हाँ, हाँ, ठीक ऐसी ही थी! काले दास्ताने पहने थी।

रिबाकोव : उसे गये कितनी देर हुई?

बूढ़ी औरत : अभी-अभी, मुश्किल से एक मिनट बीता होगा।

रिबाकोव : किस तरफ गयी?

बूढ़ी औरत : उस रास्ते।

रिबाकोव : अगर वह मुझे मिल गयी तो सारी जिन्दगी मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा! धन्यवाद! **(दौड़ता हुआ जाता है)**

बूढ़ी औरत (परेशानी की हालत में) : गुप्तचर! कैसा गुप्तचर? मेरी समझ में तो कोई बावला है! घबराहट में मैंने बेचारी का पता बता दिया। कैसा भयानक आदमी था! गिद्ध की तरह मेरे ऊपर झपट पड़ा! **(मन ही मन में वह ईश्वर की प्रार्थना करती है, अपनी छाती पर हाथ से सलीब का निशान बनाती है और फिर बैठ जाती है। रिबाकोव की दिशा में देखने लगती है)** उसने उसे पकड़ लिया... वह उसे यहाँ ले आ रहा है... मैं यहाँ से खिसक जाऊँ, यही ठीक होगा.

... भगवान हमारी रक्षा करे! **(बच्चागाड़ी को चलाती हुई वहाँ से चली जाती है)**

(माशा तथा रिबाकोव आते हैं)

रिबाकोव : हाँ, मुझे देर हो गयी थी, लेकिन कम से कम यह तो देखो कि दौड़ते-दौड़ते मेरी क्या हालत हो गयी है। मुझे देखकर एक बूढ़ी औरत यहाँ इतना डर गयी थी कि वह मर ही जाती।

माशा : बस, बस, रिबाकोव! मैं तुम्हारी चालें जानती हूँ। तुम्हारा यह साइक्लोप* जैसा ढंग कुछ दिनों के बाद बोर करने लगता है। **(बैठ जाती है)**

रिबाकोव : साइक्लोप जैसा! अच्छी बात है, साइक्लोप ही सही। और तुम क्या हो?

माशा : मैं सचमुच सोच नहीं पाती कि तुम मुझे किस रूप में देखते हो। मैं इसके बारे में अक्सर सोचती हूँ। घर पर जब से उन्हें तुम्हारे बारे में पता चल गया है मैं जैसे बेघर हो गयी हूँ। मेरी समझ में नहीं आता क्या करूँ। हो सकता है तुम मेरी बात का गलत मतलब लगा लो, लेकिन मैं तुमसे सच कहती हूँ कि मैं आशा और निराशा के बीच निरन्तर हिचकोले खाती रहती हूँ। मुझे आशा थी कि तुम मेरी कुछ मदद करोगे। कल रात मैं एक क्षण भी न सो सकी। लेकिन तुम्हें क्या, तुम्हारे लिए सब बराबर है! जैसे कि किसी युवती से मुलाकात का कोई महत्व ही नहीं है! और वह युवती भी खूब ही है : मिलने की बात खुद ही तय करती है। प्रतीक्षा में बीते उन पन्द्रह मिनटों में ही इस मूर्ति से मैं नफरत करने लग गयी थी। मालूम होता था, मेरा मजाक उड़ाने के लिए ही उसे यहाँ लगाया गया था।

रिबाकोव : माशा, तुम तो मुझे मुँह खोलने भी नहीं देतीं, मेरी भी तो सुनो।

माशा : मेरे इतना बोलने पर भी तो तुम कुछ नहीं समझते।

रिबाकोव : मैं इतना बड़ा मूर्ख हूँ तो मुझसे बात करने से क्या फायदा!

माशा : फिर आज तुमने आने में यह गड़बड़ी कैसे कर दी?!

रिबाकोव : लेकिन मैं आ तो गया!

माशा : काश, तुम समझ पाते कि आज का दिन कोई मामूली दिन नहीं है। आज तुम्हें मेरे पिता जी से मिलना है। तुम्हें कोई अन्दाज नहीं कि इसका मतलब क्या होता है। वह बहुत ही टेढ़े आदमी हैं। उनके दिमाग में आ जाये तो वह तुम्हें घर से निकाल दें--और तब? तब हमारा सब किया-कराया चौपट हो जायेगा।

रिबाकोव : तब तो मैं जाऊँगा ही नहीं।

---

* यूनान के पैराणिक साहित्य का एक विशाल दानव जिसके माथे पर एक आँख होती थी।

माशा : क्या!

रिबाकोव : मैं नहीं जाऊँगा, और क्या!

माशा : तुम क्या कह रहे हो? तुम भी सचमुच खूब हो! तुम्हें किसी चीज का खौफ नहीं मालूम होता। हर चीज तुम्हें इतनी आसान, इतनी हल्की-फुल्की लगती है! तुम्हें कोई चीज परेशान नहीं करती। सच बात यह है कि अभी तक अपने पिता के बारे में तुम्हें मैंने सब कुछ बताया नहीं। वह सिर्फ चिढ़ की वजह से दियासलाइयाँ बेचते घूमते हैं। सिर्फ यह दिखाने के लिए कि देखो! इंजीनियर ज़बेलिन मास्को की सड़कों पर दियासलाइयाँ बेचता घूमता है!!

रिबाकोव : सचमुच विचित्र प्राणी हैं!

माशा : हाँ, लेकिन वह मेरे पिता हैं और उन्हें प्यार करती हूँ। और अगर तुम भी उन्हें अच्छी तरह जानते होते तो तुम भी उनसे प्यार करते।

रिबाकोव : फिर क्या? चलो, हम दोनों उन्हें प्यार करें और उनका हृदय जीत लें।

माशा : यही तो कठिन चीज है—उनको प्रभावित करना बहुत मुश्किल है। मैंने क्या कहा—प्रभावित करना?! अन्देशा यह है कि वह तुम्हें दुत्कार दें, तुम्हारा अपमान करें, और खुदा जाने और क्या-क्या करें। मैं सोच रही थी कि तुम नहीं आये तो अच्छा ही हुआ, शायद किस्मत यही चाहती थी।

रिबाकोव : तीन दिनों से मैं एक घड़ीसाज की तलाश में पागल की तरह घूम रहा हूँ।

माशा : कैसा बढ़िया बहाना है! इससे बेहतर बहाना नहीं सोच सके? तुम्हें सिर्फ अपनी घड़ी बनवाने की फिक्र थी!

रिबाकोव : बिल्कुल ठीक कहती हो, मुझे सिर्फ उसी की फिक्र थी...

माशा : धन्यवाद!

रिबाकोव : माशा, अब गुस्सा खत्म करो। तुम्हें मालूम होता कि मैं कैसे यहाँ आया हूँ तो शायद तुम ऐसी बातें न करतीं। आज हर तरफ गड़बड़ ही थी। मैं एक ट्राम पर बैठा—वह रुक गयी। क्यों? क्योंकि बिजली नहीं थी। मैं कूदकर एक लारी पर बैठ गया—वह उल्टी दिशा में चली गयी!! मैंने एक बग्घी पकड़ी, हम कुछ ही दूर गये होंगे कि एक सीटी ने हमें रोक दिया। आखिर बात क्या है? गाड़ीवान के पास लाइसेन्स नहीं था। उसने प. वि. में रजिस्टर नहीं कराया था!

माशा : "प. वि."? यह क्या बला है?

रिबाकोव : प. वि. का मतलब है परिवहन विभाग। असल बात यह है, माशा, कि मुझे एक महत्वपूर्ण काम दिया गया है। मुझसे कहा गया है कि क्रेमलिन की

घण्टियों की मरम्मत के लिए एक होशियार घड़ीसाज ढूँढ़ लाऊँ।

माशा : रिबाकोव, तुमसे पार पाना बड़ा मुश्किल है। मुझे मालूम कैसे होता कि तुम क्या कर रहे हो? तुम समझते थे कि सारी दुनिया को मालूम होगा कि तुम कहाँ हो?

रिबाकोव : देखा, तुम्हें मालूम कुछ नहीं था और फिर भी तुम मेरे ऊपर नाराज थीं। खुद देख लो कि तुम कितनी बेइन्साफ हो!

माशा : अच्छा, अच्छा। फिर घड़ीसाज तुम्हें मिल गया?

रिबाकोव : हाँ। लेकिन उसे ढूँढ़ने में मुझे कितनी दिक्कत हुई, इसका तुम्हें अन्दाज नहीं हो सकता! ज्यों ही किसी से कहता हूँ कि उसे किस घड़ी की मरम्मत करनी है, वह डर जाता है... सफेद दाढ़ीवाला एक आदमी था—उसकी उम्र मैथूसला* से कम न होगी। उसके सामने ज्यों ही मैंने क्रेमलिन का नाम लिया त्यों ही वह वहीं जमीन पर बैठ गया। अपना सिर पकड़कर बोला : "तुम चाहो तो मुझे गोली मार दो, वहाँ मैं नहीं जाऊँगा!" पुराने मास्को के कोने-कोने में मैंने तलाश मारा तब कहीं एक आदमी मिला। लेकिन आदमी बहुत बढ़िया है! लाखों में एक! आज वह क्रेमलिन जायेगा। पर मुझे फिक्र लगी हुई है, डर लग रहा है...

माशा : क्यों?

रिबाकोव : मैंने उसे यह नहीं बतलाया था कि उसे कौन-सी घड़ी बनानी है। वह समझता है कि उसे किसी मामूली घड़ी की मरम्मत करनी है, पर वह घड़ी जो घण्टाघर में, यानी टावर में है उसका वजन सैकड़ों सेर है... माशा, अगर तुम जानतीं कि पिछली रात मेरे साथ कैसी घटना घटी थी! जिस समय सारा मास्को निद्रा में लीन था उसी समय, आधी रात में, मैं इधर-उधर भटक रहा था। वहीं मेरी मुलाकात लेनिन से हो गयी। उनका दिमाग किस तरह काम करता है इसे मैं बिल्कुल नहीं समझ पाता। जब से उनसे बात हुई है तभी से जैसे बिना होश-हवास के मैं इधर-उधर दौड़ रहा हूँ। ऐसा लगता है कि मैं भी उस सुदूर भविष्य की एक झाँकी देख आया हूँ, जिसमें अभी तक कोई नहीं पहुँचा। साथ ही इस बात से मैं परेशान भी हूँ कि वास्तव में वहाँ मैं नहीं, बल्कि लेनिन हो आये हैं। अब मैं जान गया हूँ कि ऐसे भी लोग हैं जिन्हें कोई भी चीज कठिन नहीं लगती, किसी भी चीज से डर नहीं लगता, उनके लिए कुछ भी अकल्पनीय नहीं है, वे सब कुछ कर सकते हैं।

माशा : प्रिय साशा, तुमसे बात करने में कितनी शान्ति मिलती है! ऐसा क्यों होता है मैं खुद नहीं जानती, किन्तु जिस मुसीबत की मैं कल्पना कर रही थी, वह अन्तर्धान हो गयी! पर मैं आशा करती हूँ कि इतना तो तुम्हें याद होगा कि आज

* एक पौराणिक प्राणी जो 999 वर्ष तक जिन्दा रहा था।

शनिवार है और मेरे घर के लोग तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आयेंगे न?

रिबाकोव : जरूर!

माशा : और मान लो मेरे पिता तुम पर बिगड़ते हैं, तो तुम बुरा तो नहीं मान जाओगे?

रिबाकोव : हरगिज नहीं।

माशा : लेकिन जब मैं तुम पर बिगड़ी थी तब तो तुमने मुँह बना लिया था।

रिबाकोव : वह बात दूसरी है। तुम्हारे सामने में कुछ नहीं कह पाता...

माशा : सच?

रिबाकोव : माशा, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। हर रात तुम्हारे नाम में पत्र लिखता हूँ और फिर उन्हें फाड़ डालता हूँ!

माशा : फाड़ा मत करो, डाक से भेज दिया करो।

रिबाकोव : मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं प्रेम की बात सोचता हूँ और जानता हूँ कि तुम्हें मैं भरपूर प्यार करता हूँ। लेकिन मुझे यह नहीं मालूम कि इसे लिखा कैसे जाये। मेरे पास शब्द नहीं हैं।

माशा : बस, तुमने जितना कह दिया उतना ही काफी है। मैं तुम्हारी बात का विश्वास करती हूँ। इसके बाद फिर रह ही क्या जाता है? न जाने क्यों आज मुझे तुममें पहले से भी ज्यादा विश्वास की अनुभूति होती है। लेकिन अब मुझे जाना चाहिए।

रिबाकोव : मैं तुम्हें घर तक छोड़ आऊँ, माशा?

माशा : तुम्हें ले जा सकती तो मुझे भी कितना अच्छा लगता, लेकिन डर है कि कहीं मेरे पिता हम लोगों को न देख लें।

रिबाकोव : क्या सचमुच तुम्हारे पिता इतने खौफनाक हैं?

माशा : अब देर ही क्या है, तुम्हें खुद पता चल जायेगा। खैर, जो होना है वह तो होगा ही। मैं पहले से अपना दिमाग खराब नहीं करना चाहती। मेरा हाथ पकड़ लो।

रिबाकोव : धन्यवाद!

माशा (हँसती हुई) : नहीं, साशा। यह धन्यवाद-वन्यवाद की बातें तुम न करो—तुम जैसे हो वैसे ही बने रहो।

रिबाकोव : इससे अच्छा और क्या होगा! मैं जैसा हूँ हमेशा वैसा ही रहूँगा—इन बनावटी चीजों के बिना!

दृश्य 2

(ज़बेलिन परिवार का घर। शाम हो गयी है। अन्तोन इवानोविच का अध्ययन-कक्ष। इसका बहुत दिनों से कोई इस्तेमाल नहीं हुआ है। ज़बेलिन की पत्नी अपने मेहमानों की खातिरदारी में तल्लीन है। एक महिला है जो बुनाई कर रही है। उसका पति आशावादी है। एक दूसरी महिला है जो डरी हुई है। उसका पति संशयवादी है)

ज़बेलिना (बातचीत को जारी रखते हुए) : अन्तोन इवानोविच दिनोंदिन बिगड़ते जा रहे हैं। उनका रवैया अधिकाधिक असह्य होता जा रहा है। कुछ दिन पहले मैंने देखा था वह एक पादरी से लड़ रहे थे। और कल—यह सचमुच कितनी शर्म की बात है—वह हमारे एक परिचित से ही लड़ पड़े।

संशयवादी : घर पर या खुले आम?

ज़बेलिना : थियेटर के सामने, शाम सात बजे।

संशयवादी : फिर जीत किसकी हुई?

ज़बेलिना : जीत तो अन्तोन इवानोविच की ही हुई। पर तुम जानते हो झगड़ा किसलिए हुआ था? उन सज्जन ने अन्तोन इवानोविच के मातहत कभी काम किया था। कल, थियेटर में जाते समय उन्होंने अन्तोन इवानोविच की पीठ थपथपाकर बड़प्पन से बात करने तथा उनके ऊपर एहसान जताने की गुस्ताखी की थी।

भयभीत महिला : क्या वे सज्जन बोल्शेविक हैं?

ज़बेलिना : बोल्शेविक तो नहीं हैं, किन्तु वह आधुनिक विचार के हैं।

भयभीत महिला : अन्तोन इवानोविच ऐसी बातें करेंगे, तो कहीं चेका* उन्हें गिरफ्तार न कर ले!

संशयवादी : आजकल बाहर कौन है? सभी तो पकड़ लिये गये हैं।

भयभीत महिला : तुम तो नहीं पकड़े गये!

संशयवादी : अभी तक तो नहीं, लेकिन तय है कि मैं भी पकड़ लिया जाऊँगा।

भयभीत महिला : खुदा के वास्ते, खामोश रहो! कम से कम यहाँ तो मुझे न डरवाओ।

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच जिस ढंग से चल रहे हैं, उसे देखकर हमेशा उनकी कुछ चीजें मैं बाँधकर तैयार रखती हूँ। न जाने किस वक्त जरूरत पड़ जाये! मुझे लगता है कि सचमुच वह अपने को गिफ्तार करवा लेंगे।

आशावादी : अन्तोन इवानोविच भावावेश में आ जाते हैं, उनका और कोई

*प्रतिक्रान्ति से संघर्ष के लिए बना एक असाधारण आयोग।

कुसूर नहीं है। चेका के लोग लोगों को उनकी भावनाओं के लिए गिरफ्तार नहीं करते।

भयभीत महिला : लेकिन उन्होंने तो बोल्शेविक विचारों के एक सज्जन को ही पीट दिया था। यह तो आतंकवाद हुआ!

आशावादी : अगर जरूरत पड़े, तो चाहे जो भी शासन हो वह उनके कान तो गर्म करेगा ही।

संशयवादी : अन्तोन जरूर पकड़ लिये जायेंगे। तुम देखना।

भयभीत महिला : यह आदमी तो मेरी जान लिये बगैर नहीं रहेगा...

संशयवादी : आधे मास्को में यही चर्चा है कि ज़बेलिन दियासलाइयाँ बेचते घूमते हैं। क्या तुम समझती हो कि बोल्शेविक बेवकूफ हैं और कुछ समझते नहीं?

बुनाई करनेवाली महिला : हमारा वोलोद्या "भविष्यवादी" बन गया है। सारे दिन वह एक भयानक कविता सुनाता भटकता रहता है। कविता का नाम है 'पतलून में बादल'!

ज़बेलिना : क्या-या? बादल... पतलून में? क्या सचमुच ऐसी भी कोई कविता हो सकती है?

बुनाई करनेवाली महिला : वे उसे कविता ही कहते हैं! वोलोद्या तो कहता है कि इससे बढ़िया कविता आज तक लिखी ही नहीं गयी। वह निश्चित रूप से अश्लील है। कवि प्रथम पुरुष के रूप में एक महिला से तरह-तरह की अक्षम्य बातें कविता के माध्यम से संकेत में कहता है।

आशावादी : लेकिन पुश्किन ने भी तो ऐसा ही किया था।

बुनाई करने वाली महिला : पुश्किन ने शालीनता की सीमा कभी नहीं तोड़ी थी, मायाकोव्स्की तो बिल्कुल उजड्ड है।

आशावादी : ये सब एक ही धातु के बने होते हैं। वोलोद्या भविष्यवादी है, तो होने दो। उससे रोज की रोटी तो मिल ही जायेगी!

ज़बेलिना : सचमुच क्या कविता लिखने के लिए भी बोल्शेविक राशन देते हैं?

बुनाई करनेवाली महिला : शुरू में मुझे खुद इस बात पर विश्वास नहीं हुआ था। लेकिन वे सचमुच उन्हें राशन देते हैं।

संशयवादी : वे अन्तोन को जरूर गिरफ्तार कर लेंगे, आप देखियेगा।

ज़बेलिना : दिमीत्री दिमीत्रियेविच, आप हमारे रिश्तेदार जरूर हैं, लेकिन ऐसी अशुभ बातें निश्चय ही अनुचित और अशिष्ट हैं।

भयभीत महिला : ये मुझे बार-बार रुला देते हैं। यह आदमी तो नरक के जल्लादों से भी बुरा है। हर एक से यह यही कहता फिरता है कि उसे गोली मार

दी जायेगी।

(माशा का प्रवेश)

ज़बेलिना (माशा से) : क्या अभी तक तुम काम ही करती रही हो?

माशा : हाँ।

ज़बेलिना : जाओ, कुछ खा लो।

माशा : मुझे भूख नहीं है।

ज़बेलिना : बेटी, तुम्हारा चेहरा उतरा-उतरा है। तुम्हें कुछ खाना-पीना चाहिए।

माशा : अभी नहीं। बाद में खा लूँगी। **(अतिथियों से हाथ मिलाती है)**

आशावादी : तुम कहाँ काम करती हो, माशा?

माशा : अ. स. में।

आशावादी : यह क्या चीज है?

माशा : हम लोग अकालग्रस्त लोगों की मदद करते हैं।

आशावादी : क्या सचमुच हालत इतनी ही खराब है जितनी कि लोग बताते हैं?

माशा : हाँ, बहुत ही खराब। अकाल प्रलय की तरह फैलता जा रहा है!

संशयवादी : यह कोई खास रूसी किस्म का प्रलय है! विदेशों में वे अपने जानवरों को बढ़िया गेहूँ की बनी रोटियाँ खिलाते हैं। और यहाँ हमारी आधी आबादी भूख से दम तोड़ रही है! चीजों को मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कर रहा हूँ।

(ज़बेलिन का प्रवेश)

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच, माफ करना, हम लोगों ने तुम्हारे अध्ययन-कक्ष पर कब्जा कर रखा है। यहाँ सर्दी कम लगती है।

ज़बेलिन : सो तो मैं देख ही रहा हूँ। **(अतिथियों को अभिवादन करते हुए)** हाँ, कभी यह अध्ययन-कक्ष हुआ करता था, अब तो यह एक कब्र है। हाँ तो, आप लोग क्या बातें कर रहे थे?

आशावादी : आजकल देश में लोग क्या बातें करते हैं? अकाल, मृत्युदर ताबड़तोड़ और गिरफ्तारियाँ... यही तो रोजमर्रा की बातें हैं...

ज़बेलिन : जंगलियों ने एक सभ्य जहाज को पकड़ लिया, उसके तमाम श्वेत आदमियों को मार डाला, मल्लाहों को पानी में फेंक दिया, जहाज की तमाम रसद हड़प कर गये... लेकिन, सवाल है कि इसके बाद होगा क्या? अरे, जहाज को चलाना भी तो जानना चाहिए, और यह उनके वस का नहीं। उन्होंने समाजवाद

कायम करने का एलान किया है, लेकिन उसे कैसे कायम किया जाये इसका ककहरा तक उनमें से कोई नहीं जानता! (**संशयवादी से**) दिमीत्री दिमीत्रियेविच, क्या तुम जानते हो कि समाजवाद कैसे कायम किया जाता है?

संशयवादी : नहीं जानता, और जानना भी नहीं चाहता!

ज़बेलिन : अपनी जवानी में मैं चांद पर उड़कर पहुँच गया था... यानी सैद्धान्तिक रूप से, अपनी कल्पना में और अब यह देखो—यह मेरी बेटी है जो बोल्शेविकों के लिए कुछ भी करने को, हर तरह की मुसीबतें उठाने को तैयार है! इसकी सारी हमदर्दी उन लोगों के साथ है। इसकी नजर में हम सब क्रान्तिविरोधी हैं, बोरबोन* हैं...

(बावर्चिन तेजी से अन्दर आती है)

बावर्चिन : एक जहाजी आया है। पूछ रहा है कि ज़बेलिन परिवार कहाँ रहता है।

भयभीत महिला : जहाजी? जहाजी क्यों?

संशयवादी : जैसे कि तुम जानती ही नहीं कि जहाजी किसलिए आते हैं!

ज़बेलिना : आप डरें नहीं! वह जहाजी नहीं है।

बावर्चिन : मैं अन्धी तो नहीं हूँ... वह जहाजी ही है... और गुस्से में है...

संशयवादी : मैं अपने साथ अपना परिचय-पत्र नहीं लाया। बेहतर हो कि अब सपत्नीक पीछे के दरवाजे से खिसक जाऊँ!

भयभीत महिला : मुझे तो बाहर जाने में डर लगता है। जहाजी हमें देख लेंगे तो शक करेंगे कि हम लोग भागने की कोशिश कर रहे थे।

ज़बेलिना : आप लोग डरिये नहीं... वह इस तरह का जहाजी नहीं है। (**माशा से**) अब तुम क्यों खामोश खड़ी हो? जाओ, उसे अन्दर लिवा लाओ!

(माशा जाती है। अतिथि परेशानी से चुपचाप दरवाजे की तरफ देखते हैं)

आशावादी (अन्तोन इवानोविच से) : अरे भाई, यह क्या किस्सा है?

ज़बेलिन : शायद वह मेरी बेटी का मंगेतर है। 'अरोरा' युद्धपोत का एक नौसैनिक है।

संशयवादी : 'अरोरा' के नौसैनिकों को अपनी बेटी से मिलने ही देते हैं?

ज़बेलिन : अच्छा, तो मेरे प्यारे चचेरे भाई, थोड़ी देर पहले तुम मेरे घर से भाग क्यों जाना चाहते थे?

---

* प्रतिक्रियावादी।

संशयवादी : भागना?

ज़बेलिन : हाँ, भागना! कुछ दिन पहले तुम ऐसी हास्यास्पद बात सोच तक न सकते। हमें रोना चाहिए, रोना! और तुम व्यंग करते हो!

(माशा और रिबाकोव आते हैं)

माशा : महाशय... **(बीच ही में रुक जाती है)**

ज़बेलिन : हाँ, हाँ, बोलती जाओ। अपने मेहमान के सामने हमें महाशय कहकर सम्बोधित करने में बुरा लगता है? तो लो, मैं बताता हूँ कि तुम्हें किस तरह बोलना चाहिए। तुम हम लोगों को "साथी" कहकर बुलाओ तो तुम्हारे मेहमान को बुरा नहीं लगेगा।

माशा (रिबाकोव से) : मैंने तुमसे कहा था न... पापा हमेशा ही मेरा मजाक उड़ाते हैं। (**दूसरों से**) यह मेरे मित्र हैं, अलेक्सांद्र मिखाइलोविच रिबाकोव... ये मोर्चे पर रह चुके हैं... इन्होंने बहुत-सी दिलचस्प चीजें देखी हैं...

संशयवादी (रिबाकोव से हाथ मिलाते हुए) : आपसे मिलकर खुशी हुई!

भयभीत महिला (रिबाकोव को गौर से देखती हुई) : मैं कुछ समझ नहीं पाई—आप जहाजी हैं, या नागरिक अधिकारी?

रिबाकोव : मैं जहाजी था, लेकिन स्थलसेना में लड़ना पड़ा था। अब सेना से छुट्टी मिल गयी है।

भयभीत महिला : फिर आप यह जहाजियोंवाली वर्दी क्यों पहने हैं? हम तो सोचने लगे कि तलाशी आयी है, पर आप तो मेहमान बनकर आये।

रिबाकोव : तलाशी क्यों? मैं तो कभी सोच भी नहीं सकता कि मेरी कोई तलाशी लेने आयेगा।

संशयवादी : हरगिज नहीं, आपकी तलाशी कौन लेगा! आपने तो पूरे देश को ही जीत लिया है!

रिबाकोव : जीत अभी पूरी कहाँ हुई!

ज़बेलिन : वह कब पूरी होगी?

रिबाकोव : शायद समाजवाद की स्थापना के बाद।

ज़बेलिन : वह किस वर्ष तक मुमकिन होगा?

रिबाकोव : खेद है, यह मैं आपको बता नहीं सकता।

ज़बेलिन : क्या वह कोई रहस्य है जिसे छिपाना चाहिए?

रिबाकोव : नहीं, मैं खुद नहीं जानता।

ज़बेलिन : अच्छा, यह बात है!

ज़बेलिना : बैठ जाओ, अलेक्सांद्र मिखाइलोविच... लो, यह राखदानी है। क्या तुम हमारे परिवार की तस्वीरों का अलबम देखना पसन्द करोगे?

भयभीत महिला : परिवार का अलबम इन्हें क्यों दे रही हो? उसमें तमाम ऊट-पटाँग लोगों के चित्र हैं...**(रिबाकोव से)** यह देखिये—ये इटली की कुछ तस्वीरें हैं... यह रोम है, यह कोलीजीयम है, यह विसूवियस...

ज़बेलिन : क्यों जनाब, क्या इतालवी सागर की तरफ भी जाने का मौका कभी आपको मिला है?

रिबाकोव : जी नहीं। बाल्टिक से आगे मैं कहीं नहीं गया।

ज़बेलिन : ओर क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि कम्युनिस्ट पार्टी के भी आप सदस्य हैं?

रिबाकोव : हाँ। क्यों?

ज़बेलिन : यह जानना दिलचस्प होगा कि जब हम जैसे लोगों के बीच कोई कम्युनिस्ट आ जाता है तो वह क्या सोचता है।

रिबाकोव : इसमें सोचना ही क्या है? कुछ भी तो नहीं।

ज़बेलिन : हाँ, आप ठीक ही कहते हैं। आपके सोचने के लिए है ही क्या? आपकी नजर में तो हम लोग बुर्जुआ और बदकार हैं। लेकिन यह जान लीजिये कि इन बुर्जुआ लोगों ने सारी जिन्दगी गुलामों की तरह काम किया है। हमारी मेहनत की एवज में पूँजीवाद ने हमें पैसा दिया है, खुशहाल जिन्दगी दी है—मेरे अध्ययन-कक्ष में आपको उसी के कुछ बचे-खुचे अवशेष नजर आ रहे हैं। लेकिन कम्युनिज्म मुझे खाने के लिए करीब आधा मन जौ देता है—वह भी ऐसा जो सिर्फ कुत्तों के खाने लायक है! बहुत अच्छा! मैं गन्दे पिल्लों के इस आहार को भी खाने के लिए तैयार हूँ, लेकिन वह भी तो मुझे नहीं मिलता! नये समाज को मेरी कोई जरूरत ही नहीं है, क्योंकि मेरा काम बिजलीघरों का निर्माण करना है और वे अब बन्द किये जा रहे हैं। मैं बेकार हूँ। बिजली के बारे में सोचने के लिए हमारे पास कोई टाइम नहीं है। विद्युत-शक्ति की जगह बैलों की जोड़ी ले रही है। और प्रोमीथियस की तरह मैं लोगों के पास आग पहुँचा रहा हूँ। सुबह से रात तक इबेरियाई गिरजाघर के फाटक पर खड़ा-खड़ा मैं दियासलाइयाँ बेचता हूँ।

संशयवादी : और, प्रोमीथियस की ही तरह, जंजीरों से बाँधकर वे तुम्हें कैद कर देंगे।

ज़बेलिन (रिबाकोव से) : क्यों जनाब, आप क्या कहते हैं?

रिबाकोव : मेरी समझ में नहीं आता कि उन्होंने अब तक ऐसा क्यों नहीं किया!

संशयवादी (खुश होकर) : सुना आपने?

ज़बेलिन : सामने टेलीफोन रखा है। रिपोर्ट कर दो।

रिबाकोव : उन्हें मेरी रिपोर्ट की जरूरत नहीं। लेकिन असल बात यह नहीं है। आप हम लोगों से चिढ़े हुए हैं... और बिल्कुल बेकार। आपकी जगह मैं होता तो न जाने कब का कहीं काम में लग गया होता। देखिये, हम लोग आपस में ही बात कर रहे हैं इसलिए मैं आपको बताये देता हूँ कि आप प्रोमीथियस-वोमीथियस कुछ नहीं हैं, सिर्फ तोड़-फोड़ करने वाले एक षड्यंत्रकारी हैं!

ज़बेलिन : ओह-हो! कहिये, यह कैसी रही? यह आदमी पहली बार मेरे घर आता है और इस बात पर ताज्जुब करता है कि मुझे अभी तक गिरफ्तार क्यों नहीं किया गया और कितने मजे से खुदा जाने कैसी-कैसी गालियाँ मुझे दिये जा रहा है। शेखी की भी हद है! आजकल अपने घरों में मेहमान भी हम लोग कैसे-कैसे बुलाते हैं?

आशावादी : हमारा वोलोद्या भी ठीक इसी तरह की बातें करता है। हर दिन वह मुझे सड़ा हुआ बुर्जुआ कहता है। और मुझे यह सब चुपचाप पी जाना पड़ता है।

ज़बेलिन : वोलोद्या आपका लड़का है। यह आदमी एक अजनबी है। **(रिबाकोव से)** शराफत जैसी भी कोई चीज होती है—इसका क्या आपको बिल्कुल पता नहीं?

रिबाकोव : यह सचमुच ही अजब बात है! सोवियत व्यवस्था के लिए मैंने अपनी जान तक की परवाह नहीं की। लेकिन उसके बारे में आप किसी बहुत सभ्य भाषा में तो बात कर नहीं रहे थे। फिर भी मैं न तो चिल्लाया, न शोर किया, और न गुस्सा ही हुआ। मैंने तो सिर्फ यही कहा कि आप एक तोड़-फोड़ करने वाले हैं।

ज़बेलिन : मैंने तो, जनाब, केवल सच कहा था!

रिबाकोव : आपने सच-वच कुछ नहीं कहा था, आप महज बकवास कर रहे थे! सच तो मैंने ही कहा है।

ज़बेलिन : क्या यह सच नहीं है कि मैं बेकार हूँ?

रिबाकोव : नहीं!

ज़बेलिन : तुम्हारे जैसे लोगों ने एक पुराने जूते की तरह मुझे कूड़े के ढेर पर फेंक दिया है—क्या यह सच नहीं है?

रिबाकोव : नहीं!

ज़बेलिन : अच्छा, जनाब, तो सुनिये : आप मेरे घर से निकल जाइये! इससे पहले आपका परिचय प्राप्त करने का सौभाग्य भी मुझे नहीं प्राप्त हुआ और अब मैं

उसकी कोई जरूरत नहीं समझता।

रिबाकोव : मैं नहीं जाऊँगा।

ज़बेलिन : ओह, यह बात है... मैं भूल गया था कि आप मेरे मकान पर कब्जा कर सकते हैं।

रिबाकोव : मैं यहाँ किसी चीज पर कब्जा-वब्जा करने नहीं आया हूँ...

ज़बेलिन : तो आप ही रहिये! मैं यहाँ से चला जाता हूँ!

रिबाकोव : मैं आपको भी जाने नहीं दूँगा। आपको इस तरह पागलों की तरह बातें करते देखना कितना हास्यास्पद लगता है। और आप अपने को सभ्य कहते है!

ज़बेलिन : तो मैं जंगली हूँ?

रिबाकोव : लगता तो ऐसा ही है।

ज़बेलिन : और आप मुझे सभ्य बनाने आये हैं?

रिबाकोव : बेशक! आप क्या समझते हैं?

ज़बेलिन (हँसते हुए) : मैं तो इस आदमी की बेबाक शेखी को देखकर ही निरस्त्र हो गया हूँ! कैसा मजे का जीव है! हम सब को सभ्य बनाना चाहता है! बहुत अच्छा, साथी मिशनरी, मैं तैयार हूँ! शुरू करो!

(बावर्चिन आती है)

बावर्चिन : मकान कमेटी के चेयरमैन आये हैं।

ज़बेलिन : अकेले?

बावर्चिन : नहीं, अकेले नहीं।

ज़बेलिन : अकेले नहीं?

बावर्चिन : उसके साथ कोई एक फौजी है... गुस्सैल!

चेयरमैन (खुले हुए दरवाजे पर बेसब्री से दस्तक देता हुआ) : क्या हम लोग अन्दर आ सकते हैं?

ज़बेलिन : आ जाइये...

(चेयरमैन अन्दर आता है, उसके पीछे-पीछे उस समय की फौजी वर्दी में एक अजनबी)

चेयरमैन : नागरिक ज़बेलिन, खुद आपको लेने आये हैं!

ज़बेलिन : बहुत खूब! इसके लिए तो मैं बहुत दिनों से तैयार बैठा था!

फौजी : कृपया आप जल्दी कीजिये!

ज़बेलिन : चलिये, मैं एकदम तैयार हूँ!

फौजी : शुक्रिया।

ज़बेलिन : मुझे एक मिनट से अधिक नहीं लगेगा... **(सब लोगों को अभिवादन करता है)** मेरी पत्नी ने आपको गलत वक्त पर दावत दी थी... माफ कीजिये... **(पत्नी से)** अलविदा!

ज़बेलिना (पति के हाथ में एक गठरी पकड़ाते हुए) : भगवान तुम्हारी रक्षा करे...

ज़बेलिन : शुक्रिया। अच्छा, मैं चला...

फौजी : मोटर अहाते में आपका इन्तजार कर रही है।

ज़बेलिन : मैं समझता हूँ।

ज़बेलिना : अन्तोन, ऐसा न कहना!

(चेयरमैन, फौजी और ज़बेलिन चले जाते हैं)

ज़बेलिना : अन्तोन! मैं उन्हें नहीं जाने दूँगी! तुम लोग हमें भी ले चलो! मुझे भी पकड़ लो! **(चिल्लाती हुई दौड़ती है)** वारण्ट कहाँ है? चेयरमैन को वापसस बुलाओ! चेयरमैन!

(चेयरमैन वापिस आता है)

आपके पास कोई वारण्ट है?

चेयरमैन : और नहीं तो क्या! मय दस्तखत और सरकारी मुहर के... एक-एक चीज दुरुस्त! **(चला जाता है)**

ज़बेलिना : ओह, माशा, वे उन्हें हमसे छीन ले गये...

माशा (रिबाकोव से) : क्या तुम्हें मालूम था कि पापा गिरफ्तार होने वाले हैं?

रिबाकोव : मुझे कुछ नहीं मालूम था। मुझे लगता है कि यह गिरफ्तारी है भी नहीं।

(पर्दा गिरता है)

तीसरा अंक

दृश्य 1

(क्रेमलिन में लेनिन का अध्ययन-कक्ष। लेनिन और द्ज़ेर्जिन्स्की बैठे हुए हैं। लेनिन थोड़ी देर तक अपनी मेज पर झुके काम करते रहते हैं, फिर घण्टी बजाते हैं। सेक्रेटरी आती है)

लेनिन (सेक्रेटरी से) : इन्जीनियर ज़बेलिन को अन्दर लिवा लाओ। और हमारे विशेषज्ञ, इन्जीनियर ग्लागोलेव को भी ढूँढ़ लाओ। वह यहीं कहीं मंत्रालय में हैं।

(सेक्रेटरी चली जाती है। ज़बेलिन अन्दर आते हैं)

इन्जीनियर ज़बेलिन?

ज़बेलिन : जी।

लेनिन : अन्तोन इवानोविच?

ज़बेलिन : जी।

लेनिन : नमस्ते। कृपया बैठिये! बैठिये!

(ज़बेलिन कुर्सी पर बैठ जाते हैं। खामोशी)

हाँ तो, आपका इरादा क्या है? आप तोड़-फोड़ करेंगे या काम?

ज़बेलिन : मुझे इस बात का पता नहीं था कि मेरी व्यक्तिगत समस्याओं में भी किसी की दिलचस्पी हो सकती है।

लेनिन : आप खुद देख रहे हैं कि हमारी दिलचस्पी उनमें है। एक बहुत महत्वपूर्ण मामले में हम आपसे मशविरा लेना चाहते हैं।

ज़बेलिन : मुझे शक है कि मेरी सलाह आपके लिए किसी काम की होगी।

लेनिन : आप किस पर शक कर रहे हैं—हम पर या अपने पर?

ज़बेलिन : एक ज़माना हुआ जब से मुझसे किसी ने कुछ नहीं पूछा, किसी ने कोई सलाह नहीं माँगी।

लेनिन : इसका मतलब है कि लोग दूसरे कामों में लगे थे। आपका क्या ख्याल है?

ज़बेलिन : हाँ, यह तो ठीक है। लोगों को दूसरे काम करने थे।

लेनिन : लेकिन अब आपकी सलाह की जरूरत है। इसमें आपको ताज्जुब क्यों हो रहा है?

ज़बेलिन : मैं कुछ... कुछ... उलझन महसूस कर रहा हूँ।

द्ज़ेर्जिन्स्की : उस पोटली से आपको परेशानी हो रही है। उसे आप नीचे क्यों नहीं रख देते?

लेनिन : आज शनिवार है, स्नान का दिन। शायद आप स्नानघर की तरफ जा रहे थे?

ज़बेलिन : हाँ... स्नानघर की तरफ...

लेनिन : नहाने के लिए वक्त रहेगा। हम लोग आपको बहुत देर नहीं रोकेंगे।

(इन्जीनियर ग्लागोलेव अन्दर आते हैं)

ग्लागोलेव : नमस्कार।

लेनिन (ग्लागोलेव से) : गेओर्गी इवानोविच, इन्जीनियर ज़बेलिन से परिचित हो?

ग्लागोलेव : नहीं, हमें मिलने का इत्तफाक नहीं हुआ।

लेनिन (ज़बेलिन से) : गेओर्गी इवानोविच ग्लागोलेव से मिलिये। ये हमारे विशेषज्ञ हैं।

ज़बेलिन : हाँ, हमें पहले कभी मिलने का इत्तफाक नहीं हुआ था।

ग्लागोलेव : क्या इन्जीनियर ज़बेलिन से आपने बात कर ली?

लेनिन : नहीं, अभी नहीं। मैं नहीं समझता कि इन्जीनियर ज़बेलिन को इस बात का पता है कि हमने उन्हें क्यों तकलीफ दी है। अच्छा, और समय न खराब किया जाये। हाँ, साथी, यह तुम्हारा अपना क्षेत्र है, तुम्हीं इन्हें बतलाओ।

ग्लागोलेव : इन्हें किसी खास चीज के बतलाने-समझाने की जरूरत नहीं है। इन्जीनियर ज़बेलिन जैसे लोगों को रूस के विद्युत विकास के सम्बन्ध में दूसरा कोई कुछ बतलाये इसकी जरूरत नहीं है। (ज़बेलिन से) मैं ठीक कहता हूँ न?

ज़बेलिन : जी...

ग्लागोलेव : फिर भी इतना तो आप जान ही लें कि तकनीकी दृष्टि से देश की अर्थ-व्यवस्था के मौलिक पुनर्निर्माण में हम बोल्शेविक क्रान्तिकारियों की हमेशा ही गहरी दिलचस्पी रही है।

ज़बेलिन : लेकिन आप... क़ता-कलाम के लिए माफ कीजियेगा... आप तो इन्जीनियर हैं... एक पुराने इन्जीनियर, हैं न?

लेनिन (उनकी आँखों में व्यंग्यपूर्ण हँसी की झलक है) : आपका मतलब—क्या

एक पुराना इन्जीनियर क्रान्तिकारी नहीं हो सकता? (ग्लागोलेव से) अच्छा-अच्छा, तुम अपनी बात कहो।

ग्लागोलेव : एक ऐसे इन्जीनियर के रूप में, जो क्रान्तिकारी भी है, रूस के विद्युतीकरण के लिए मैं अपनी सारी शक्ति लगाने के लिए तैयार हूँ।

लेनिन : और वह भी सुदूर भविष्य में नहीं, बल्कि फौरन, इसी वक्त... हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का इरादा भी यही है।

ज़बेलिन : ठीक है... फिर?

लेनिन : यही तो हम आपसे पूछना चाहते हैं।

ज़बेलिन : मुझसे?

लेनिन : हाँ। एक विशेषज्ञ की हैसियत से आप हमारी मदद कर सकते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, विशेषज्ञों के तरह-तरह के विचार हैं। ग्लागोलेव, कृपया अपनी बात जारी रखें।

ग्लागोलेव : एक पुरानी धारणा है कि विद्युत उत्पादन के लिए रूस में प्राकृतिक साधनों की कमी है। कल ही इस मसले पर हम लोग एक अत्यन्त प्रतिष्ठित वैज्ञानिक से बात कर रहे थे—इसी तरह जैसे इस वक्त हम आपसे बातें कर रहे हैं। मैं उनका नाम नहीं लूँगा। लेकिन आप जानते हैं उन्होंने क्या कहा? उन्होंने कहा, "हमारा देश सपाट है... यहाँ की नदियाँ धीरे-धीरे बहती हैं... जाड़ों में वे जम जाती हैं..." यह ठीक है कि अमरीका की तरह हमारे यहाँ नियाग्रा प्रपात नहीं है। इसलिए, हम एक भी अच्छा जल-विद्युत केन्द्र नहीं बना सकते!

ज़बेलिन : ऐसी बात केवल कोई अज्ञानी ही कह सकता है।

लेनिन : नहीं, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, वह एक बहुत बड़े वैज्ञानिक हैं. .. और बिजली की एक बड़ी कम्पनी के शेयर-होल्डर भी।

ज़बेलिन : या फिर ऐसी बात कोई धूर्त कह सकता है।

दृज़ेर्जिन्स्की : यह अलग चीज है।

लेनिन : धूर्त क्यों? क्या आप उन्हें गलत साबित कर सकते हैं?

ज़बेलिन : रूस का कोई नक्शा है यहाँ?

लेनिन : अवश्य।

(ग्लागोलेव मेज पर एक बड़ा-सा नक्शा फैला देते हैं)

ज़बेलिन : मैं आपको दर्जनेक ऐसी जगहें बतला सकता हूँ जहाँ फौरन हम जल-विद्युत केन्द्र बना सकते हैं... यहाँ, और यहाँ... और इस के बारे में आपका क्या ख्याल है?

लेनिन : यह क्या है?

ज़बेलिन : दृनेपर नदी यहाँ ऊपर से नीचे उतरती है।

लेनिन : लेकिन वहाँ हम कैसे विद्युत केन्द्र बना सकते हैं?

ज़बेलिन : नीचे की तरफ किसी जगह, लेकिन समुद्र के नजदीक नहीं।

लेनिन : यहाँ समुद्र तट पर एक विशाल विद्युत प्रासाद बन जाये तो कितना अच्छा हो!

ज़बेलिन : या कोयलेवाले इन इलाकों को देखिये... पूर्व में अंगारा नदी है... काकेशिया में एल्ब्रस है... और अगर वोल्गा पर हम एक बाँध बना दें...

लेनिन : वोल्गा पर कहाँ? यह आपने बड़ी दिलचस्प बात बतायी। मेरा घर वोल्गा के ही पास है।

ज़बेलिन : यहाँ, इस जगह—जीगुली की पहाड़ियों के पास... अगर मैं भूल नही रहा हूँ तो पुरानी गणना के अनुसार वोल्गा से जितनी बिजली पैदा होगी वह दोन के आधे कोयला-क्षेत्र के बराबर काम कर सकेगी।

लेनिन : इस सम्बन्ध में क्या आप एक स्मृति-पत्र तैयार कर सकते हैं?

ज़बेलिन : मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं आपसे क्या कहूँ! ऐसे कार्यों को कभी मैंने किया था, एक जमाना गुजर गया।

लेनिन : फिर आप कर क्या रहे हैं?

ज़बेलिन : कुछ नहीं।

दृज़ेर्जिन्स्की : नहीं, यह सच नहीं है। इन्जीनियर ज़बेलिन इन दिनों दियासलाइयाँ बेचते हैं।

लेनिन : क्या मतलब तुम्हारा?

दृज़ेर्जिन्स्की : सड़क पर खड़े होकर ये दियासलाइयाँ बेचते हैं।

लेनिन : थोक या फुटकर? क्या उनके बॉक्स के बॉक्स बेचते हैं? देखिये, यह बहुत ही निन्दनीय बात है! जनाव, यह डूब मरने की बात है! आजकल, हमारे जमाने में आपका दियासलाइयाँ बेचते फिरना... इसके लिए तो गोली मार दी जानी चाहिए। मैं सच कहता हूँ!

ज़बेलिन : मैं इसके लिए बहुत दिन से तैयार बैठा हूँ।

लेनिन : किस चीज के लिए तैयार? शहीद बनने के लिए? आपसे कौन कहता है कि आप दियासलाइयाँ बेचिये?

ज़बेलिन : मेरे लिए और कुछ करने को है ही नहीं।

लेनिन : और कुछ करने को नहीं? जरा सोचिये तो आप कह क्या रहे हैं!

ज़बेलिन : मुझसे किसी ने कभी कुछ करने को नहीं कहा।

लेनिन : और यह क्यों जरूरी है कि हमीं आपसे कुछ कहें? हम लोगों के आने से पहले क्या बैठकर आप इस बात का इन्तजार करते थे कि कोई आये और आपको हुक्म दे? लेकिन मैं आपसे साफ-साफ कहे देता हूँ, अगर विद्युतीकरण का विचार आपको अनुप्राणित नहीं करता तो जब तक जी चाहे आप दियासलाइयाँ बेचते रह सकते हैं।

ज़बेलिन : मैं नहीं जानता... मैं कुछ कर भी सकता हूँ...

(लेनिन गुस्से से उठकर कमरे में दूसरी तरफ चले जाते हैं)

दज़ेर्जिन्स्की : सिलसिला टूट गया है, काम से बहुत दिनों से आपका सम्बन्ध नहीं रहा—क्या यही चीज आपको परेशान कर रही है?

ज़बेलिन : मैं बोल्शेविक कभी न बन सकूँगा।

दज़ेर्जिन्स्की : पर हम आपको पार्टी में शामिल होने का न्योता तो नहीं दे रहे हैं।

ज़बेलिन : आप लोग रूस में समाजवाद कायम करना चाहते हैं और मेरा समाजवाद में विश्वास नहीं है।

लेनिन : लेकिन मेरा तो है। हममें से कौन सही है? आप सोचते हैं, आप, मैं सोचता हूँ, मैं। हमारे बीच कौन फैसला करेगा? हम दज़ेर्जिन्स्की से पूछ सकते हैं। लेकिन अधिक सम्भावना इसी बात की है कि वह कहेंगे कि मैं सही हूँ, आप नहीं। क्या उससे आप सन्तुष्ट हो जायेंगे?

ज़बेलिन : मेरी बातें आपको बचकानी बकवास की तरह लगती होंगी।

लेनिन : आप मेन्शेविक तो नहीं हैं? या सोशल-डेमोक्रेट? या कोई समाजवादी-क्रान्तिकारी? आपने मार्क्स की 'पूँजी' पढ़ी है? 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' का अध्ययन किया है?

ज़बेलिन : नहीं, इस बारे में मैं अधिक नहीं जानता।

लेनिन : अगर आप अधिक नही जानते तो फिर समाजवाद में विश्वास या अविश्वास आप कैसे कर सकते हैं?

ग्लागोलेव : आप साथी क्रिझिजानोव्स्की को जानते हैं?

ज़बेलिन : हाँ।

ग्लागोलेव : विद्युतीकरण की हमारी योजनाओं के सम्बन्ध में उन्होंने जो काम किया है उसके बारे में क्या आपने कुछ नहीं सुना?

ज़बेलिन : हाँ... इधर-उधर कुछ सुना तो है...

लेनिन : उन्होंने मुझे बतलाया था कि आपको इस सम्बन्ध में बहुत अनुभव है, आप एक अत्यन्त योग्य इन्जीनियर हैं—और आप दियासलाइयाँ बेचते घूम रहे हैं। कैसी अजब बात है!

ज़बेलिन : उसे मैं बन्द कर दूँगा। वह बात तो खत्म हो गयी।

दज़ेर्जिन्स्की : अल्लाह का शुक्र है!

लेनिन : फेलिक्स, तुमने क्या कहा?

दज़ेर्जिन्स्की : मैंने कहा, अल्लाह का शुक्र है!

ज़बेलिन : तो क्या मैं यह समझूँ कि मुझसे काम करने के लिए कहा जा रहा है?

दज़ेर्जिन्स्की : जी हाँ, और उसे आप जितनी जल्दी शुरू कर सकेंगे उतना ही अच्छा होगा।

ज़बेलिन : लेकिन आप लोग सचमुच मुझे अच्छी तरह नहीं जानते।

लेनिन : थोड़ा-बहुत जानते हैं।

ज़बेलिन : कम्युनिस्टों की पार्टी में ऐसा कोइ नहीं, जो मेरी सिफारिश कर सके।

लेनिन : मानिये चाहे न मानिये, लेकिन आपकी सिफारिश करने वाले लोग मौजूद हैं।

ज़बेलिन : मैं सोच नहीं सकता कि ऐसा कौन होगा।

दज़ेर्जिन्स्की : एक तो मैं ही हूँ।

ज़बेलिन : आप मुझे कैसे जानते हैं?

दज़ेर्जिन्स्की : यह मेरा काम है।

ज़बेलिन : हाँ, मैं भूल रहा था।

दज़ेर्जिन्स्की : इसके अलावा, इन्जीनियर ज़बेलिन को कौन नहीं जानता? और चूँकि सरकार से मैं आपकी सिफारिश कर रहा हूँ इसलिए मैं चाहूँगा कि एक बात आप भी मेरी सुन लें। इस समय आप कुछ परेशान हैं...

ज़बेलिन : जी हाँ, बहुत।

दज़ेर्जिन्स्की : और उद्वेलित भी हैं। यह स्वाभाविक है। अपने सुचित होने के लिए आपको समय चाहिए। अब आप घर जायें, हमारी बात पर अच्छी तरह विचार करें, और फिर जवाब दें।

लेनिन : कल तक आप हमें जवाब दे सकेंगे?

ज़बेलिन : हाँ।

लेनिन : ठीक। तो फिर कल मुलाकात होगी।

(ज़बेलिन झुककर सलाम करते हैं और दरवाजे की तरफ चलते हैं)

दज़ेर्जिन्स्की : आप अपनी पोटली को यहीं भूले जा रहे हैं।

ज़बेलिन : भाड़ में जाये वह पोटली!

लेनिन : नहाने का दिन... अभी आप नहाने जा सकते हैं, अब भी काफी वक्त है।

ज़बेलिन : असल बात यह है कि मैं नहाने नहीं जा रहा था। सभी को विश्वास था कि मुझे गिरफ्तार करके चेका के पास ले जाया जा रहा है... इसलिए मेरी पत्नी ने मुझे यह गठरी पकड़ा दी थी।

लेनिन : अब मैं समझा। तो यह बात थी! जरा रुकिये! (घण्टी बजाकर सेक्रेटरी को बुलाते हैं) असल बात यह है कि हम लोग बहुत ही कठिन समय में रह रहे हैं। वहाँ, आपके घर पर, इस वक्त सभी आपके लिए अफसोस कर रहे होंगे, कोहराम मचा होगा... .

(सेक्रेटरी आती है)

इन्जीनियर ज़बेलिन को घर पहुँचाने के लिए एक कार मँगा दो... फौरन।

(ज़बेलिन और सेक्रेटरी चले जाते हैं)

अब भी सैकड़ों और हजारों, बल्कि कहना चाहिए कि लाखों लोग बेकार फिर रहे हैं। यह कोई तोड़-फोड़ करने वाले नहीं हैं! हाथ में कोई काम न होने की वजह से इनका दिमाग खराब हो गया है। गेओर्गी इवानोविच, तुम्हारा क्या ख्याल है—इन्जीनियर ज़बेलिन हमारे लिए काम करेंगे?

ग्लागोलेव : मेरा ख्याल है कि वह करेंगे, व्लादीमिर इल्यीच।

लेनिन : वह करेंगे, लेकिन वर्तमान परिस्थिति में अपने को फिट करना उनके लिए कठिन होगा, बहुत कठिन।

ग्लागोलेव : व्लादीमिर इल्यीच, फिलहाल मेरी कोई जरूरत तो नहीं?

लेनिन : नहीं, गेओर्गी इवानोविच, धन्यवाद।

(ग्लागोलेव जाते हैं। सेक्रेटरी अन्दर आती है)

कहो?

सेक्रेटरी : एक घड़ीसाज आया है... रिबाकोव ने भेजा है, आपने उससे कहा था।

लेनिन : उसे अन्दर ले आओ।

सेक्रेटरी : जी। (चली जाती है)

लेनिन : ये खामोश घण्टियाँ मुझ चैन नहीं लेने देतीं... किसी न किसी तरह

उन्हें फिर से चालू करना होगा!

(घड़ीसाज अन्दर आता है)

नमस्ते, साथी! आप घड़ीसाज हैं न?

घड़ीसाज : इकला दस्तकार हूँ।

लेनिन : माफ करना, मैंने तुम्हारी बात समझी नहीं। इकला क्यों?

घड़ीसाज : आजकल मेरी तरह के नाचीज दस्तकारों को "बिना मोटर का इकला दस्तकार" ही कहा जाता है।

लेनिन : यह क्या है—"इकला और बिना मोटर का"?

दज़ेर्जिन्स्की : मालूम होता है कि तुम्हारे साथ ठीक से व्यवहार नहीं किया गया? बात क्या है, हमें बताओ।

घड़ीसाज : साथी लेनिन की मौजूदगी का फायदा उनसे निजी शिकायतें करने के लिए मैं नहीं उठाना चाहता। मैं अपना दुखड़ा कभी नहीं रोता। मुझे यहाँ किसी काम के लिए बुलाया गया है **न**?

दज़ेर्जिन्स्की (घड़ीसाज की तरफ मैत्री भाव से सिर हिलाते हुए, प्रसन्न स्वर में) : नहीं, नहीं, बताओ, असल बात क्या है? सब साफ-साफ बतला दो।

लेनिन : और इसी बीच मैं गरम चाय के लिए आर्डर दे देता हूँ। (दरवाजे की तरफ जाकर) चाय भेजने के लिए कहला दीजिये। (घड़ीसाज से) बहुत तकलीफ उठानी पड़ रही है? अकाल, बर्बादी, अराजकता फैली हुई है? थके हो? भूख से पीड़ित हो?

घड़ीसाज : जो दूसरों पर बीत रही है वही मुझ पर भी।

लेनिन (दज़ेर्जिन्स्की की तरफ इशारा करते हुए) : हमारे यह साथी कहते हैं कि तुम्हारे साथ बेइन्साफी की गयी है। क्या इनका ख्याल गलत है?

घड़ीसाज : मैं ऐसे सवालों की उम्मीद नहीं कर रहा था। मैं तो खुश था कि मुझे फिर काम के लिए बुलाया गया। पुरान जमाने में एक बार मैंने काउण्ट लेव तोलस्तोय की घड़ी की मरम्मत की थी।

लेनिन : ओ-हो... यह तो वाकई महत्वपूर्ण बात है!

दज़ेर्जिन्स्की : तोलस्तोय को तो जरूर अच्छे कारीगर की पहचान रही होगी।

लेनिन : वह किस तरह के थे?

घड़ीसाज : वह ऊँचे बूट पहनकर घूमा करते थे... बहुत दिलचस्प आदमी थे। उनकी तस्वीरों से उनके सही रूप-रंग का पता नहीं चलता।

लेनिन : वह क्या बातें करते थे।

घड़ीसाज : वह तो मैं अब भूल गया। उन्हें सवाल पूछना बहुत पसन्द था। और वह अच्छी घड़ी को पहचान सकते थे।

दृज़ेर्जिन्स्की : और वह पैसा भी अच्छा ही देते रहे होंगे?

घड़ीसाज : नहीं, यह देखकर कि वह काउण्ट तोलस्तोय थे मैंने उन्हें काफी कमीशन दे दिया था।

लेनिन : इस बात का उन्हें पता था?

घड़ीसाज : शायद नहीं।

लेनिन : तुम्हें अब क्या परेशानी है? देखो, सवाल पूछने का हमें भी मर्ज है।

घड़ीसाज : मेरी समझ में नहीं आता आपको कैसे बताऊँ। निस्सन्देह, मैं जानता हूँ कि, जैसा कि हैमलेट ने कहा था, "वक्त बिगड़ा हुआ है"।

लेनिन : "जियें या न जियें?"

घड़ीसाज : जी हाँ! आपने एकदम ठीक-ठीक बात कह दी! मुझे काम नहीं दिया जा रहा।

दृज़ेर्जिन्स्की : सहकारी कारखाने तो चल रहे हैं... लेकिन शायद उनका इन्तजाम ठीक नहीं है।

घड़ीसाज : मुझसे वहाँ जाकर काम करने के लिए कहा गया था। मैं वहाँ गया में एक ऐसे काम में हाथ लगाया जिसे और कोई नहीं कर सकता था। वह इंगलिस्तान की बनी घड़ी थी—असली नौर्टन। बहुत ही बढ़िया चीज थी—कम से कम तीन सौ वर्ष पुरानी रही होगी। रेलों के अविष्कार से बहुत पहले उसे बनाया गया था। मैं एक महीने तक उससे जूझता रहा। आखिर में वह चलने लगी। इस पर उन लोगों ने वहाँ मेरे खिलाफ एक आम सभा की और कहा कि मुझे जितना वेतन मिलता है, उतना काम मैं नहीं करता। उस वक्त मुझसे भी एक गलती हो गयी : अपने जवाब में मैंने उन्हें ईसप की नीति-कथा सुना दी।

लेनिन : वह क्या?

घड़ीसाज : मैंने उन्हें उस लोमड़ी की कहानी सुनायी जिसने शेरनी के पास जाकर इस बात पर दुःख प्रकट किया था कि उसके एक ही बच्चा हुआ था। लोमड़ी के जवाब में शेरनी ने कहा था : "हाँ, लेकिन वह बच्चा एक शेर है"। और इस कहानी से यह सबक मिलता है कि संख्या से गुण बेहतर होता है।

लेनिन : इसके उत्तर में उन्होंने क्या कहा?

घड़ीसाज : कारखाने के निदेशक ने कहा कि ईसप क्रान्तिविरोधी हैं और मैं दुश्मनों तथा ईसप का एजेन्ट हूँ। फिर उन्होंने मुझे निकाल बाहर किया।

(लेनिन मेज को पकड़कर जोरों से हँसने लगते हैं। दृज़ेर्जिन्स्की भी हँस रहे हैं और घड़ीसाज भी हँसने लगा है)

लेनिन : इस पर भी तुम कहते हो कि तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार नहीं किया गया? निस्सन्देह, उन्होंने तुम्हारे साथ गलत सलूक किया है। चलो, हम लोग उन्हें माफ कर दें कि ईसप की नीति-कथाओं को वे नहीं जानते। इसके अलावा, इस समय दुर्लभ घड़ियों के अलावा और भी अनेक सवाल हैं जिनके बारे में उन्हें चिन्ता है। अन्त में, जैसा कि तोलस्तोय ने कहा है, सब कुछ ठीक हो जायेगा... इस समय तुम्हारे लिए एक काम है।

घड़ीसाज : मैं तैयार हूँ। **(अपना छोटा बॉक्स खोलता है और जल्दी-जल्दी अपनी आँख में आतशी शीशे लगा लेता है)**

लेनिन : मेरा ख्याल है कि इस काम में तुम्हारे औजार बहुत उपयोगी नहीं होंगे।

घड़ीसाज : नहीं? क्यों?

लेनिन : तुम्हें दूसरी ही साइज के पेचकशों की जरूरत होगी...

दृज़ेर्जिन्स्की : वहाँ तो मनों, सैकड़ों मनों के बोझ को उठाने-हटाने का सवाल है।

घड़ीसाज : लेकिन मैं तो केवल एक घड़ीसाज हूँ।

लेनिन : हाँ, क्रेमलिन की घण्टियों को तुम्हें ठीक करना है।

घड़ीसाज : क्रेमलिन की घण्टियों को? स्पासकाया टावर की घण्टियों को?!

लेनिन : हाँ, स्पासकाया टावर पर लगी क्रेमलिन की घड़ी को! क्या तुम उसे ठीक कर सकोगे?

घड़ीसाज : आदमी ही बनाते हैं, आदमी ही तोड़ते हैं, और आदमियों को ही उसे फिर चालू करना पड़ता है।

लेनिन : हाँ, लेकिन आदमियों ने जब उसे बनाया था, तब तक 'इंटरनेशनल' गीत की रचना नहीं हुई थी। अब हमें घण्टियों को उस गीत को बजाना भी सिखाना होगा। क्या तुम उन्हें सिखा सकोगे?

घड़ीसाज : कोशिश करूँगा।

लेनिन : बहुत ठीक। फिर कल से काम शुरू कर दो।

घड़ीसाज : क्या मैं उसे अभी देख सकता हूँ? मुझे इन्तजार करते बैठा रहना अच्छा नहीं लगता।

दृज़ेर्जिन्स्की : और अगर तुम्हारे काम में कोई दखल दे या तुम्हें कोई परेशान करे, तो इस नम्बर पर टेलीफोन कर देना।

घड़ीसाज : मैं किसे नाम लेकर बुलाऊँगा?

दुज़ेर्जिन्स्की : दुज़ेर्जिन्स्की का।

घड़ीसाज : और वह खुद मेरी मदद करेंगे?

लेनिन : हाँ, हम खुद उनसे आपकी मदद करने के लिए कहेंगे। जहाँ तक मजदूरी वगैरा की बात है उसके बारे में हमारे कमान्डेन्ट से बात कर लेना।

घड़ीसाज : कैसी मजदूरी। क्रेमलिन की घण्टियों को 'इंटरनेशनल' गीत बजाना सिखानेवाला मैं पहला घड़ीसाज हूँगा!

लेनिन : लेकिन एक राशन कार्ड ले लेने में तो कोई नुकसान नहीं होगा?

घड़ीसाज : यह सच है, राशन कार्ड ले लेने में कोई नुकसान नहीं होगा। यह काम देने के लिए, मुझमें इतना विश्वास दिखलाने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। कृपया मुझे माफ कीजिये, इस वक्त मैं बहुत उत्तेजित हो गया हूँ। अब मैं टावर देखने जाऊँगा। **(बाहर चला जाता है)**

लेनिन : यह काम भी समझो कि हो ही गया। मुझे पूरा भरोसा है कि घण्टियाँ बजने लगेंगी। फिर भी, फेलिक्स एद्मुन्दोविच, तुम्हारा क्या ख्याल है—क्या ज़बेलिन हम लोगों के साथ काम करने को राजी हो जायेंगे?

दुज़ेर्जिन्स्की : मेरा ख्याल है कि वे राजी हो जायेंगे।

लेनिन : हमें तेजी से काम करने की जरूरत है, जिससे कि इन तमाम छिपे हुए लोगों को ढूँढ़-निकालकर फिर सामने ला सकें। ऐसे सैकड़ों लोग अपने घरों मे जा बैठे हैं। इस काम को हमें और भी अधिक तेजी से, और भी अधिक सावधानी से करना होगा।

(दुज़ेर्जिन्स्की बाहर चले जाते हैं। लेनिन अपनी मेज के सामने बैठकर फिर काम में लग जाते हैं)

दृश्य 2

(उसी दिन शाम को ज़बेलिन के अध्ययन-कक्ष में। ज़बेलिन, माशा और रिबाकोव को छोड़कर शेष सभी पुराने पात्र मौजूद हैं)

संशयवादी : मैं आपसे कहता हूँ, हमें वारण्ट जरूर देख लेना चाहिए था।

ज़बेलिना : देखा या न देखा, उससे फर्क क्या पड़ता!

भयभीत महिला : यह भयानक रात मैं कभी नहीं भूलूँगी, अपनी मृत्यु-शैय्या

पर भी नहीं ! यह सब अगर मैंने स्वप्न में भी देखा होता तो मैं चीखकर उठ जाती। लेकिन यहाँ तो उन लोगों का मैंने आँखों से, खुद अपनी इन आँखों से देखा है! वे आये और एक शब्द भी कहे बिना उनको पकड़ ले गये!

संशयवादी : अब पूरे महीने तक यह अनिन्द्रा की शिकार रहेगी। अमरीकी पेटेन्ट गोलियाँ भी काम नहीं देंगी। अच्छा चलो, अब घर चलें। तुम काँप रही हो।

ज़बेलिना : जरा देर और रुकिये। माशा लौटकर आती ही होगी।

(बावर्चिन अन्दर आती है)

बावर्चिन : लीदिया मिखाइलोव्ना, मालूम पड़ता है कि उन्होंने पूरे घर को घेर लिया है। मैं अभी रसोई की खिड़की से बाहर देख रही थी—सामने सिपाही खड़े दिखलायी दिये। और यही हाल इधर है—इधर भी सिपाही खड़े हुए हैं।

आशावादी : सिपाही...

भयभीत महिला : रोशनी गुल कर दो।

आशावादी **(खिड़की से बाहर की तरफ झाँकते हुए)** : ये सब मामूली सिपाही हैं।

संशयवादी : तो क्या आपका ख्याल है कि आपके लिए वे कोई गैरमामूली सिपाही भेजेंगे?

आशावादी : लग रहा है कि वे किसी चीज का इन्तजार कर रहे हैं।

भयभीत महिला : भगवान के लिए, रोशनी गुल कर दो!

संशयवादी : लेकिन अँधेरे में तो तुम्हें और भी डर लगेगा!

बुनाई करनेवाली महिला : मैं डरती नहीं। लेकिन मेरा भी ख्याल है कि अच्छा यही होगा कि हम रोशनी बुझा दें और तेल का कोई लैम्प जला लें। लीदिया मिखाइलोव्ना, तुम्हारे पास लोट्टो है?

ज़बेलिना : लोट्टो? किसलिए?

बुनाई करनेवाली महिला : अगर वे हम लोगों की जाँच-पड़ताल करने आयें तो हम कह देंगे कि हम लोग लोट्टो खेल रहे हैं!

आशावादी : बहुत खूब, लोट्टो ही सही। बस, हिम्मत न हारना। लोट्टो की बाजी ले आओ।

भयभीत महिला : लेकिन रोशनी तो बुझा दो!

ज़बेलिना **(बावर्चिन से)** : प्रास्कोव्या, तेलवाला लैम्प निकाल लाओ। **(रोशनी बुझा देती है)** मैं लोट्टो की बाजी ले आती हूँ। **(जाती है)**

(अन्धकार। खामोशी)

बुनाई करनेवाली महिला : मेरा ख्याल है कि हम पैसों से खेलें।

भयभीत महिला : अरे नहीं! ऐसा हम नहीं कर सकते। वह तो जुआ खेलना होगा!

बुनाई करनेवाली महिला : अच्छा, तो फिर मूँगफलियों से ही सही!

संशयवादी : मूँगफलियाँ हमें कहाँ मिलेंगी?

बुनाई करनेवाली महिला : ज़बेलिना के पास जरूर थोड़ी-बहुत होंगी।

(ज़बेलिना तेल का लैम्प और लोट्टो लेकर लौटती है)

पत्ते बाँट दो। कौन बोली बोलेगा? लीदिया मिखाइलोव्ना, तुम्हारे पास मूँगफलियाँ हैं?

ज़बेलिना : मूँगफलियाँ अब कौन खाता है!

भयभीत महिला : मुझे बैग दे दो। मैं बोली बोलूँगी।

ज़बेलिना : माशा अब जल्दी ही लौट आयेगी। वह कुछ न कुछ पता लगाकर रहेगी।

भयभीत महिला : बाईस... छः... इकानवे।

(बावर्चिन अन्दर आती है)

बावर्चिन : अब वे सड़क के उस पार तक आ गये। गुस्से से आगबबूला हुए जा रहे है... हमारी खिड़कियों की तरफ घूर रहे हैं।

ज़बेलिना : प्रास्कोव्या, तुम भोजन-कक्ष की खिड़की से उन्हें देखती रहो... अगर वे यहाँ आयें तो कह देना कि घर में कुछ मेहमान आये हुए हैं।

सब एकसाथ : नहीं, नहीं!

ज़बेलिना : अच्छा, फिर बेहतर यही होगा कि कुछ न कहो।

भयभीत महिला : चवालीस... छब्बीस...

आशावादी : मेरा सेट पूरा हो गया...

भयभीत महिला : तेरह... इकसठ... इकासी...

बावर्चिन : मालूम होता है वे चले गये। (खिड़की के पास जाती है) नहीं... वे यहाँ इसी नुक्कड़ पर आ गये हैं।

संशयवादी : बन्दूकों के साथ?

बावर्चिन : हाँ, बन्दूकों के साथ।

(संशयवादी लैम्प का फूँककर बुझा देता है)

भयभीत महिला : बारह... तेरह... पन्द्रह... किसी के कदमों की आहट सुनाई पड़ रही है। ओह, मुझसे अब और नहीं सहा जाता! कोइ आ रहा है... बत्ती जलाओ!

(कमरा जगमगा उठता है। दरवाजे पर ज़बेलिन खड़े हैं)

ज़बेलिना : अन्तोन?!

सब लोग : अन्तोन इवानोविच?!

ज़बेलिना : यह तुम्हीं हो?!

ज़बेलिन : हाँ।

ज़बेलिना : अन्तोन... वहाँ क्यों खड़े हुए हो! अन्दर आओ, बैठो! ओह, मेरे प्यारे! माशा! वह कहाँ है? ओह, मैं फिर भूल गयी! बैठते क्यों नहीं, अन्तोन? यहाँ आओ! मैं तुम्हारा आलिंगन तो कर लूँ! मेरे प्यारे अन्तोन इवानोविच... **(उनसे लिपटकर रोने लगती है)**

ज़बेलिन : रोओ मत।

ज़बेलिना : माफ करो। मैं समझी थी कि तुम गये, अब तुम्हें कभी नहीं देख पाऊँगी... मैं समझ नहीं पाती थी कि क्या करूँ। कितनी भयानक बात थी! वह... पर हुआ क्या? क्या तुम्हें गलती से पकड़ लिया गया था?

ज़बेलिन (अर्थपूर्ण ढंग से) : यही तो सवाल है जिसका कल मुझे जवाब देना है।

ज़बेलिना (और अधिक ध्यान से उनकी तरफ देखती हुई) : तुम कैसे अजीब से लग रहे हो। तुम अजीब से उत्तेजित दीख रहे हो, अन्तोन! तुम थे कहाँ?

ज़बेलिन : मुझे याद नहीं।

ज़बेलिना : फिर तुम अपनी पुरानी आदत पर आ गये : "मुझे याद नहीं!" तुम्हें कुछ भी याद नहीं रहता, कुछ भी दिखलाई नहीं देता।

ज़बेलिन : मैं देख रहा था कि जमीन मेरे पैरों के नीचे से खिसकी जा रही है। **(संशयवादी से)** साल भर बूँद-बूँद करके मेरा खून कौन निचोड़ रहा था? क्यों? उन्होंने मुझे गिरफ्तार किया? नहीं, वे ज़बेलिन को जानते हैं! पहले वे सोचते थे कि मुझे गोली मार दें, लेकिन ऐसा उन्होंने नहीं किया, क्योंकि अन्तोन ज़बेलिन केवल एक है। तुम इस तरह घूर क्यों रहे हो? क्या मुझे पहचाना नहीं? इसका मतलब क्या होता है—क्या मैं ज़बेलिन नहीं लगता?

ज़बेलिना : अन्तोन, तुम तो पहेलियाँ बुझा रहे हो।

ज़बेलिन : घबराओ मत। वह मेरी बात को अच्छी तरह समझते हैं।

ज़बेलिना : तुम थे कहाँ?

संशयवादी : आपको वे कहाँ ले गये थे?

आशावादी : आप ठीक तीन घण्टे वहाँ रहे।

ज़बेलिन : तीन घण्टे नहीं, तीन साल।

ज़बेलिना : फिर पहेलियाँ!

ज़बेलिन : मुझे फील्ड-मार्शल बना दिया गया है और हुक्म दिया गया है कि हिन्दुस्तान को फतह करो!

(माशा दौड़ती हुई अन्दर आती है)

माशा : पापा! **(दौड़ती हुई ज़बेलिन के पास जाकर उनसे लिपट जाती है)**

ज़बेलिन : देखो, तुम भी रोओ-धोओ मत... ओह, तुम्हारा दिल कितनी जोर से धड़क रहा है... अपने चिड़चिड़े बाप के लिए अफसोस कर रही हो? तुम उसे प्यार करती हो?

माशा : हाँ, मैं उन्हें बहुत प्यार करती हूँ... मुझसे जितनी तेज दौड़ा गया दौड़ती रही। मुझे किसी ने कुछ नहीं बताया... जब मैं वापिस लौटी तो बाहर खड़ी थी, अन्दर आने में डर लग रहा था... मैं सोच रही थी... मेरे प्यारे पापा!

संशयवादी : लेकिन आप थे कहाँ?

ज़बेलिन : क्रेमलिन में।

संशयवादी : बस?

ज़बेलिन : बस।

ज़बेलिना : हमें पूरी बात बताओ।

ज़बेलिन : वहाँ कोई बात-वात नहीं थी।

बुनाई करनेवाली महिला : अन्तोन इवानोविच को मैं अच्छी तरह समझती हूँ। वह कितने रोमैन्टिक ढंग से वापिस लौट आये हैं... इसे सिर्फ मैं ही समझती हूँ। अन्तोन इवानोविच... तुम कितने रहस्यपूर्ण ढंग से बातें कर रहे हो... तुम रोमैन्टिक मूड में हो... अन्तोन, मैं तुम्हारी तारीफ करती हूँ। अच्छा, अब सवाल पूछकर इन्हें परेशान न करो।

ज़बेलिन : लीदिया मिखाइलोव्ना, सुबह से मैंने कुछ नहीं खाया। यह भी कैसी बात है—घर मेहमानों से भरा हुआ है, और मेज खाली है। हमारे पास काफी सामान है : हम अपनी मेज को मास्को के पारम्परिक ढंग से सजा सकते हैं। हमारे विद्यार्थी जीवन की उस शराब को निकालो, वह जो हमने पचास कोपेक फी बोतल के हिसाब

से खरीदी थी।

ज़बेलिना : अभी लायी। कृपया आप सब लोग खाने के कमरे में आ जाइये।

संशयवादी : लेकिन वह मेरे ऊपर इस तरह क्यों टूट पड़े—जैसे कि आज रात जो कुछ हुआ है उस सबके लिए मैं ही जिम्मेदार हूँ।

आशावादी : अगर सारा मामला शराब के गिलास के साथ खत्म हो जाता है, तो फिर शिकायत के लिए जगह कहाँ रह जाती है, मेरे दोस्त?

(ज़बेलिन और माशा को छोड़कर सब लोग बाहर चले जाते हैं)

ज़बेलिन : माशा, तुम मेरे पास बैठो... तुम्हें मैं जाने नहीं दूँगा। **(एक किताब उठा लेते हैं)** 'एलेक्ट्रिक इन्जीनियरिंग'—लेखक अन्तोन ज़बेलिन। माशा, तुम इतनी नन्ही-सी थीं जब मैंने इसे लिखा था। तुम मेरे पास आ जाती थीं और कहती थीं : "पापा, तुम लिख रहे हो? मैं तुम्हारे पास यहीं बैठूँगी..." और तुम यहाँ आकर बैठ जाती थीं, फिर मेरी पीठ पर चढ़ जाती थीं, और हम दोनों कमरे में टहलने लगते थे। अब तुम बड़ी हो गयी हो—एक समझदार नवयुवती हो, और तुम्हारा पिता थोड़ा-थोड़ा तुमसे डरने लगा है। तुम ये कौन-से कपड़े पहने हुए हो? अपने स्नेही मित्र के लिए सज-धज कर तैयार हुई हो?

माशा : रोज काम पर जाते समय मैं इन्हीं कपड़ों को पहनती हूँ। किसी प्रशंसक को प्रसन्न करने के लिए आज तक कभी मैंने कपड़े नहीं पहने। पापा, तुम बेकार की बातें न किया करो!

ज़बेलिन : मैं मूर्ख बुड्ढा हूँ! अच्छा, यह तो बताओ—मिस्टर रोमियो कहाँ है?

माशा : कौन-सा रोमियो?

ज़बेलिन : आधुनिक, सोवियत-मार्का रोमियो! वह नाविक कहाँ है?

माशा : उसकी तुम्हें क्या जरूरत पड़ गयी?

ज़बेलिन : अब मैं उससे बात करना चाहूँगा।

माशा : पापा, तुम्हें मालूम नहीं कि क्या हो गया है... मैंने इस बीच क्या कर डाला है, नहीं तो तुम ऐसी बातें न करते! जब वे लोग तुम्हें पकड़कर ले गये तो मुझे लगा कि यह सब उसी की कारस्तानी थी। मैंने उसे बहुत फटकारा। अब हम लोगों ने सम्बन्ध तोड़ लिये हैं...

ज़बेलिन : मूर्ख बच्ची! तुझे कैप्टन अलेइस्की के साथ शादी कर लेनी चाहिए थी... कर ली होती तो इस वक्त तुम पेरिस में रहती होतीं।

माशा : मैंने सुना है कि कैप्टन अलेइस्की पेरिस में बलालाइका बाजा बजाकर रोजी कमाता है।

ज़बेलिन : मास्को में दियासलाइयाँ बेचने से पेरिस में बलालाइका बजाना कहीं बेहतर है।

माशा : तो फिर तुम क्यों नहीं पेरिस चले गये? तुम्हें भी तो जाने का मौका था।

ज़बेलिन : क्योंकि मैं एक रूसी हूँ।

माशा : और मैं क्या हूँ?

ज़बेलिन : तुम औरतें गिरगिटों की तरह होती हो। हेलेन ट्रोजनों के साथ खूब मजे में रहती थी। सलाम्बो एक बर्बर आदमी पर आशिक हो गयी थी। तुम एक नाविक पर रीझी हुई हो। लेकिन मैं शलजम के बिना नहीं रह सकता! और पेरिस में वे लोग खाने के लिए मेंढक देते हैं...**(यकायक)** क्या मेरी जिन्दगी सचमुच खत्म हो गयी? माशा, मेरी बेटी, मेरी तरफ देखो—क्या मेरी जिन्दगी वाकई खत्म हो गयी?

माशा : पिताजी, बात क्या है? मुझे ठीक-ठीक बताओ। तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि तुम्हारी जिन्दगी खत्म हो गयी?

ज़बेलिन : अभी तक मैं ऊट-पटाँग बातें करता आया हूँ। तुम समझती हो, है न? असल बात यह है कि मैं क्रेमलिन हो आया हूँ... तुम कुछ कहती क्यों नहीं? जानती हो कि वहाँ क्या हुआ? मैं हमेशा अपने को एक वैज्ञानिक, एक निर्माता समझता आया हूँ। जीवन भर मैंने अपने काम के सिलसिले में सख्त मेहनत की है। उसी को लेकर उत्तेजित रहा हूँ। मैंने सदा नयी-नयी योजनाएँ बनायी हैं। और अब वह सब बेकार हो गया!

माशा : पापा, मुझे ठीक-ठीक बताओ हुआ क्या है?

ज़बेलिन : उन लोगों ने तुम्हारे ज़बेलिन को चक्कर में डाल दिया है, उसे गूँगा बना दिया है... जब मैं घर वापिस लौट रहा था, तभी उनके विचारों के पूरे अर्थ को मैं समझ सका, उनकी विराटता को अच्छी तरह हृदयंगम कर सका।

माशा : मुझे शान्तिपूर्वक बतलाओ। तुम कह क्या रहे हो यह मैं समझ नहीं पा रही हूँ। बात क्या है?

ज़बेलिन : माशा, जल्दबाजी न करो। उसके बारे में अच्छी तरह से सोचने के लिए कल तक का वक्त है। मुझे कल जवाब देना होगा...

माशा (खुशी से भरकर) : क्या वे तुम्हें काम दे रहे हैं?

ज़बेलिन (आहिस्ता से फुसफुसाते हुए) : हाँ, अब मैं दियासलाइयाँ नहीं बेचूँगा। मैं उनसे वादा कर आया हूँ।

माशा : खुदा का शुक्र है!

ज़बेलिन : तुम भी! माशा, मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ, सिर्फ तुमसे... एकान्त में : तुम क्या सोचती हो—इस समय और इस युग में क्या मैं किसी काम आ सकता हूँ? या मैं खत्म हो गया?

माशा : पापा, ऐसी बात तुम जबान पर भी कैसे ला सकते हो? कौन कहता है कि तुम खत्म हो गये? मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ... तुम बेकार हो गये होते तो क्या वे लोग तुम्हें क्रेमलिन बुलाते?

ज़बेलिन : नहीं, तुम तो दूसरी ही दिशा में बह गयीं। वे लोग ज़बेलिन को जानते हैं, तुम अपने बाप को जानती हो।

माशा : तुम्हें याद है उस बार हम लोगों में कैसी लड़ाई हो गयी थी? लगता था कि हमेशा के लिए सम्बन्ध खत्म हो गया। तुम्हें याद है वह किसलिए हुआ था?

ज़बेलिन : तुम फिर गलत समझीं! तुम अपने नाविक को मेरे साथ खड़ा करो और फिर सोचो : उसके साथ क्या मेरी निभ सकेगी? मैं तुमसे संजीदगी से पूछ रहा हूँ, सच्चाई से पूछ रहा हूँ। यह बहुत गम्भीर बात है। इसके बारे में मैं मजाक नहीं कर सकता। क्या वह नाविक और मैं एक ही जुए में जोते जाकर साथ-साथ काम कर सकते हैं? बताओ, क्या ऐसी टीम की कल्पना तुम कर सकती हो?

माशा (तेजी से) : हाँ, कर सकती हूँ। इस बात को समझा सकने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। लेकिन आप मेरी बात का विश्वास करें। इस बात का आपको विश्वास दिलाने के लिए मैं कुछ भी कुर्बान कर सकती हूँ।

ज़बेलिन : माशा... रूस—समोवारवाला रूस, पादरियों के चंगुल में फँसा रूस—इसी रूस की वे कायापलट करना चाहते हैं। वे इसका नव-निर्माण करना चाहते हैं। तुम्हारा क्या कहना है इस बारे में?!

माशा : फिर तुम पसोपेश में क्या पड़े हुए हो? पीछे की तरफ क्यों देखते हो? तुम्हें अफसोस किस चीज का है? जाओ... अपनी दियासलाइयाँ बेचो। **(नकल बनाती हुई)** ''गन्धक की बनी दियासलाइयाँ, लड़ाई से पहले की बढ़िया दियासलाइयाँ...''

ज़बेलिन : खबरदार, जो तुमने मेरा मजाक बनाने की कोशिश की!

माशा : फिर मुझे बतलाओ, तुम क्या सोच रहे हो?

ज़बेलिन : श...श... मैं तुम्हें जरूर बतलाऊँगा।

माशा : मैं तुम्हारी बात का इन्तजार कर रही हूँ, पापा।

ज़बेलिन : क्रेमलिन में अभी-अभी मैंने एक महान पुरुष के दर्शन किये थे।

(पर्दा गिरता है)

चौथा अंक

दृश्य 1

(एक बड़ा-सा पुराना हॉल। दरवाजे के पास एक कोने में एक झाड़ू तथा कूड़े का बड़ा-सा ढेर पड़ा हुआ है। दीवाल के पास एक लम्बी मेज, काले रंग की एक आराम-कुर्सी और एक मामूली-सा स्टूल रखा है। मेज पर टेलीफोन है।

ज़बेलिन सीटी बजाते हुए कमरे में टहल रहे हैं। स्टूल को उठाकर वे खिड़की के पास ले जाते हैं और उस पर बैठ जाते हैं। लेकिन एक ही सेकेण्ड बाद वे कूदकर खड़े हो जाते हैं, और झाड़ू उठाकर कोने में लगे मकड़ी के जाले की सफाई करने लगते हैं। झाड़ू को एक किनारे फेंक देते हैं और अपनी पहलकदमी शुरू कर देते हैं। माशा अन्दर आती है, चारों तरफ आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से देखती है)

ज़बेलिन : दरबान! दरबान! माननीय नागरिक दरबान, तुम कहाँ मर गये हो! वह गायब हो गया—कुछ बता भी नहीं गया कि कहाँ गया। मैं किसी को फोन करूँ... लेकिन, किसको? खुद दूजेर्जिन्स्की को, चेका से? बहुत ठीक, लेकिन मैं उनसे कहूँगा क्या? क्या यह कि दरबान मेरी बात नहीं सुनता? कैसी पागलपन की बात है! तो फिर क्या यह कहूँ कि मैं स्लाइड रूल की मदद से सरल परिकलन करने के लिए मरा जा रहा हूँ? यह भी उतनी ही सनक की बात है... नहीं, इस तरह की स्थिति की कभी भी मैं कल्पना नहीं कर सकता था! **(माशा को देखकर)** आह! तो तुम आ गयीं? देखो और तारीफ करो! एक अखिल रूसी संस्थान का प्रधान बनाकर मुझे एक महल दे दिया गया है, लेकिन दरबान भाग गया! वह कूड़े की सफाई करना नहीं चाहता, क्योंकि यहाँ उसे कोई कुछ देता नहीं। बाजार में कपड़े-लत्ते बेचकर वह ज्यादा कमा लेता है।

माशा : यह आराम-कुर्सी भी कैसी विचित्र है!

ज़बेलिन : मैं अभी-अभी उसे ऊपर की कोठरी से निकाल लाया हूँ। इसकी बनावट शुद्ध गोथिक शैली की है। पुराना कचरा है। सायबान में एक बग्घी पड़ी है जिस पर शाही वंश-चिन्ह बना है। इस मकान में मैं खुद भी एक प्रदर्शनीय वस्तु जैसा ही महसूस करने लगा हूँ। मोटे-मोटे चूहे, मुनाफाखोरों की तरह, चारों तरफ

बराबर चौकड़ियाँ भरते रहते हैं। वे मेरी खिल्ली उड़ाते हैं।

माशा : अब बेकार की चीजें सोचकर अपना दिमाग न खराब करो।

ज़बेलिन : मैं कोई देवता नहीं हूँ, न ऐसा मूर्ख ही हूँ, जो यह मान ले कि जिन्दगी मेरे ऊपर एक बड़ी मेहरबानी है! जाओ, तुम घर जाओ, तुम्हारे पास कहने को मौलिक कोई चीज नहीं है।

माशा : अच्छा, मैं चली जाऊँगी, लेकिन तुम क्या करने जा रहे हो?

ज़बेलिन : ऐसी परिस्थितियों में आदमी कर ही क्या सकता है? क्या मैं किंग लियर के उस दृश्य का अभिनय करूँ, जिसमें वह पागल हो जाता है? वह कमाल का दृश्य है।

माशा : मैं क्या कहूँ! तुम्हें इस दशा में देखकर मैं तुम्हारी तारीफ नहीं कर सकती।

ज़बेलिन : कोई परवाह नहीं, पर मैं तो तुम्हारी पूजा करता हूँ!

माशा : तुम कितनी अजीब बातें कर रहे हो!

ज़बेलिन : और तुम कितने प्रेम से बोल रही हो!

माशा : मैं तुम्हें जानती हूँ! इस मनोदशा में तुम कुछ भी कर सकते हो—काम छोड़ सकते हो, चिढ़कर कोई खराब-सी चिट्ठी लिखकर चले जा सकते हो। कठिनाइयाँ आती हैं, तो उनको दूर किया जाना चाहिए, उनका सामना किया जाना चाहिए।

ज़बेलिन : कैसी सारगर्भित बात है! इससे पहले इसे मैंने कभी नहीं सुना था।

माशा (यकायक अपने पिता के स्वर की नकल करती हुई) : तुम्हें देखकर मुझे शर्म आती है।

ज़बेलिन : क्या कहा?

माशा : हाँ, मुझे शर्म आती है और नफरत होती है! तुमने उनसे वादा किया था...

ज़बेलिन : ठीक है... मैंने किया था वादा...

माशा : और... नहीं, नहीं, मिनट भर रुको... मैं भी जानती हूँ कि क्या कहना चाहिए! तुम प्रसन्न थे कि तुम काम करने के लिए तैयार हो गये थे। हम देख रहे थे कि तुम में फिर जीवन लौट आया है, तुम फिर पहले जैसे हो गये हो।

ज़बेलिन : तुम कल की बात कर रही हो, और मैं तुम्हें आज की बात बता रहा हूँ.

(माशा कुछ कहने वाली है)

बीच में बात मत काटो! तुम्हारी खोपड़ी में क्या यह नहीं घुसता कि क्रोध से मैं

इसलिए पागल हो रहा हूँ कि मैं फौरन, जैसा कि लेनिन ने कहा था, इसी वक्त, काम नहीं शुरू कर पा रहा हूँ? हाँ, मैंने उनसे वादा किया था और उसे पूरा करने के लिए मैं तैयार हूँ... काम में जुटने के लिए मैं बेचैन हो रहा हूँ। लेकिन उसे मैं दूसरे लोगों के जरिए, अन्य प्राणियों के सम्पर्क में रहकर ही तो कर सकता हूँ, और यहाँ—यहाँ कौन है? हलो! सुना तुमने? सिर्फ एक सूनी प्रतिध्वनि गूँज रही है!

(दरवाजे से रिबाकोव अन्दर आता है। उसके हाथ में एक टाइपराइटर है)

अच्छा, तो आप हैं! निस्सन्देह, वही तो हैं! मामला क्या है, क्या तुम लोगों ने पहले से यहाँ मिलने की बात तय कर ली थी? क्यों? सच है न? मान लो, इसमें कोई हर्ज नहीं है। और, जनाब, जहाँ तक आपकी बात है, आप मुझे अभिवादन कर लेंगे तो छोटे नहीं हो जायेंगे। बहरहाल, आज फिर मुझ पर किसलिये आपकी कृपा हुई है?

रिबाकोव : मुझे आपके साथ काम करने के लिए भेजा गया है।

ज़बेलिन : आपको यहाँ तैनात किया गया है? जरूर। आइये, मेरी कुर्सी पर तशरीफ रखिये! पधारिये और हुक्म कीजिये।

रिबाकोव : इतना व्यंग्य करने की कोई जरूरत नहीं। यहाँ मुझे आपकी मदद करने के लिए भेजा गया है।

ज़बेलिन : आप यह कौन चीज लाये हैं? टाइपराइटर?

रिबाकोव : मैंने इसे रास्ते में लिया था... यानी उधार माँग लिया था...

ज़बेलिन : शायद किसी से छीन लिया है?

रिबाकोव : एक तरह से...

ज़बेलिन : तो इसे कहीं रख दीजिये।

रिबाकोव : हम अभी सब ठीक-ठाक कर लेंगे। अभी तो यह सब आरजी ही है।

ज़बेलिन : बिल्कुल नयी मशीन है... रैमिंगटन। लेकिन टाइप कौन करेगा, यह तो बतलाइये।

रिबाकोव : मैं एक टाइपिस्ट भी उधार ले आया हूँ। वह आती ही होगी।

ज़बेलिन : माशा, देखो। अब कुछ आफिस जैसा लगने लगा... **(रुक जाता है)** नहीं, आफिस की तरह बिल्कुल नहीं।

माशा : अच्छा, तो अब मैं जा रही हूँ।

रिबाकोव : इस तमाम कूड़े को तो देखिये! **(ज़बेलिन से)** आप अगर अनुमति दें तो मैं यहाँ जरा सफाई कर दूँ... चारों तरफ कितना गन्दा है!

ज़बेलिन : आप कितने भोले बन रहे हैं! जनाब, आप बेवकूफ किसे बना रहे हैं?

रिबाकोव : बेवकूफ क्यों? इस हालत में तो यहाँ काम किया नहीं जा सकता।

ज़बेलिन (सख्ती से) : नौजवान, तुम दोनों यह क्यों जताना चाहते हो कि तुम लोग आपस में मिलते नहीं? चोरों की तरह मुझसे छिपकर क्यों मिलते हो?

माशा : यह सच नहीं है। मैं तुमसे कह चुकी हूँ... तुम जानते हो, मैं कोई चीज छिपाती नहीं हूँ। और मैंने ऐसा कभी सोचा भी नहीं था... संक्षेप में, मुझे कुछ नहीं चाहिए। अलविदा।

रिबाकोव : क्या मैं भी एक शब्द कह सकता हूँ?

ज़बेलिन : एक नहीं, जितने चाहो।

रिबाकोव : आदमी को अपनी चादर देखकर पैर फैलाना चाहिए। मारीया अन्तोनोव्ना ने कहा है कि उनसे प्रेम करने के बहाने मैं आपकी गतिविधियों पर गुप्त दृष्टि रखा करता था—इसलिए मुझे बुरा लग गया है। जासूसी करने की मुझे जरूरत ही क्या थी?

ज़बेलिन : हाँ... फिर?

रिबाकोव : वास्तव में, मुख्य बात वह नहीं है। असल बात यह है कि हमारी शिक्षा, हमारे लालन-पालन, आदि में बहुत फर्क है। हमारे बीच एक बड़ी खाई है। इसीलिए मैंने तय कर लिया कि यह किस्सा यहीं खत्म किया जाये। अच्छा, तो अब मैं इस कूड़े की सफाई के मोर्चे पर जुट जाऊँ। **(दरवाजे की ओर जाता है)**

माशा : रिबाकोव... **(वह उसकी तरफ मुँह करता है)** तुम ठीक कहते हो... हमारे बीच एक पूरी खाई है। तुमने बड़ी अक्लमन्दी का फैसला किया है। मैंने अकारण ही तुम्हारा अपमान किया था—और उसके लिए मैं माफी भी नहीं माँगना चाहती। लेकिन तुमने मेरे साथ हमेशा इतना उदार और शिष्ट व्यवहार किया है। अब मैं तुमसे एक आखिरी चीज और माँगना चाहती हूँ—तुम यहाँ से बिल्कुल चले जाओ। मुझे कभी न दिखलाई पड़ना। तुम्हारे बारे में मैं कभी कुछ न सुनूँ... **(दौड़कर वह बाहर निकल जाती है)**

ज़बेलिन : और यह आदमी यहाँ खड़ा हुआ चुपचाप मुँह देख रहा है... अरे दौड़, जा, उससे माफी माँग...

रिबाकोव : हाँ, शायद मुझे यही करना चाहिए।

ज़बेलिन : हे देवताओ! इसकी बात सुनो! कहता है, "शायद मुझे यही करना चाहिए"... दौड़, भले आदमी, जा, उसको पकड़!

(रिबाकोव दौड़ता हुआ बाहर जाता है)

आदमी कर ही क्या सकता है? इसी का नाम जीवन है... जीवन, तुम्हारा जायका बहुत तेज है, तुम्हारे अन्दर मिर्च भी है और कड़ुवाहट भी, लेकिन कोई चारा नहीं। तुम जैसे हो वैसा ही तो लोगों को ग्रहण करना पड़ता है। माशा बेचारी सचमुच ही प्रेम में पड़ गयी है। कौन है?

(दोपहर का खाना लेकर ज़बेलिना अन्दर आती हैं)

आओ, आओ।

ज़बेलिना : मैं तुम्हारा खाना लायी हूँ।

ज़बेलिन : मैं बहुत खुश हूँ। बहुत-बहुत शुक्रिया।

ज़बेलिना : बैठ जाओ और खा लो। नैपकिन ले लो और खा लो—उसी तरह जिस तरह अपने पुराने दफ्तर में खाते थे।

ज़बेलिन : मुझे भूख नहीं है।

ज़बेलिना : तुम्हारी मसखरी से मैं ऊब गयी हूँ। बैठो और खा लो।

ज़बेलिन : हुश, लीदिया, हुश! अच्छा, मैं खा लूँगा।

ज़बेलिना : चुपचाप बैठो और खाना खाओ।

ज़बेलिन : खा रहा हूँ।

ज़बेलिना : अच्छी तरह चबा-चबाकर खाओ।

ज़बेलिन : चबा तो रहा हूँ... सुनो, सड़क पर तुम्हें कोई मिला था?

ज़बेलिना : सड़कों पर तो न जाने कितने लोग होते हैं।

ज़बेलिन : बेशक...

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच, भगवान के लिए अब काम करो, किसी से लड़ाई-झगड़ा न करना।

ज़बेलिन : मैं किसी से झगड़ा नहीं करूँगा।

ज़बेलिना : अपने मन को शान्त करो। ठीक से काम करो और ऐसा सोचो कि यह सब... यह तमाम गड़बड़ी तथा अन्य चीजें ठीक हो जायेंगी, सुधरकर और अच्छी बन जायेंगी।

ज़बेलिन : जरूर, जरूर।

ज़बेलिना : काश, तुम समझ सकते कि तुम्हें फिर से काम में लगा हुआ देखने के लिए मैं कितनी व्याकुल हूँ!

ज़बेलिन : तुम मुझे दुलारना बन्द करो! मैं कोई नन्हा बच्चा नहीं! तुम व्याकुल हो! और मैं? मैं क्या हूँ—भूसे का बोरा? लकड़ी का निर्जीव कुन्दा? मुझे उत्साहित करने की कृपा के लिए धन्यवाद! पर अब बहुत हो गया।

(माशा अन्दर आ जाती है)

तुम फिर आ गयीं? लौट किस लिए आयीं?

माशा : मम्मी के लिए... मैं इन्हें घर ले जाऊँगी।

ज़बेलिन : मम्मी के लिए...

(रिबाकोव आ जाता है)

आह, अब पवित्र परिवार पूरा हो गया! बस, यीशु मसीह की जगह—एक नाविक है!

रिबाकोव (गुस्से से उबलते हुए) : आप के हँसी-मजाक से अब मैं थक गया। आखिर, मैं भी यहाँ काम करने के लिए आया हूँ। यह देखिये, यह मेरी नियुक्ति का आर्डर है। पढ़ लीजिये। मुझे सख्त आदेश थे कि जरा भी समय खराब न करूँ। अब बताइये, हमें क्या और कैसे करना है।

ज़बेलिन : बहुत अच्छा। आप क्या है—इलेक्ट्रिकल इन्जीनियर? कम से कम मामूली इलेक्ट्रीशियन तो होंगे ही?

रिबाकोव : फ्यूज जल जाये तो मैं दुरुस्त कर सकता हूँ।

ज़बेलिन : रूस के विद्युतीकरण की योजना पर काम करने के लिए तो इतना काफी नहीं है।

रिबाकोव : अपने का उपयोगी बनाने के तरीके मैं ढूँढ़ निकालूँगा।

ज़बेलिन : तब तो काम और भी शानदार हो जायेगा। पहले इस खाली कमरे मे केवल एक ही बेवकूफ सीटी बजाता घूमता था, अब उनकी संख्या दो हो जायेगी।

रिबाकोव : मैं सीटी-वीटी बजाने नहीं जा रहा हूँ और इससे भी बड़ी बात यह है कि मैं आपको भी सीटी नहीं बजाने दूँगा। पहले यह बताइये—आपको यहाँ क्या दिक्कत हो रही है?

ज़बेलिन : कुछ नहीं।

रिबाकोव (परेशानी में पड़ता हुआ) : जी? क्या कहा आपने?

ज़बेलिन : आदि काल में भी कुछ नहीं था! क्या बाइबिल यह नहीं बताती?

ज़बेलिना (इशारे से माशा को अलग बुलाकर) : माशा, हम लोग अभी नहीं जा सकते... चलो, जरा दूसरे कमरों को भी देख आयें...

(वे दोनों चुपचाप वहाँ से चली जाती हैं)

रिबाकोव (विचारों में खोया खोया चारों तरफ नजर डालता हुआ) : जहाँ

तक मुझे दिखलाई देता है, लगता है कि आप, मैं और यह थोड़ा-सा फर्नीचर–यही हमारा दफ्तर है। हमारे पास एक टेलीफोन भी है। आपको कोई सवारी भी दी गयी है?

ज़बेलिन : हाँ। सायबान में एक बग्घी रखी है–बगैर घोड़ों की।

रिबाकोव : उससे तो हम बहुत दूर नहीं जा सकेंगे। लेकिन, जो भी हो, आप किसी रुकावट को आड़े न आने दीजियेगा, किसी चीज से हार न मानियेगा... एक बार मैंने एक शहर पर कब्जा किया, उसकी नगर कौंसिल में पहुँचा और वहाँ के खजाने को जब्त कर लिया। पर खजाने में पीतल के सिर्फ दो कोपेक निकले। उन्हीं दो कोपेकों की मदद से मैंने वहाँ सोवियत सत्ता चालू कर दी थी।

ज़बेलिन : यह बात बहुत मनोरंजक है! यह आपने कैसे किया था?

रिबाकोव : तमाम–छोटे, मंझोले और बड़े–पूँजीपतियों को मैंने स्थानीय थियेटर में इकट्ठा किया और वहीं मंच पर एक मशीनगन तथा एक अलार्म घड़ी रख दी। तीन घण्टे बाद जब अलार्म बजना शुरू हुआ तो उन लोगों ने तीस लाख रूबल निकालकर मेज पर रख दिये।

ज़बेलिन : क्या अब भी आप यही करने जा रहे हैं? मास्को में जो बचे-खुचे पूँजीपति रह गये हैं उन सबको यहाँ इकट्ठा करेंगे?

रिबाकोव : नहीं...आप मुझे यह बतलाइये कि इस वक्त सबसे ज्यादा किस चीज की आपको जरूरत है?

ज़बेलिन : इन्जीनियरों, टेक्नीशियनों, ड्राफ्ट्समैनों, सिद्धान्तकारों और वैज्ञानिकों की...

रिबाकोव : बहुत अच्छा। हम फौरन उन्हें इकट्ठा करना शुरू कर देते हैं...

ज़बेलिन : आप क्या करेंगे–मशीनगन और अलार्म घड़ी लेकर सारे मास्को में घूमेंगे?

रिबाकोव : नहीं, इस मामले में मशीनगन से कोई काम नहीं बनेगा। तमाम अखबारों में मैं यह घोषणा छपवा देता हूँ कि अन्तोन इवानोविच ज़बेलिन ने काम करना शुरू कर दिया है।

ज़बेलिन : यह तो बड़ी सीधी-सी बात है।

रिबाकोव : मैं अभी जाकर पत्रकारों को सूचित करता हूँ।

ज़बेलिन : पत्रकार? क्या अब भी वे मौजूद हैं? हाँ... मैं भूल गया था कि पत्रकार तो हो ही सकते हैं। लेकिन हम उन्हें बैठायेंगे कहाँ, हमारे पास कुर्सियाँ-उर्सियाँ तो हैं नहीं।

रिबाकोव : कोई बात नहीं, वे खड़े रह सकते हैं। तो मैं टेलीफोन करता हूँ।

आप बैठकर अपनी रिपोर्ट तैयार कीजिये। हमें... यानी, आपको... व्यक्तिगत रूप से आपको तीन दिन के अन्दर साथी लेनिन के सामने रिपोर्ट देनी होंगी आपने यही वादा किया है।

ज़बेलिन : तीन दिन? तुम्हारा क्या मतलब?

रिबाकोव : हाँ, तीन दिन के अन्दर।

ज़बेलिन : तुम्हें कैसे मालूम?

रिबाकोव : मुझे मालूम है।

ज़बेलिन : भले आदमी, क्या तुम ठीक बात कर रहे हो?

रिबाकोव : एकदम ठीक।

ज़बेलिन : तब, जनाब, आपने पहले ही क्यों नहीं बतलाया था?

रिबाकोव (टेलीफोन उठाते हुए) : आप तो मेरे ऊपर इस तरह टूट पड़े कि मेरी सिट्टी ही गुम हो गयी थी।

ज़बेलिन : तुम्हारी सिट्टी? तुम्हारी सिट्टी कौन गुम कर सकता है?

रिबाकोव (फोन करते हुए) : बाईस-तेईस... क्या आप 'इजवेस्तिया' के दफ्तर से बोल रहे हैं? मैं विशेष आयोग का सेक्रेटरी हूँ। हम देश के विद्युतीकरण की एक विशाल योजना प्रस्तुत करने जा रहे हैं... शायद आपको कोई खबर नहीं मिली है? क्यों, आपको खबर होनी जरूर चाहिए थी। जी हाँ... जी हाँ... अपने एक प्रतिनिधि को यहाँ–17, सिव्सेव व्राजेक में भेज दीजिये।

ज़बेलिन (अपनी नोटबुक निकालते हुए) : लो, इन्जीनियर वोस्त्रेत्सोव का नम्बर यह है। हमारे बीच थोड़ी-सी गलतफहमी हो गयी थी... दरहकीकत, मेरे और उनके बीच थियेटर के सामने लड़ाई हो गयी थी... विज्ञान अकादमी के लिए मैंने जो रिपोर्ट तैयार की थी उसकी एक प्रति उनके पास है और मुझे उसकी जरूरत है। तुम उन्हें टेलीफोन कर दो।

रिबाकोव : चौदह-पैंतालिस।

ज़बेलिन : मेरी श्रीमती जी चली गयीं? उनसे जाने के लिए किसने कहा था? लीदिया मिखाइलोव्ना! उन्हें फौरन वापिस बुलाओ...

रिबाकोव : चौदह-पैंतालिस? क्या इंजीनियर वोस्त्रेत्सोव घर पर हैं? नहीं? तब फिर कहाँ हैं? आपको नहीं मालूम? आपका मतलब क्या है? क्या आप उनकी पत्नी हैं? वे कहाँ काम करते हैं? मैं विशेष आयोग की ओर से बोल रहा हूँ... शुक्रिया।

(ज़बेलिना और माशा तेजी से अन्दर आती हैं)

ज़बेलिना : माफ कीजियेगा... हम लोग खाने के बर्तन यहीं भूल गयी थीं।

ज़बेलिन : खाने के बर्तन... कैसे खाने के बर्तन! फौरन घर जाओ और मेरा चमड़े का वह बैग भेज दो, जो मैं लन्दन से लाया था। मेरे जरूरी कागजात उसी में हैं। माशा, कोचवान को लेकर चली जाओ और उसे ले आओ। समझीं कि नहीं?

ज़बेलिना (अपने पति के पास जाकर धीमी आवाज में) : उस बैग के बारे में क्या कहते हो... तुम जानते हो मेरा मतलब किससे है... तुम्हें उसकी जरूरत नहीं?

ज़बेलिन : वह तो मेरे पास यहीं है।

ज़बेलिना : अच्छा, समझीं... यह न सोचना कि मैं समझती नहीं... मैं सब कुछ समझती हूँ। मुझे हर चीज स्फटिक की भांति स्पष्ट दिखलाई दे रही है। माशा, चलो चलें।

माशा (दरवाजे के पास रुककर) : पापा, मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ! और रिवाकोव, तुमसे भी मुझे प्रेम है। **(रिवाकोव को प्यार करती हुई)**

ज़बेलिन : तुम्हें वोस्त्रेत्सोव मिले? नौजवान, मालूम होता है कि तुम्हारा रक्त-चाप बहुत बढ़ गया है।

रिबाकोव : क्या इसमें भी कोई शक है... लेकिन फिक्र न कीजिये, वोस्त्रेत्सोवको मैं ढूँढ़ निकालूँगा चाहे मुझे हर कुएँ में बाँस डालने पड़े।

(टाइपिस्ट लड़की अन्दर आती है)

अन्तोन इवानोविच, जिस टाइपिस्ट के बारे में मैंने आपको बताया था वह यही है।

ज़बेलिन (टाइपिस्ट से) : तुम्हें हमारे साथ काम करने के लिए भेजा गया है. .. मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मेरा नाम ज़बेलिन है। देखो, हम लोग जल्दी में हैं, इसलिए अगर हम फौरन काम शुरू कर दें, तो घबड़ाना नहीं। बैठो। **(कमरे में चहलकदमी करता हुआ और जोर-जोर से सोचता हुआ)** कल्पना... कल्पना... नहीं, इस तरह नहीं। हम इस प्रकार आरम्भ करेंगे : रूस के विद्युतीकरण की कल्पना वर्तमान और भविष्य काल की महानतम कल्पना होगी... **(टाइपिस्ट से)** तैयार हो?

टाइपिस्ट : जी।

ज़बेलिन : आम तौर से मैं घूम-घूमकर ही डिक्टेशन देता हूँ। अच्छा, लिखो : "अध्यक्ष, जन कमिसार परिषद..." महोदय...

दृश्य 2

(क्रेमलिन में लेनिन का अध्ययन-कक्ष। एक अंग्रेज लेखक और एक सेक्रेटरी मौजूद हैं। वे आमने-सामने बैठ जाते हैं)

अंग्रेज : क्या इस पत्रिका के चित्रों को मैं देख सकता हूँ?

सेक्रेटरी : अवश्य।

(लेनिन का प्रवेश)

लेनिन : अफसोस है कि आपको इन्तजार करना पड़ा। **(हाथ आगे बढ़ाते हुए)** उल्यानोव-लेनिन। आपका हम हार्दिक स्वागत करते हैं।

(अंग्रेज बड़े अदब से झुककर सलाम करता है। लेनिन उससे बैठने का अनुरोध करते हैं। सेक्रेटरी बाहर चली जाती है)

बतलाइये।

अंग्रेज : यह तो आपको मालूम ही होगा कि उन किस्सों पर मैं विश्वास नहीं करता जिनमें कहा जाता है कि आप एक फ्री मेसन हैं...

लेनिन : क्या लन्दन में अब भी मेसन मौजूद हैं? कैसी मूर्खता की बात है!

अंग्रेज (अपनी गम्भीरता को कायम रखते हुए) : लेकिन मुझे लगता है कि रूसी जीवन को आप अच्छी तरह नहीं जानते। आप से मिलना बहुत कठिन होता है। न जाने कितने प्रहरी रास्ता रोके खड़े रहते हैं। आखिर अपनी जनता के साथ आप कैसे मिल पाते होंगे?

लेनिन : जनता के साथ सम्पर्क रखने में प्रहरियों से कोई बाधा नहीं पड़ती।

अंग्रेज : मैं एक किताब लिखना चाहता हूँ जिसमें मार्क्स की नीतियों की आलोचना करूँगा।

लेनिन (मुस्कराते हुए) : अच्छा, यह तो मजे की बात है।

अंग्रेज : मैं उनसे परेशान हो गया हूँ।

लेनिन : किनसे?

अंग्रेज : मैंने आपसे कहा न—मार्क्स से!

लेनिन : फिर जाइये, शुरू कीजिये!

अंग्रेज : क्या?

लेनिन : अपनी किताब।

अंग्रेज : मिस्टर लेनिन, मैं समझ नहीं पाता कि दुनिया को आप अमीरों और गरीबों में कैसे बाँट सकते हैं। यह तो बिल्कुल आदिमकालीन, भौंडी बात है। ईमानदार लोग गरीबों में भी होते हैं और अमीरों में भी। होना तो यह चाहिए कि अमीरों और गरीबों के बीच जो ईमानदार लोग हैं वे मिलकर बुद्धिसंगत समाजवाद का निर्माण करें। आपके चेहरे के भाव से ही जाहिर हो जाता है कि आपको यह विचार पसन्द नहीं है।

लेनिन : उसमें जरा भी सार नहीं है।

अंग्रेज : इस सवाल पर मैं बहस करने को तैयार हूँ।

लेनिन : आपके समय को मैं बहुत कीमती मानता हूँ—ऐसी चीजों पर बहस करके उसे खराब नहीं करना चाहता।

अंग्रेज : एक ही विचार से—बोल्शेविक सोशलिज्म के विचार से—चिपके रहना महज हठधर्मी है!

लेनिन : हमारे विचारों को गलत साबित करने के लिए आपकी सरकार ने तोपों का इस्तेमाल किया है। इस काम के लिए उसने बेतहाशा पैसा बहाया है।

अंग्रेज : मैंने उसका विरोध किया था।

लेनिन : हाँ, हाँ, मैं जनता हूँ। आप उन ईमानदार लोगों में से हैं। लेकिन आपके विरोध से कोई अन्तर नहीं पड़ा।

अंग्रेज : कोई अन्तर नहीं पड़ा...

लेनिन : और ऐसा क्यों हुआ?

अंग्रेज : क्योंकि सत्ता उनके हाथ में हैं

लेनिन : उनके पास बैंकें हैं, तोपें हैं... और आपके पास है सिर्फ आपकी ईमानदारी... घटिया से घटिया तोप के सामने भी उसकी क्या कीमत है? ज्यों ही आप अपने बुद्धिसंगत समाजवाद को शुरू करने की बात सोचेंगे, त्यों ही वे अपनी वह घटिया तोप निकाल लायेंगे और आपके मधुर समाजवादी विचार साफ हो जायेंगे! इसे मजाक मत समझिये—ऐसा बहुत मजे से हो सकता है... तब आप क्या करेंगे? आप भी गोली चलायेंगे? लेकिन वह तो बोल्शेविज्म हो जायेगा! भाग खड़ें होंगे? तब फिर आपके समाजवाद का क्या होगा?

अंग्रेज : मिस्टर लेनिन, यह तो कम्युनिस्ट प्रचार है।

लेनिन : तो क्या मैं पक्का कम्युनिस्ट नहीं हूँ?

अंग्रेज : मिस्टर लेनिन, मुझे ताज्जुब है...

(क्रेमलिन की घड़ियों से 'इन्टरनेशनल' के कुछ स्वर बज उठते हैं)

लेनिन (स्वरों को ध्यान से सुनते हुए) : किस बात पर?

अंग्रेज : पश्चिम से आनेवाले हर निष्पक्ष पर्यवेक्षक को साफ-साफ दिखलाई देता है कि आप विनाश के कगार पर खड़े हैं। फिर भी आप में मजाक करने की शक्ति बाकी है!

लेनिन (संजीदा होकर) : कृपया मुझे बताइये कि यहाँ आपने क्या देखा है।

अंग्रेज : यहाँ लोगों की दाढ़ियाँ ठीक से नहीं बनी हैं।

लेनिन : हाँ, यह ठीक है।

अंग्रेज : इसके अलावा, उन सबके कपड़े फटे पुराने हैं... इस विषय पर बात करना शायद आपको अच्छा नहीं लग रहा?

लेनिन : नहीं, नहीं, कृपया बोलते जाइये। मैं आपकी बात सुनने को बहुत उत्सुक हूँ।

अंग्रेज : हर आदमी यहाँ एक बण्डल लेकर चलता है। शुरू में तो मेरी समझ में ही नहीं आया। फिर किसी ने मुझे बतलाया कि... उसमें उसका खाना रहता है, उसका राशन... उसे वे अखबारों में लपेटकर अपने घर ले जाते हैं। सड़कों पर घूमता या टहलता कोई नजर नहीं आता। हर आदमी कहीं जाने की जल्दी में दिखलाई देता है। मक्सिम गोर्की के पास भी केवल एक ही सूट है।

लेनिन : सचमुच? क्या उन्होंने खुद आपको बतलाया है?

अंग्रेज : उनके नजदीक के लोगों ने मुझे बतलाया है।

लेनिन (चिन्तापूर्ण मुद्रा में, जैसे कि खुद अपने से बातें कर रहे हों) : हर एक को कठिन समय का सामना करना पड़ रहा है। गोर्की को भी। **(अचानक अपनी आँखें सीधे-सीधे अंग्रेज लेखक पर जमाकर उससे पूछते हैं)** आपके पास कितने सूट हैं?

अंग्रेज : मुझे ठीक-ठीक याद नहीं... हर संभ्रान्त व्यक्ति की तरह.. दस.. बारह. ..

लेनिन : आपके पास बारह हैं और गोर्की के पास केवल एक... देखिये न, कितना फर्क है! कृपया अपनी बात आप जारी रखिये।

अंग्रेज : मुझे जुकाम हो गया तो दुकानदारों के पास मुझे कोई दवा नहीं मिल सकी।

लेनिन (कड़वाहट से भरते हुए) : यह स्थिति सचमुच बुरी है... मैं जानता हूँ,

यह स्थिति भयंकर है।

अंग्रेज : मैंने ऐसी रोटी खायी है जो कुत्तों तक के खाने योग्य नहीं थी, और मेरे सुनने में आया है कि वोल्गा क्षेत्र के किन्हीं स्थानों पर लोग एक दूसरे को खाये जा रहे हैं। क्या यह सच है?

लेनिन : सच है।

अंग्रेज (भावुकता से) : सर्वनाश को रोक सकना मानव शक्ति से परे है! जल्दी ही देहातियों को छोड़कर रूस में कोई नहीं बचेगा। रेलों को जंग लग जायेगी, क्योंकि आपके शहर खत्म हो चुके होंगे। मैं देख रहा हूँ कि रूस का भविष्य अन्धकारमय है, विपत्ति, विनाश—इनके अलावा कुछ शेष नहीं रह जायेगा...

लेनिन (सरल भाव से, सोचते हुए) : हाँ, शायद लोगों को ऐसी भी भयानक तस्वीर दिखलाई देती है... हम अन्धकार में... हाँ, परेशानियाँ हैं। मैं इससे इन्कार नहीं करता। और लोगों को सम्भवतः ऐसी ही तस्वीर दिखलायी देती है।

अंग्रेज : मैंने सुना है आप रूस के विद्युतीकरण की कोई योजना बना रहे हैं।

लेनिन (आश्चर्य से) : आपने यह कहाँ सुना?

अंग्रेज : मेरी एक सज्जन से बातचीत हुई थी। वह...

लेनिन : मैं समझ सकता हूँ वह कौन थे। उस सज्जन ने आपसे क्या कहा?

अंग्रेज : वह एक हँसोड़ आदमी हैं, मजाक करते हैं। वह उसे बिजली की कपोल-कथा कहते हैं।

लेनिन : हाँ, एक हँसोड़ व्यक्ति!

अंग्रेज : मिस्टर लेनिन, आप एक स्वप्न-द्रष्टा हैं। आपके सामने निस्सीम सपाट और बर्फीला देश फैला हुआ है। इसकी आबादी यूरोपियाई कम है, एशियाई ज्यादा। यह भारी-भरकम देश भूख, ठण्ड और पीड़ा से कराह रहा है... और आप उसे बिजली देने का, उसका विद्युतीकरण करने का स्वप्न देख रहे हैं! आप एक विचित्र स्वप्न-द्रष्टा हैं, मिस्टर लेनिन!

लेनिन : आप आज से दस वर्ष बाद आकर हमसे मिलियेगा।

अंग्रेज : आज से दस वर्ष भी क्या आप यहाँ रहेंगे?

लेनिन (चुहल के ढंग से) : जरूर। आपको यकीन नहीं होता? आइयेगा और तब देखियेगा कि हम यहीं मौजूद हैं। हाँ, मैं एक स्वप्न-द्रष्टा हूँ, और मेरा ख्याल है कि अब अनन्त काल तक हम यहीं रहेंगे।

अंग्रेज : अगर आपका ऐसा विश्वास है, तो आप जरूर कोई चीज छिपा रहे होंगे।

लेनिन : बात बिल्कुल उल्टी है। हम तो सब कुछ साफ-साफ कहते हैं... दरअसल, जरूरत से ज्यादा साफ-साफ!

अंग्रेज : अगर यह बात है तो कृपया मुझे बतलाइये कि ऐसा विश्वास करने और स्वप्न देखने का क्या आधार है?

लेनिन : अगर मैं आपको बतलाऊँगा तो आप नाराज हो जायेंगे। आप कहेंगे कि यह तो आम कम्युनिस्ट प्रचार है। मैं मजदूर वर्ग में विश्वास रखता हूँ, आपकी उसमें आस्था नहीं है। मैं रूसी जनता में विश्वास करता हूँ, आप में उसे देखकर आतंक और घृणा पैदा होती है। आप पूँजीपतियों की ईमानदारी में विश्वास करते हैं, मेरा उसमें विश्वास नहीं है। आपने समाजवाद को एक साफ-सुथरी, सुन्दर, बड़े दिन के खुशनुमा दरख्त जैसी वस्तु मान रखा है, मैं सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व में विश्वास रखता हूँ। अधिनायकत्व शब्द सख्त है, उससे खून और दमन का आभास होता है। यह शब्द ऐसा नहीं है कि उसका हल्के-फुल्के ढंग से इस्तेमाल किया जाये, लेकिन उसके बिना कुछ हो नहीं सकता। न विद्युतीकरण का स्वप्न दखा जा सकता है, न सोशलिज्म और न कम्युनिज्म का... समय, इतिहास की गति ही बतलायेगी कि हममें से कौन सही है...

अंग्रेज : आश्चर्यजनक है आपका विश्वास... उसे देखकर झुंझलाहट होती है। आपकी बात बुद्धि के परे है! यहाँ, आपके सामने विपत्तियों और विभीषिकाओं का एक अथाह कुआँ है और आप विनाश के कगार पर विद्युतीकरण की बात कर रहे हैं... मैं इसे नहीं समझ सकता!

(क्रेमलिन की घण्टियों से फिर 'इन्टरनेशनल' की कुछ कड़ियाँ बज उठती हैं)

लेनिन : दस वर्ष बाद आकर देखियेगा...

अंग्रेज : नहीं, आप कोई चीज छिपा रहे हैं। आप जरूर कोई ऐसी चीज जानते हैं जिसे पश्चिम के हम लोग नहीं जानते, बस आप उसे बताना नहीं चाहते।

लेनिन : मैं आपसे सच्चे दिल से कहता हूँ कि हम कोई चीज नहीं छिपा रहे हैं। सब चीजों को हम बिल्कुल साफ-साफ सामने रख रहे हैं।

अंग्रेज : आप थके हुए हैं। यह बात जब आप अन्दर आये थे, तभी मैंने महसूस की थी... गुडवाई, मिस्टर लेनिन! इस भेंट के लिए धन्यवाद। हो सकता है, आप ही सही हों और मैं गलत। इसे सिर्फ भविष्य बतलायेगा। गुडवाई!

लेनिन : गुडबाई। और देखिये दस साल बाद आकर हमसे जरूर मिलियेगा।

(अंग्रेज लेखक चला जाता है)

(लेनिन विचारों में खोये हुए हैं। अचानक उन्हें हँसी आ जाती है)

कितना कूपमण्डूक है! कैसी अधकचरी बातें करता है!

(सेक्रेटरी अन्दर आती है)

क्या इन्जीनियर ज़बेलिन आ गये?

सेक्रेटरी : जी हाँ, व्लादीमिर इल्यीच, वह आ गये।

लेनिन : उन्हें अन्दर ले आओ।

(सेक्रेटरी बाहर जाती है। ज़बेलिन अन्दर प्रवेश करते हैं)

ज़बेलिन : नमस्ते, व्लादीमिर इल्यीच।

लेनिन : नमस्ते, अन्तोन इवानोविच। आपकी तबियत कैसी है?

ज़बेलिन : मैं बहुत अच्छा हूँ, धन्यवाद। मेरी तबियत... ठीक हो रही है।

लेनिन : बहुत अच्छा! अच्छा, यह तो बतलाइये, आपको कभी किसी अधकचरे, कूपमण्डूक से मिलने का मौका मिला है?

ज़बेलिन : किस तरह के?

लेनिन : साधारण... असली, ठेठ अधकचरे कूपमण्डूक से। मक्सिम गोर्की उनका बहुत अच्छा चरित्र-चित्रण करते हैं...

ज़बेलिन : शायद... हाँ... मेरी मुलाकात ऐसे लोगों से हुई है।

लेनिन : अच्छा... हम सब सोचते थे कि ऐसा अधकचरा प्राणी जीवाश्म बन गया होगा या वह कहीं कोलोम्ना में, मलमल के पर्दों के पीछे रहता होगा और अपनी वास्कट में चेनदार चाँदी की घड़ी लटकाये घूमता होगा। हम सबका ख्याल गलत था। यह अधकचरा प्राणी सारी दुनिया में पाया जाता है। अभी-अभी एक विश्वविख्यात लेखक के रूप में मैंने उसका एक बहुत बढ़िया नमूना देखा था। मजे की बात यह है कि वह बिल्कुल हमारे रूसी अधकचरों के ही समान है। हमारे यहाँ तो समाज के हर अंग में ऐसे लोगों की भरपार है।

ज़बेलिन : हाँ, वे हमारे समाज के हर अंग में मौजूद हैं, लेकिन मैं यह कभी नहीं चाहूँगा कि मेरी भी गिनती उन्हीं में होने लगे! फिर मैं तो चेनदार घड़ी भी नहीं लगाता।

लेनिन : आप नहीं लगाते?

ज़बेलिन : मैं इस ख्याल तक को बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरी सूरत-शक्ल उनकी जैसी हो।

लेनिन : नहीं, नहीं। हम सब में कुछ न कुछ दोष होते हैं, लेकिन आप में अधकचरोंवाला दोष नहीं है। कृपया बैठ जाइये। अच्छा, अब आपकी रिपोर्ट ले लें।

(इधर-उधर देखते हुए) मैंने उसे रख कहाँ दिया? मैंने उसे पढ़ा था। बहुत मुश्किल चीज है। उसे तैयार करने में क्या आपको बहुत समय लगा था?

ज़बेलिन : बहुत समय तो आपने मुझे दिया नहीं था। लेकिन बात यह है कि एक बार किसी काम को करने की जिम्मेदारी ले लेने के बाद फिर मैं धीरे-धीरे काम नहीं कर पाता।

लेनिन : यह तो साफ दिखाई देता है।

ज़बेलिन : अच्छा? लेकिन किस तरह? क्या मेरी रिपोर्ट बुरी है?

लेनिन : नहीं, यह क्यों जरूरी है कि वह बुरी हो?

ज़बेलिन : व्लादीमिर इल्यीच, मुझे यह सब एक तरह की परीक्षा लग रहा है... बुढ़ापे में नये सिरे से...

लेनिन : अगर यह परीक्षा है तो हम कह सकते हैं कि आपने उसे सर्वोच्च नम्बरों से पास किया है। आपकी रिपोर्ट बहुत अच्छी है—वास्तव में शानदार! और उसे आपने तैयार भी किया है पूरे विश्वास के साथ।

ज़बेलिन : आपकी बात सुनकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ, और कृतज्ञ भी... आप जानते हैं कि यह मेरा पेशा है, लेकिन ऐसा लगता है जैसे कि इसे नये सिरे से मैंने फिर सीखा हो! किन्तु इस बात को आम तौर पर बिजली का हर इंजीनियर—अगर वह रूस को प्यार करता है—स्वीकार करेगा कि पीटर महान के बाद इतनी साहसपूर्ण और शानदार योजना की कल्पना किसी भी व्यक्ति ने नहीं की थी। इसके बावजूद, एक सवाल है, अत्यन्त महत्वपूर्ण सवाल, जो मैं आपसे पूछना चाहूँगा।

लेनिन : पूछिये, पूछिये... एक मानी में आप भी अभी एक नौसिखुए ही हैं।

ज़बेलिन : हम लोगों को, यानी मुझे और मेरे उन साथियों को जो ईमानदारी से काम करने के लिए हमारे साथ आ रहे हैं, विद्युतीकरण की सफलता के सम्बन्ध में, उसके विजयी भविष्य के सम्बन्ध में जरा भी सन्देह नहीं है... लेकिन एक "चीज" है।

लेनिन : वह क्या है? उसे जानने को मैं उत्सुक हूँ।

ज़बेलिन : संक्षेप में कहें तो वह यह है—इस काम में क्या हम जरूरत से ज्यादा जल्दी नहीं कर रहे हैं?

लेनिन : जरूरत से ज्यादा जल्दी? विद्युतीकरण के कार्य को हाथ में लेने में बहुत जल्दी? आप क्या कह रहे हैं मैं यह समझ रहा हूँ।

ज़बेलिन : सच बात यह है कि यह प्रश्न मुझे बहुत परेशान कर रहा है।

लेनिन : मुझे भी। लेकिन मुझे यह बेहद परेशानी होती है कि हम लोग कितने धीरे-धीरे, रेंगते हुए से आगे बढ़ रहे हैं। यह बहुत ही बड़ी समस्या है, हमारे विकास

की मूल समस्या है। सारी सभ्य दुनिया से कम से कम तीन सौ साल हम लोग पीछे हैं। और हम सब, बूढ़े और नौजवान—सब, इस भयानक पिछड़ेपन की गिरफ्त में हैं। ज्यों ही किसी भी प्रकार का कोई भी साहसपूर्ण विचार सामने आता है त्यों ही हर आदमी परेशान हो उठता है : यह चीज क़बलज़वक़्त नहीं? समय से बहुत पहले तो नहीं? नहीं? साथी, यह क़बलज़वक़्त नहीं है। अगर हमने सत्ता पर 1905 में अधिकार कर लिया होता तो विद्युतीकरण का कार्य हमने उसी वक्त शुरू कर दिया होता। सोचिये तो, अब तक सोवियत रूस कितना आगे बढ़ गया होता!

ज़बेलिन : जी हाँ, मैं समझ रहा हूँ। अब मुझे भी राजनीति कुछ-कुछ समझ में आने लगी है।

लेनिन : और राजनीति है क्या? आर्थिक स्थिति की घनीभूत अभिव्यक्ति। और हमारी आर्थिक स्थिति ऐसी है कि जीवन के समस्त क्षेत्रों में मौलिक परिवर्तन लाने के लिए कई पीढ़ियों को अनगिनत कुर्बानियाँ देनी होंगी। अच्छा, अन्तोन इवानोविच, यह तो बताइये कि अपने सहायक के रूप में एक नाविक—रिबाकोव को रखने में तो आपको कोई एतराज नहीं है? एक प्रसिद्ध इंजीनियर, प्रोफेसर—और उनके बगल में एक नौसैनिक कमिसार!

ज़बेलिन : नहीं, व्लादीमिर इल्यीच! मुझे जरा भी आपत्ति नहीं है। वह एक कार्यदक्ष युवक है... मुझे वह शुरू से ही पसन्द आया है।

लेनिन : यह बहुत अच्छी बात है।

ज़बेलिन : वैसे किसी मार्क्सवादी सिद्धान्तकार को मेरे साथ रखना ज्यादा ठीक होगा।

लेनिन : क्यों? सिद्धान्तकार की आपको किसलिए जरूरत है?

ज़बेलिन : मालूम होता है, आप मजाक कर रहे हैं।

लेनिन : मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ। बतलाइये, सिद्धान्तकार आपको किसलिए चाहिए?

ज़बेलिन : आखिर मैं एक पूँजीवादी विशेषज्ञ हूँ न। क्या मुझे शिक्षित करना आवश्यक नहीं है?

लेनिन : लेकिन हम आपके पास इस आशा से तो नहीं आये थे कि आप मार्क्सवाद का पाठ्य-क्रम पढ़ेंगे। हम तो चाहते हैं कि आप काम करें—खूब मेहनत से और जमकर काम करें। आपके और हमारे दोनों के लिए वही सबसे अच्छा मार्क्सवाद होगा। साशा रिबाकोव सिद्धान्तकार तो खास नहीं है, लेकिन वह एक होशियार संगठनकर्ता है। मैंने उसे आपके पास इसलिए भेजा है कि आपके अधीन वह सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को लागू करे, क्योंकि सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के बिना विद्युतीकरण के लक्ष्य को हम कभी प्राप्त नहीं कर सकेंगे और आपका सारा काम व्यर्थ जायेगा... आप अपनी रिपोर्ट ले लीजिये, मैंने उसमें जो टिप्पणियाँ लिखी हैं, उन पर गौर कर लीजिये और श्रम और सुरक्षा कौंसिल की बैठक के लिए तैयारी कर लीजिये। नमस्कार, साथी ज़बेलिन।

ज़बेलिन : नमस्कार, व्लादीमिर इल्यीच।

(सेक्रेटरी, दज़ेर्जिन्स्की, रिबाकोव तथा घड़ीसाज अन्दर आते है)

लेनिन : एक मिनट रुकिये... बस एक मिनट! एक चीज और है... अत्यन्त महत्वपूर्ण और अत्यन्त सुखद...

सेक्रेटरी : साथी लेनिन, आपने कहा था न कि क्रेमलिन की घड़ियाँ जिस समय बजती हैं ठीक उसी समय आप घड़ीसाज से मिलना चाहेंगे...

घड़ीसाज : श... मेहरबानी करके...

दज़ेर्जिन्स्की : व्लादीमिर इल्यीच, इस अचानक धावे के लिए हमें माफ कीजियेगा; लेकिन आप तो जानते हैं, हमारे लिए यह एक काफी बड़ी घटना है... घण्टाघर की घड़ियाँ...

घड़ीसाज (दज़ेर्जिन्स्की से) : कृपा कर खामोश रहिये... केवल एक सेकेण्ड बाकी है।

लेनिन : साशा, घड़िया चलने लगीं?

रिबाकोव : हाँ... लगता तो यही है... जरा रुकिये...

(घण्टियों के बजने की आवाज आती है)

ज़बेलिन : यह क्या है? क्रेमलिन की घड़ी? हाँ, वही तो हैं!

दज़ेर्जिन्स्की : और आप गुस्सा होकर हम लोगों के खिलाफ कहा करते थे—"ये बोल्शेविक! इनके राज्य में तो क्रेमलिन की घड़ी ने भी चलना बन्द कर दिया है!" ठीक है न?

ज़बेलिन : मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ।

दज़ेर्जिन्स्की : आप बहुत ही सख्त शब्दों का इस्तेमाल किया करते थे?

ज़बेलिन : कभी-कभी।

लेनिन : आप लोग सुन रहे हैं? घण्टियाँ बजने लगीं... यह बहुत बड़ी चीज है। जब वह सब पूरा हो जायेगा—वह सब जिसके बारे में आज हम केवल स्वप्न देख रहे हैं और आपस में बहसें कर रहे हैं—तब क्रेमलिन की घड़ी एक नये दिन की घण्टी बजायेगी, और उस दिन विद्युतीकरण की नयी-नयी योजनाओं, नये-नये स्वप्नों तथा और भी नयी-नयी तथा साहसपूर्ण खोजों का सूत्रपात होगा।

(पर्दा गिरता है)